नीराजन

2011

अरुण यह मधुमय देश हमारा ।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा ।।
– जयशंकर प्रसाद

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय
कानपुर

हमारे आराध्य

प्रनवउँ पवन कुमार, खल-बन-पावक ज्ञान-घन।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम सर-चाप धर ।।

नीराजन

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय
कानपुर

वार्षिक पत्रिका : 2010-11

संरक्षक

श्री वीरेन्द्रजीत सिंह
सचिव

श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी
प्रधानाचार्य

प्रधान सम्पादक
डॉ० मनोज कुमार शुक्ल

सम्पादक (हिन्दी)
दुर्गेश वाजपेयी

सम्पादक (अंग्रेजी)
रेखा निगम

हमारा साध्य

प्रचंड तेजोमय शारीरिक बल,

प्रबल आत्मविश्वासयुक्त बौद्धिक

क्षमता एवं निस्सीम भाव संपन्ना

मन:शक्ति का अर्जन कर,

अपने जीवन को निस्पृह भाव

से भारत माँ के चरणों में

अर्पित करना ही हमारा परम

साध्य है।

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अपनी बात	डॉ0 मनोज कुमार शुक्ल	9
2.	विद्यालय प्रगति आख्या	श्रीमान् प्रधानाचार्य जी	10
3.	ऋषि, कृषि प्रधान राष्ट्र भारत	डॉ0 कमल किशोर गुप्त	18
4.	अध्यात्म	सुभाष शर्मा	22
5.	संवेदना	डा0 मनोज कुमार शुक्ल	24
6.	सच्चाई	दुर्गेश वाजपेयी	25
7.	आत्मा से साक्षात्कार - इसकी चाबी है संगीत	अंकुर द्विवेदी	26
8.	विज्ञान और प्रौद्योगिकीकरण	अभिनव गंगवार	27
9.	नेता और डाकू	अभिनव त्रिपाठी	28
10.	परीक्षा गीत	प्रफुल्ल ओमर	28
11.	अपने वतन के नाम पर (प्रेरक गीत)	विशाल यादव	29
12.	नया सवेरा	शिवम त्रिपाठी	29
13.	विश्व कप	दीपांशु तिवारी	30
14.	सत्य वचन	अर्पित मिश्र	30
15.	राष्ट्र भाषा हिन्दी का सम्मान	दिनेश कुमार	30
16.	माँ	निर्मला उराव	31
17.	चिड़िया व मेढक	श्रुति गुप्ता	31
18.	युवा जागरण	शिवम दुबे	32
19.	चाँदनी	दिनेश कुमार	32
20.	पापा के संग मुन्ना जाता	दीपांशु तिवारी	33
21.	लाठी का बोलबाला	अमन गुप्त	33
22.	स्वाधीन भारत	सुकान्त द्विवेदी	34
23.	माँ कौन है ?	आशीष मिश्र	34
24.	चमत्कार	अभिषेक शुक्ल	35
25.	प्रसिद्ध क्रिकेटरों के जन्मदिन	लोकेन्द्र प्रताप सिंह	35
26.	पिता हैं तो.....	अनुज शुक्ल	36
27.	आने वाली पीढ़ी को	तुषार त्रिवेदी	37

क्रमांक	विषय	लेखक	पृष्ठ
28.	पेट की आग	अभिषेक शुक्ल	38
29.	पर्यावरण	प्रणव सिंह चौहान	38
30.	मन करता है	वैभव गुप्त	39
31.	माँ की ममता	ऋषभ मिश्र	39
32.	तू माँ, तू जननी	प्रियश गुप्त	40
33.	यदि भगवा आतंकी होता तो	प्रशान्त मिश्र	41
34.	आज का विद्यार्थी	अर्चित पाण्डेय	42
35.	भगवान् सूर्य का परिवार	दिव्या	43
36.	पं0 दीनदयाल का त्याग	सोनम	44
37.	उत्तराधिकारी घोषित करना	सूरज प्रताप सिंह सिकरवार	45
38.	भाग्य (Luck)	रोहन वर्मा	46
39.	कवि सम्मेलन	दीपांशु कटियार	46
40.	''दोस्ती''	तन्मय द्विवेदी	47
41.	संकल्प शक्ति	कृष्ण मोहन द्विवेदी	47
42.	चाह लक्ष्य की	नितिश कटियार	48
43.	चतुर्वर्णस्थ माँ	आशुतोष अग्निहोत्री	49
44.	शिक्षा	आकाश सिंह	49
45.	एक आजाद पंक्षी की तलाश	प्रशान्त मिश्र	50
46.	हिन्दी हैं हम	अश्विनी अग्निहोत्री	50
47.	ठण्डा मतलब.....	आकाश सिंह	51
48.	ऊपरी चमक का भ्रम	अतुल तिवारी	52
49.	मनुष्य के सपने	आशुतोष त्रिपाठी	53
50.	चाँदबीबी	शिखर पाण्डेय	53
51.	माँ का कर्ज	सिद्धार्थ पोरवाल	54
52.	क्या आप जानते हैं ?	अंकित मिश्र	54
53.	प्रेरक प्रसंग स्वामी विवेकानन्द	अनुज ओमर	55
54.	विद्यार्थी जीवन	नैना	56
55.	प0 पू0 डा0 साहब का संक्षिप्त परिचय	अपूर्व त्रिपाठी	57

क्रमांक	विषय	लेखक	पृष्ठ
56.	प्रार्थना	मिली श्रीवास्तव	58
57.	उतना बोलो, जितना लगे ठीक	अमित यादव	58
58.	गंगा को प्रदूषण से बचाने में समाज की भूमिका	आयुष त्रिपाठी	59
59.	पहेलियाँ	सौरभ कुमार केसरवानी	60
60.	समय की महत्ता	आदित्य धनराज	61
61.	बापू को श्रद्धांजलि	रवि प्रताप सिंह	63
62.	1947 के भीषण पर्व में गुरूजी का अद्वितीय नेतृत्व	पवन प्रकाश पाण्डेय	64
63.	नव संवत्सर	अभय शुक्ल	64
64.	दयालु विद्यार्थी	सुकान्त द्विवेदी	65
65.	साहस	अभय शुक्ल	65
66.	सत्संगति का महत्त्व	अभिनव तिवारी	66
67.	विद्यालय का विदाई समारोह	वैभववरीश सिंह राठौर	67
68.	हमारा प्यारा भारत वर्ष	सत्येन्द्र सिंह यादव	69
69.	परीक्षा का भूत	रचित मिश्र	70
70.	भाता है मोबाइल	कुन्दन कुमार	70
71.	'वृक्ष लगायें वृक्ष बचायें'	प्रियांशु कुशवाह	71
72.	हँसी घर	अमित यादव	71
73.	क्रिकेट का जुनून	उत्कृष्ट द्विवेदी	72
74.	सूर्य (Sun)	ऋषभ सिंह राजावत	72
75.	उपहार और पुस्तक	शौर्य प्रताप सिंह	72
76.	देश भक्ति गीत	अर्चित पाण्डेय	73
77.	भारतीय युवक के सपने	अभिनव पटेल	73
78.	मिट्टी की मूरत है इंसा.....	मु0 निहाल अहमद	74
79.	एक नया लड़का आया	शिखर सेंगर	74
80.	रिश्ते बने रहें	ऋषभ कटियार	75
81.	श्री निवास रामानुजम्	कार्तिकेय प्रताप सिंह भदौरिया	75
82.	सरित गाथा	अंकित शुक्ल	76

क्रमांक	विषय	लेखक	पृष्ठ
83.	दान	रोहन मुकेश	77
84.	सुर सम्राज्ञी 'लता मंगेशकर'	हर्षित कटियार	78
85.	बोया पेड़ बबूल का.....	शिखर अग्रवाल	79
86.	पहली साइकिल	शिवम त्रिपाठी	79
87.	महात्मा बुद्ध की सीख	ऋतेश भारती	80
88.	मूरख हृदय न चेत	शुभम् गुप्त	80
89.	एक छत्ते में कितनी मधुमक्खियाँ	मोहित यादव	81
90.	संस्कार-सिंचन	दीपक कुमार	81
91.	ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना (मानव) है या नहीं	शान्तनु राज	82
92.	नदी की धारा मुड़ गयी	रामनरेश सारस्वत	83
93.	क्रिकेट जगत	शौर्य प्रताप	83
94.	काँच की बरनी और दो कप चाय	आकाश जायसवाल	84
95.	जीना	दिव्या	85
96.	क्रांतिकारी विद्यार्थी	एकाग्र पाण्डेय	86
97.	सज्जनता का फल	हर्षित मिश्र	87
98.	जर्जर महल	प्रशान्त मिश्र	88
99.	आइन्सटीन का ड्राइवर	ज्ञानेन्द्र अवस्थी	88
100.	पुराण एवं उनके श्लोकों की संख्या	अनुग्रह दुबे	89
101.	आचार्य की महत्ता	अंकित मिश्र	89
102.	वीर बालक चाणक्य	आशा	90
103.	'नेता' का 'रासायनिक' विश्लेषण	उत्कृष्ट द्विवेदी	91
104.	राम राज तब आयेगा	रवि प्रताप	92
105.	आश्चर्यजनक सत्य	वैभव गुप्त	92
106.	थोड़ा हँस लो	शिखर सेंगर	93
107.	हँसना मत	रामसुन्दर राजपूत	93
108.	भारत के प्रमुख स्टेडियम	अर्चित पाण्डेय	94
109.	'तीन बातें'	देवांशु शेखर श्रीवास्तव	94
110.	अनपढ़ नेता और हॉकी मैच	अभिषेक सिंह चौहान	95

क्रमांक	विषय	लेखक	पृष्ठ
111.	हँस गुल्ले	पुष्कर अग्निहोत्री	96
112.	मच्छर की वीरता	शुभम् गुप्त	96
113.	हँसमुख (जरा हँस लो)	काजल	97
114.	बूझो तो जानें	रावेन्द्र कुमार	98
115.	सरल और कठिन	आकाश सिंह	98
116.	हँसी के फुहारे	आदित्य कुमार	99
117.	आदर्श प्रश्न-पत्र	गीतांशु सिंह	99
118.	'देखो हँस मत देना'	ऋषभ कटियार	100
119.	ब्रह्मचर्य ही जीवन है।	रामनरेश सारस्वत	101
120.	रोचक तथ्य	विशाल शुक्ल	102
121.	सचिन तेंदुलकर-एक परिचय	केशव तिवारी	103
122.	अमृत वचन	दिनेश कुमार	104
123.	रोचक जानकारियाँ	शौर्य प्रताप सिंह	105
124.	भारत का इतिहास	राघवेन्द्र शर्मा	106
125.	विज्ञान (रोचक जानकारी-मानव शरीर की)	सिद्धार्थ पोरवाल	108
126.	प्रसिद्ध पुस्तकें और उनके लेखक	विशाल यादव	109
127.	सामान्य ज्ञान	शीतांशु भदौरिया	109
128.	साँपों के बारे में रोचक तथ्य	श्रवण तिवारी	110
129.	भारत में सर्वाधिक बड़ा ऊँचा	अमन गुप्त	110
130.	प्रेरक प्रसंग स्वामी विवेकानन्द जी	आकाश जायसवाल	111
131.	मोटापा कारण और निवारण	वैभव ओमर	112
132.	नदियों पर बसे विश्व के प्रसिद्ध नगर	विशाल यादव	113
133.	विज्ञान से जुड़ी कुछ जानकारियाँ	प्रशान्त सिंह चौहान	113
134.	आधुनिक छात्र	गीतांशु सिंह	114
135.	भ्रष्टाचार	सत्येन्द्र सिंह यादव	115
136.	मुझे इनकी माँ को निपूती नहीं बनाना	नैना	116
137.	ज्ञान सूत्र	अंकित मिश्र	116

English Section

S. No.	Subject	Writer	Page
1.	Editorial	Rekha Nigam	117
2.	Careers After Class -12	Rekha Nigam	118
3.	Mother Teresa	Anuj Omer	126
4.	Sarojini Naidu	Kartikey Pratap Singh	126
5.	The Biological Effect of Music	Aditya Kumar	127
6.	Place	Shitanshu	127
7.	Dreams come true!	Shitanshu	128
8.	What is Life	Rishabh Yadav	128
9.	Effects of Colour	Siddhartha Porwal	129
10.	'O My Motherland'	Abhinav Tiwari - II	130
11.	A Sreet Quarrel	Shivam Tripathi	130
12.	Nature In all Its Glory	Ayush Dwivedi	131
13.	Journey of self discovery	Aditya Vikram Singh Chauhan	132
14.	Mr. Zero	Kundan Kumar	133
15.	Elements, Symbols & Their Atomic Number	Prem Kumar	134
16.	Time & Tide Wait for None	Ayush Dwivedi	135
17.	Black Money : The Hidden Treasure	Pranjul Tiwari	136
18.	About Tiger	Ashutosh Kumar	136
19.	How to study in a year	Shiv Om Pandey	137
20.	Amazing Facts	Akash Singh	138
21.	The difference is 129 Years	Sonam	138
22.	Winners Vs Loser	Anukriti Shukla	139
23.	Faith is Life, Daubt is Death	Pranjul Omer	139
24.	God can do everything	Utkrist Dwivedi	140
25.	What is Friendship	Divya	141
26.	How Much do you know your body	Aditya Kumar	141
27.	My Memories	Gitanshu Singh	142
28.	Right Way To Success	Prashant Mishra	143
29.	Eiffel Tower	Shubham Verma	143
30.	"Truth of Hostel"	Abhishek Kumar	144
31.	Neval look down upon other	Ashutosh Gupta	145
32.	Time is Great	Subham Ojha	145
33.	Life is Account	Tanmay Dwivedi	146
34.	Laloo Prashad Join Microsoft	Atul Tiwari	147
35.	Fact to Remember (Chemistry)	Shivam Tripathi	148
36.	Importance of books	Ashutosh Gupta	148
37.	आचार्य परिवार		149

अपनी बात

डॉ0 मनोज कुमार शुक्ल
प्रधान सम्पादक

विधि के जगत् प्रपञ्च में मनुष्य सर्वोत्कृष्ट रचना है। मानव बुद्धि प्रधान प्राणी है। बुद्धि के निर्णय से वह उचित-अनुचित का विचार कर अपने कल्याण के मार्ग को प्राप्त कर सकता है। मनुष्येतर जितनी भी योनियाँ हैं वे भोग प्रधान योनियाँ हैं अर्थात् कूकर, शूकर इत्यादि सभी योनियों में भोग प्राप्त हो जाते हैं। योग और भोग ये दोनों ही मनुष्य योनि में ही प्राप्त हो सकते हैं। मनुष्य ऐहिक सुख भी प्राप्त कर सकता है और योग करके पारलौकिक सुख भी प्राप्त कर सकता है।

सच्चिदानन्द परमात्मा का अंश होने के कारण मानव की सहजवृत्ति सुखानुभूति की ही होती है। अनन्त काल से यह जीव परमात्मा से मिलने की उत्कण्ठा लिए भटक रहा है और उसकी यह भटकन बिना परमात्मा से मिले बन्द नहीं होती है। जीवन शिव का ही एक अंश है इसलिए उसमें शिव के सम्पूर्ण गुण विद्यमान रहते हैं। उदारता, परोपकार, दया, क्षमा, सहिष्णुता आदि गुण प्रत्येक प्राणी में सहज रूप से होने के कारण वह संसार में इनका प्रयोग भी करता है बहुत अधिक काल तक उग्रता, उद्दण्डता नहीं रह सकती है वह अपनी सहज वृत्ति में वापस अवश्य ही आ जाता है।

साहित्य के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि आज तक जितने भी महापुरुष हुए हैं अपने इन्हीं मानवीय गुणों की बहुलता के कारण महान हुए हैं। साहित्य के बिना मनुष्य पशु तुल्य होता है। कहा भी गया है-

साहित्य संगीतकला विहीनः, साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः, तद्भागधेयं परमं पशूनाम्।।

साहित्य, संगीत और कला से रहित मनुष्य सींग पूँछ हीन साक्षात् पशु है। बिना घास खाए अपना जीवन चलाता है यह पशुओं का बड़ा सौभाग्य है क्योंकि मनुष्य शाकाहारी एवं सर्वभक्षी हुआ जा रहा है। चारा घोटाले जैसे उदाहरण इस बात को व्यंग्य रूप में सिद्ध करते हैं कि जब मनुष्य चारा खाने लगा है तब तो पशुओं का दुर्भाग्य ही होगा।

दुर्लभ मानव शरीर प्राप्त कर हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सांसारिक क्षेत्र में हमारी जो भी क्रियायें हो रही हैं वे मानवता के प्रतिकूल तो नहीं हैं। कहीं ऐसा तो नहीं है कि हम आकृति से मनुष्य हैं किन्तु प्रकृति से पशु तो नहीं होते जा रहे हैं।

❑

विद्यालय की प्रगति आख्या - 2009-10

प्रधानाचार्य

युगद्रष्टा पं० दीन दयाल के 94 वें जन्मोत्सव पर आज हम उनका पुनः स्मरण कर रहे हैं। साधना के पर्याय इस युग के ऋषि के द्वारा हमारे राष्ट्रीय जीवन को प्रदान की गई प्रेरणा अनंत काल तक आदर्श उद्धरण रहेगी और उनका बलिदान हर संवेदनशील देशभक्त के लिए एक चुनौती। वास्तव में हमारे विद्यालय की मूल भावना उस युग दधीचि के मर्मघाती बलिदान से ही प्रेरित है।

यह विद्यालय जिस भावना-भित्ति पर आधारित है उसके निर्माण की मूल सामग्री है, सात्विक भाव, सद्विचार और सदाचार। विद्यालय का उद्देश्य है शक्ति, शौर्य तथा साधना संकल्प के साथ भारत माता की आजीवन आराधना। इस उदात्त उद्देश्य-प्रेरित विद्यालय के निर्माण में जिन महनीय महापुरुषों ने अपना अनिर्वचनीय योगदान दिया है। उनमें विद्यालय की कल्पना मूर्ति गढ़ने वाले मौन तपस्वी पूज्य भाऊराव, इसकी आधार शिला रखने वाले युग पुरुष परम पूज्य श्री गुरू जी, भव्य भवन को मूर्त-रूप देने वाली ममतामयी माँ श्रद्धेया बूजी और इनकी कंचन-काया में प्राण संचारित करने वाले श्रद्धास्पद बैरिस्टर साहब सदा ही स्मरण किये जायेंगे। विद्यालय के पूर्व अध्यक्ष ब्रह्मलीन प्राचार्य श्री शिवशरण शर्मा का व्रती जीवन और संकल्पसिद्ध अध्यवसाय जहाँ हमारे लिए पाथेय है वहीं गोलोकवासी श्री इन्द्रजीत जैन जी की उदारता हमारा संबल।

संवत् 2026 की गुरु पूर्णिमा (18 जुलाई 1970) के पावन पर्व से प्रारम्भ अपना यह विद्यालय आज अपना चालीसवाँ वार्षिकोत्सव मना रहा है।

इस विद्यालय की कल्पना- शिल्प का आधार उदात्त भावना तथ प्रारूप जाग्रत विवेक है। पं० दीनदयाल जी भारत, भारती और भारतीयता के मूर्तिमान स्वरूप थे। इस विद्यालय के प्रयोग और परिणाम उनकी इसी भावना की प्रतिक्रिया है। विद्यालय द्वारा संस्कारित दृढ़ इच्छा-शक्ति सम्पन्न आदर्श पीढ़ी धीरे-धीरे समाज को अपने अस्तित्व का बोध कराने लगी है।

कलेवर :

षष्ठ कक्षा के मात्र 24 छात्रों से प्रारम्भ होकर निरन्तर प्रगति करता हुआ यह विद्यालय आज विज्ञान वर्ग में मान्यता प्राप्त पूर्ण विकसित इण्टरमीडिएट विद्यालय है।

जिस भूमि पर यह विद्यालय स्थित है, वह श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा प्रदत्त है। महामण्डल की इस उदारता का विद्यालय चिर ऋणी रहेगा। प्रारम्भिक अर्द्धचन्द्राकार दुमंजिले भव्य भवन का निर्माण श्रद्धेया बूजी ने अपने नितान्त व्यक्तिगत साधनों से करवाया, जो अपने में एक महिमामय उद्धरण है। आवश्यकतानुसार धीरे-धीरे इस भवन का विस्तार तथा अन्य भवनों का भी निर्माण होता गया यथा विज्ञान वीथी, भाऊराव-भवन, नरेन्द्र-निवास छात्रावास, प्राचार्य-आवास, माधव स्मृति क्रीड़ा-परिसर व प्रेक्षागार, आचार्य-कर्मचारी आवास तथा 7500 वर्ग फीट क्षेत्रफल का पण्डित दीनदयाल सभागार।

इस समय प्रथम से द्वादश तक 9 कक्षाओं के 19 अनुभागों में छात्रों की संख्या 943 है। इनमें से 270 छात्रावासीय हैं जो कि विद्यालय के ऊपरी खण्ड, पीछे भाऊराव-भवन तथा नरेन्द्र-निवास में रहते हैं। इनमें उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के साथ ही उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, बंगाल तथा मध्य प्रदेश के छात्र भी हैं, जिनके भोजन, स्वास्थ्य, स्वाध्याय, अनुशासन आदि की चिन्ता विद्यालय परिसर में ही निवास करने वाले सुयोग्य अधीक्षकों द्वारा की जाती है।

विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यों की संख्या प्रधानाचार्य सहित वर्तमान में 33 है। लगभग सभी प्रशिक्षित परास्नातक हैं।

विद्यालय के पास लगभग एक लाख रु० से अधिक मूल्य की 15000 से अधिक पुस्तकों से सम्पन्न पुस्तकालय भी है। वाचनालय में 6 दैनिक, 2 साप्ताहिक, 2 पाक्षिक तथा 13 मासिक पत्र-पत्रिकायें आती हैं। मुख्य समाचार, सुभाषित, सामान्य ज्ञान इत्यादि श्याम-पटों पर लिखे जाते हैं। इस विद्यालय को शासन द्वारा विशिष्ट विद्यालय के रूप में कुछ विशेषताओं के आधार पर ही मान्यता दी गई थी, जिनमें छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान प्रमुख है। इसी विशेषता के प्रति सचेत रह कर हम विद्यालय के छात्रों का समग्र विकास करने में सफल भी हैं।

शैक्षिक उपलब्धियाँ :

परिषदीय परीक्षाएँ :

विद्यालय की दशम कक्षा का प्रथम दल 1975 में तथा द्वादश कक्षा का 1981 में उत्तर-प्रदेश

माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित परीक्षा में सम्मिलित हुआ। परीक्षा परिणाम प्रारम्भ से ही अत्युत्तम रहा है।

जे०ई०ई०/ संयुक्त प्रवेश परीक्षा (आई०आई०टी, मर्चेण्ट नेवी, धनबाद खनन महाविद्यालय तथा सी०बी० एस० ई०)	25
यू० पी० टी० यू०/ (क्षेत्रीय अभियांत्रिकी विद्यालय)	65
अन्य (ए०एम०ई०ई०टी०वाई०, चैन्नई, एन०आई०एफ०टी०)	18
कुल (इंजीनियरिंग में) चयनित छात्र	108
सी० पी० एम० टी० /संयुक्त चिकित्सा प्रवेश परीक्षा (मेडिकल कालेजों हेतु चयनित)	07
अन्य	05

एन०डी०ए० और सी०डी०एस० के माध्यम से सेना में पहुँचे लगभग 36 सैन्य अधिकारी और संघ लोक सेवा आयोग से चयनित लगभग 22 प्रशासनिक अधिकारी विद्यालय से प्राप्त संस्कारों एवं जीवन के उदात्त आदर्शों का प्रकटीकरण करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। विशेष बात यह है कि इन सबसे विद्यालय से सतत् जीवन्त सम्बन्ध बने हुए हैं।

अद्यतन समेकित (Cumulative)

	दशम (36वर्षों का)		द्वादश (29 वर्षों का)	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
कुल छात्र	3472		2922	
कुल प्रविष्ट छात्र	3471	99.97	2921	99.96
उत्तीर्ण	3455	99.51	2904	99.38
ससम्मान	1359	39.14	889	30.42
प्रथम श्रेणी	1735	49.97	1675	57.32
द्वितीय श्रेणी	351	10.10	335	11.46
तृतीय श्रेणी	0010	00.28	05	00.17
प्रदेश में स्थान	106 (लगभग 3.05%)		88 (लगभग 3.01%)	

वर्ष 2010 का परीक्षा परिणाम निम्नांकित है :

	दशम	द्वादश
कुल छात्र	128	127
कुल प्रविष्ट छात्र	127	126
उत्तीर्ण	127	126
ससम्मान	59	89
प्रथम श्रेणी	63	37
द्वितीय श्रेणी	05	00
तृतीय श्रेणी	00	00

अन्य महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ :

प्रतियोगी परीक्षाओं का अद्यावधि परिणाम

कुल छात्रों की संख्या	वर्गशः	चयनित संस्था	सफल छात्रों की संख्या	प्रतिशत
2903	गणित 2554	आई० आई० टी०	309	12.09%
		अन्य इन्जीनियरिंग संस्थान	1673	65.05%
	जीव विज्ञान 338	मेडिकल परीक्षायें	87	26.36%

शिक्षा विभाग द्वारा संचालित 'राष्ट्रीय प्रतिभा खोज' परीक्षाओं में भी हमारे छात्र कीर्तिमान स्थापित करते आ रहे हैं।

विद्या भारती द्वारा संचालित 'संस्कृति ज्ञान परीक्षा' में भी अपने छात्र प्रतिवर्ष शत प्रतिशत सफलता पाये हैं। श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा आयोजित मानस तथा गीता परीक्षाओं में अपने विद्यालय को सदैव महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है।

शासन द्वारा स्वीकृत छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले कुल ६८ छात्र विद्यालय में अध्ययनरत हैं। हमारे अनेक छात्र अन्य स्रोतों से भी छात्रवृत्ति पा रहे हैं। इन छात्रवृत्तियों के दाता महानुभावों तथा न्यासों/संस्थाओं के नाम निम्नांकित हैं। हम इनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक शिक्षा समिति

श्रीमती सरस्वती देवी एवं श्री हरि मोहन गर्ग छात्रवृत्ति

श्रीमती सावित्री अग्रवाल

श्री कन्हैयालाल गोपालदास अग्रवाल

श्री इन्द्रजीत जैन स्मारक छात्रवृत्ति

श्री प्रेम नारायण जी सोमानी

आई०जे०एस० ट्रस्ट कानपुर

श्रीमती प्रेमा गुप्ता छात्रवृत्ति

श्रीमती भाग्यवती त्रिपाठी द्वारा श्री रवीन्द्र नाथ त्रिपाठी, पाण्डुनगर कानपुर

श्रीमती संजना मित्तल

पूर्व छात्र चि० प्रवीण भागवत

पूर्व छात्र चि० संदीप मेहरोत्रा

पूर्व छात्र चि० हृदयेश गुप्त

पूर्व छात्र चि० अजय गुप्त

कुल मिलाकर 42 छात्र इन सभी न्यासों और संस्थाओं के द्वारा लाभान्वित हो रहे हैं। विद्यालय के पूर्व छात्र स्व० गुरुवर शरण अवस्थी की स्मृति में उत्कृष्ट अभिनेता छात्र को पुरस्कार दिया जाता है। यह स्थायी पुरस्कार उनके पिता डॉ० सन्त शरण अवस्थी ने प्रारम्भ किया था।

पाठ्येतर गतिविधियाँ :

खेल-कूद व शारीरिक शिक्षा :

विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की भी व्यवस्थित योजना है। सामूहिकता की भावना विकसित करने हेतु योगासन व शारीरिक क्षमता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अपने सीमित साधनों में यथासंभव खेलों में भी कौशल प्राप्त करने का हमारा प्रयास रहता है। विद्यालय में सैनिक शिक्षा को भी महत्त्व दिया जाता है। इस दृष्टि में राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन०सी०सी०) की वरिष्ठ तथा कनिष्ठ इकाइयाँ

विद्यालय में सफलतापूर्वक चलायी जा रही हैं। इनके प्रभारी विद्यालय के ही आयार्च हैं।

घर के सुरक्षित व सुविधाभोगी वातावरण से निकलकर छात्र स्वावलम्बन एवं कठोर जीवनचर्या का अभ्यास करते हुए देश का प्रत्यक्ष अध्ययन करें, इस दृष्टि से विद्यालय के छात्र प्रायः प्रतिवर्ष ही देशदर्शन हेतु जाते रहते हैं। इस योजना के अन्तर्गत अपने छात्र देशदर्शन हेतु देश के लगभग सभी कोनों में जा चुके हैं।

नैतिक शिक्षा :

हमारी समय-सारणी में नित्य प्रायः मानस, गीता आदि ग्रंथों के शिक्षाप्रद अंशों से युक्त प्रार्थना के बाद सदाचार बेला का प्रावधान है, जिसमें पूर्व निर्धारित आचार्य कथा, जीवनी आदि के माध्यम से छात्रों को आदर्श जीवन का पाठ पढ़ाते हैं। छात्रों में सर्वगुण-सम्पन्न व्यक्तित्व की स्थापना के प्रोत्साहन हेतु नियम मापदण्डों पर खरा उतरने वाले सर्वश्रेष्ठ छात्र को विद्यालय-रत्न पुरस्कार दिये जाने की भी योजना है।

समग्र व्यक्तित्व विकास :

निर्भीक-सुचारु अभिव्यक्ति, उत्तरदायित्व तथा नेतृत्व भावना छात्रों की मानसिकता का अनिवार्य अंग बने, इस दृष्टि से विद्यालय में तीन संस्थाएँ कार्य करती हैं-

अष्टम कक्षा तक बाल भारती, नवम-दशम में किशोर-भारती और एकादश-द्वादश में तरुण-भारती जिनके अन्तर्गत छात्र विद्यालय के विविध सामूहिक कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। छात्रावास में भी विभिन्न पदों पर नियुक्त छात्र निर्णय-प्रक्रिया तथा छात्रावास-संचालन में गंभीर भूमिका निभाते हैं।

विद्यालय के बाहर नगर, जनपद, प्रदेश स्तरों पर आयोजित वाद-विवाद, लेखन, ललित कला प्रतियोगिताओं में विद्यालय के छात्र लगातार भाग लेकर प्रतिष्ठा पाते रहते हैं।

कम्प्यूटर शिक्षण :

विद्यालय का कम्प्यूटर विभाग सुव्यवस्थित और आधुनिकतम सुविधाओं से सुसम्पन्न है। साफ्टवेयर के माध्यम से कम्प्यूटरों पर ही पूर्ण अध्यापन तथा स्वनिर्मित साफ्टवेयर द्वारा अपने

विद्यालय में छात्रों की प्रवेश-प्रक्रिया को भी कम्प्यूटरीकृत कर दिया गया है। प्रवेश-परीक्षा का परिणाम भी विगत वर्षों से इण्टरनेट पर जारी किया जाने लगा है।

छात्रों के तकनीकी विकास हेतु विद्यालय अवधि के पश्चात् इण्टरनेट की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। जिसके द्वारा छात्र अपने Subject, Career, Current Issues की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

विद्यालय की गृह परीक्षाओं एवं Student Database को Computerized करने हेतु Software बनाने के लिए विभाग कार्यरत है जिसके द्वारा हम अपने विद्यालय की Attendance एवं Result को Computerized कर सकेंगे।

युग-भारती :

बाल, किशोर और तरुण-भारती की शृंखला में अगली कड़ी है युग-भारती अर्थात् विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था। जिस उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति हेतु इस विद्यालय की स्थापना की गई थी, उसकी पूर्ति हेतु यह अनिवार्य था कि दशम या द्वादश उत्तीर्ण करने को ही छात्र का विद्यालय के साथ सम्बन्धों की समाप्ति न माना जाये, इसीलिए बहुत पहले ही पूर्व छात्रों की संस्था के रूप में संविधान, कार्यकारिणी इत्यादि के साथ तरुण-भारती की स्थापना हो गई थी, जो कि अब युग-भारती के नाम से पंजीकृत हो चुकी है। युग-भारती ने अपने शिविरों, ग्राम-सम्पर्क-योजनाओं आदि से समाज को अपनी लगन और निष्ठा का परिचय दिया गया है।

पूर्व छात्रों का विद्यालय से यह जुड़ाव विद्यालय की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है और समाज के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण भी।

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष दिनांक २६ सितम्बर (रविवार) को प्रातः 10:00 बजे से युग-भारती का वार्षिक अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो चुका है। यह वर्ष 1985 बैच के छात्रों का रजत जयन्ती वर्ष है, अतः इस बैच के अधिकाधिक विद्यार्थी अधिवेशन में विशेष रूप से उपस्थित रहे।

माँ सुशीला वात्सल्य मन्दिर :

विद्यालय द्वारा प्रारम्भ हुआ यह एक पावन प्रकल्प है, जिसका उद्देश्य समाज के सुविधा-वंचित

शिशुओं की जीवन की आवश्यक सुविधाओं के साथ पालन-पोषण तथा समुचित अध्ययन की व्यवस्था करना है।

इसके लिए विद्यालय के दाहिने पार्श्व में वी०एस०एस०डी० महाविद्यालय के अनुग्रह से प्राप्त भूमि पर एक भव्य भवन निर्मित हो चुका है। विद्यालय के सह-सचिव श्री यतीन्द्र जीत सिंह जी के द्वारा इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए पूरा व्यय भार वहन करने का अनुकरणीय संकल्प लिया गया है। भविष्य में इस वात्सल्य मन्दिर के द्वारा पालित-पोषित एवं मार्गदर्शित छात्रों का यशस्वी जीवन समाज के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण बन सकेगा, इसी विश्वास के साथ विद्यालय का यह पावन प्रकल्प 23 सितम्बर 2004 से कार्यरत है। वर्तमान समय में 30 शिशु शिक्षा एवं संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। इस सेवाभावी पावन प्रकल्प में आप सबके सक्रिय सहयोग की अपेक्षा है।

विद्यालय में ''प्रतिभा प्रोत्साहन-प्रकल्प'' का भी शुभारंभ हो चुका है, जिसमें सांय 4:30 बजे से 6:30 बजे तक कक्षा प्रथम से पंचम तक के छात्र-छात्राओं का निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है। वर्तमान में 95 छात्र-छात्राएँ अध्ययनरत हैं।

सत्र 2007 से विद्यालय ने बी०एन०एस०डी० शिक्षा निकेतन के साथ संयुक्त रूप से आई०आई०टी० (जे०ई०ई०) की तैयारी हेतु अतिरिक्त कक्षाओं का संचालन प्रारम्भ किया है।

भारतीय चिन्तन में ''शिक्षा का उद्देश्य'' विषय का कक्षा-शिक्षण मात्र नहीं, अपितु व्यक्ति-निर्माण के माध्यम से समाज-जागरण माना गया है। समाज का प्रज्ञा-प्रवाह अवरुद्ध होना भी स्वाभाविक है, अतः आदर्श स्थिति यह होगी कि विद्यालय समाज को ऐसे सुयोग्य नागरिक प्रदान करे जो समस्त सामाजिक विकृतियों से अछूते रह कर अपनी तेजस्विता से निरन्तर नवजीवन का संचार करते हुए इस जीवन-प्रवाह की निरन्तरता बनाए रखें।

अंत में ईश्वर से प्रार्थना है कि छात्रों में राष्ट्र-निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व के उत्कर्ष में आप सभी का सहयोग हमें निरन्तर मिलता रहे।

❑

ऋषि, कृषि प्रधान राष्ट्र भारत

डॉ0 कमल किशोर गुप्त
पूर्व उप-प्राचार्य
विक्रमाजीत सिंह स0 ध0 कालेज, कानपुर

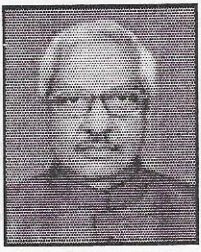

भारतवर्ष दुनिया का प्राचीनतम राष्ट्र है। स्वाभाविक है कि इस धरती पर सृष्टि के आदि से शनैः शनैः विकसित हुई यहाँ की मानव जीवन शैली प्राचीनतम सभ्यता एवं संस्कृति के रूप में स्थापित हुई। सहिष्णुता, सहृदयता एवं सहअस्तित्व इसके प्रमुख आधार रहे हैं। ये तीनों उदात्त गुण सार्वभौमिक, सार्वकालिक तथा सर्वव्यापी हैं। भारत ने इन्हीं उदात्त प्रमुख गुणों का पाठ दुनिया को पढ़ाया और विश्वगुरु कहलाया। यह कार्य करने वाले भारत के वे श्रेष्ठजन, जिन्हें अपनी नहीं दूसरों की चिन्ता रहती थी, खुद के लिये नहीं औरों के लिये जीते थे और तीनों लोकों में रहने वाले चराचर जगत के समन्वित विकास का समग्रता के साथ चिन्तन, मनन करते थे, ऋषि कहलाये। इन्हीं ऋषियों, मुनियों को पश्चिम के विद्वान् जी० पावेल, गैलिलियो, न्यूटन एवं ओटनबरी आदि ने Giants of Science कहा। इनके द्वारा विकसित यह जीवन शैली - जियो ओर जीने दो, आत्मवत् सर्वभुतेषु, वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्वे भवन्ति सुखिनः जैसे सुभाषितों से आप्लावित है। इन्होंने सबको सुपथ पर चलने का पथ दिखलाया। कालचक्र का पहिया घूमता रहा और कुछ अपवादों को छोड़कर सब स्वाभाविक सामञ्जस्य के साथ चलता रहा। लम्बे अन्तराल में अनेक उतार-चढ़ाव आये पर उनका प्रभाव नगण्य या अल्पावधि तक रहा। इसका मुख्य कारण यही समझ में आता है कि भारतीय समाज में बदलाव के साथ अपने को तदनुरूप ढालने की क्षमता व मानसिकता रही है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि परिवर्तन, परिवर्द्धन और परिष्करण भारतीय जीवन शैली के अभिन्न अंग रहे हैं। इसीलिए यहाँ की जीवन शैली में लचीलापन है, अन्य विचारों के प्रति ग्राह्यता का भाव है; कट्टरता कदापि नहीं है। पिछली कुछ शताब्दियों पर दृष्टि डालें तो अल्पांश में यत्र-तत्र यदि कट्टरता जैसा कुछ भाव दिखता है तो उसका कारण हमारे ऊपर लगभग १००० वर्षों से होते आ रहे बाह्य आक्रमणों के दौरान हुए क्रूरता, निर्दयता व दानवता के निकृष्टतम् दुराचारों की स्वाभाविक प्रतिक्रिया के कारण हो सकते हैं। उन विदेशी आक्रान्ताओं को हमने झेला है। इतने लम्बे समय तक उन क्रूरतम आक्रान्ताओं के शासन को तथा उनके अनेक झंझावातों, तूफानों को सहा है । फिर भी सहिष्णुता, सहृदयता और सहअस्तित्व को हमने कभी नहीं छोड़ा है । तभी तो हम कहते हैं कि यह भारतीय जीवन शैली अनादि है, अनन्त है, पुरातन है, अर्थात् सनातन है।

बड़े ही खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि आज हम स्वतन्त्र होने के बाद भी उपर्युक्त आधारभूत गुणों के अन्वेषकों, उन महान् वैज्ञानिकों, ऋषियों, मुनियों को अपेक्षित सम्मान नहीं दे सके जिसके लिए वे हकदार हैं; उल्टा हम उन्हें भूल गये हैं। उनकी तथा उस परम्परा की उपेक्षा कर रहे हैं। विगत कुछ वर्षों से तो उस उदात्त परम्परा के वाहक पूज्य ऋषियों, मुनियों, महात्माओं को अपमानित करने में कुछ लोग अपने को अत्यधिक आधुनिक, प्रगतिशील समझने लगे हैं। सुनियोजित षडयन्त्र के तहत ऐसे पूज्य महात्माओं का अनादर व उन्हें मिथ्या आरोपों के तहत कारागार तक डालने में संकोच नहीं कर रहे हैं। वस्तुतः यह उन महात्माओं का ही अपमान नहीं है वरन् हम सभी का है, हमारी श्रेष्ठ परम्परा का है। जन सामान्य के लिए यह सब असह्य है इससे भारत की चिति प्रदूषित हुई है, कुंठित हुई है। परिणामतः स्वछन्द, अहंकारी, असहिष्णु समाज का निर्माण होता जा रहा है जो देश समाज के लिए घातक है। अतः ऋषि परम्परा की उपेक्षा करने के बजाय उनकी आंकाक्षाओं, अपेक्षाओं के अनुरूप चलना ही श्रेयस्कर होगा।

१५ अगस्त १९४७ को हम स्वतन्त्र हुए। हमने अपना संविधान बनाया और कहा कि हम भारत के लोग... सभी विभेदों को दूर कर समरस समाज निर्माण हेतु सभी के लिए समान अवसरों की उपलब्धता प्रदान करते हुए यह संविधान अधिनियमित, अंगीकृत, आत्मार्पित करते हैं। मतलब यह है कि हम भारत के लोग हम भारतीयों को सभी विभेदों से दूर रखते हुए समान अवसरों के साथ समाज को समरस बनायेंगे। परन्तु ६३ वर्ष की यह यात्रा करने के बाद आज हम कहाँ खड़े हैं?क्या हम, विशेष कर सत्ता में बैठे हम भारत के लोग, इसे अंगीकृत कर पा रहे हैं? शायद नहीं। तभी श्री हरिओम पवार को अपना यह दर्द व्यक्त करने के लिए "मै भारत का संविधान हूँ लाल किले से बोल रहा हूँ"। गीत लिखना पड़ा।

स्वतन्त्रता के बाद हमने कुछ क्षेत्रों में विकास किया है। कृषि भी उनमें से एक है। आधुनिक कृषि उपकरणों, बीजों, सिचाई के साधनों की उपलब्धता के साथ किसान की मेहनत के कारण आज हम खाद्यान्न में आत्मनिर्भर हुए हैं। परन्तु अन्न पैदा करने वाला अपने छोटे-छोटे बच्चों सहित पूरे परिवार के साथ रात-दिन, धूप-छाँव, सर्दी-गर्मी में खेतों में काम करने वाला अन्नदाता हमारे लिए भरपेट अन्न पैदा करता है, खुद अधूरे पेट सोता है, ऐसा किसान दूसरों पर निर्भर है। देश की सत्ता की दृष्टि कैसी है? योजना आयोग की योजनायें क्या व कैसी हैं? उन योजनाओं को अमलीजामा पहनाने वाले अधिकारी-कर्मचारियों की कार्यविधि क्या है? इन सब पर निर्भर है वह बेचारा, बेसहारा किसान। हमारे देश के ही एक प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने नारा दिया था 'जय जवान जय किसान'। पर किसान तो जय क्या पराजय की ओर अग्रसर है। कहने का तात्पर्य है कि स्वतंत्रता के बाद किसान को

जो अपेक्षित था, वह उसे नहीं मिला। अपने देश में छोटी जोत के किसान अधिक हैं। उन्हें ट्रैक्टर, आधुनिक कृषि यंत्रों से खेती करने में सुविधा तो है पर आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद नहीं है। कृषि यंत्रों, डीजल, पानी, रासायनिक खादों कीटनाशकों एवं नई प्रजाति के बीजों की कीमतों में गुणात्मक वृद्धि हुई है जब कि किसान के अन्य उत्पादों गेहू, धान, दाले, तिलहन, कपास, गन्ना आदि की कीमतों में मामूली ही वृद्धि हुई है। इससे दोनों कीमतों का अन्तर बढ़ा है। यानी किसान को कृषि करने में अधिक लागत लगानी पड़ती है। दूसरी तरफ उसे उसकी उपज का दाम कम मिलता है। इसके बावजूद प्राकृतिक आपदाओं सूखा बाढ़, अतिवृष्टि, ओला वृष्टि, आंधी, तूफान आदि से किसान को गाहे-बगाहे दो चार होना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में वह अपनी रोटी ,कपड़ा व मकान का जुगाड़ नहीं कर पाता और कर्जदार होता जाता है। कर्ज की अदायगी न कर पाने के कारण उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंचती है। फलतः वह आत्महत्या करने को विवश होता है। सरकार की ६० हजार करोड़ की कर्जमाफी भी उसे आत्महत्या से रोक नहीं पाती। अतः इस देश के ऋषि-मुनियों का कहना है कि कृषि को देश की जलवायु, परिस्थिति आदि अन्यान्य प्रमुख संसाधनों एवं जनसंख्या का ध्यान रखते हुए ग्राम आधारित विकास की योजन-रचना बनानी होगी। ग्राम आधारित विकास का आधार गाय है। अतः गाय का संरक्षण संवर्धन किया जाना चाहिए। यह गावों में रोजगार सृजन, प्रदूषण मुक्त जलवायु, और रोग मुक्त समाज बनाने में सहायक होगा। इससे गावों से शहरों की ओर पलायन रुकेगा। गांव आबाद बने रहेंगे। शहरों में आबादी का अधिक भार नहीं बढ़ेगा। तात्पर्य यह है कि स्वावलंबी, स्वस्थ, स्वाभिमानी सशक्त समाज का निर्माण हो सकेगा। तभी पूज्य महात्मा गाँधी जी का सपना साकार होगा। उन्होंने ही कहा था कि स्वतंत्रता मिलते ही पूरे देश में गो-हत्या बन्दी का सबसे पहला कानून बनेगा। ऐसा न कर हमने गाँधी जी को भुला दिया और उनकी रामराज्य की स्थापना की कल्पना को तिलांजलि दे दी।

महात्मा गाँधी जी और लाल बहादुर शास्त्री जी माँ भारती के उन श्रेष्ठ सपूतों में से हैं जिनका इस धरती एवं समाज से आत्मीयता भरा प्रेम था। २ अक्टूबर को इस धरा पर उतरे इन दोनों महापरुषों में बहुत समानताएँ थीं। वे भारत का विकास भारत की जनता एवं परम्परा के अनुरूप करना चाहते थे। हम सभी उन दोनों महापुरुषों के चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करतें हैं परन्तु देश के सत्ताधारी "हम भारत के लोगों" ने इस देश को प्रगति पथ पर लाने के लिए विदेशों की नकल की तभी अपेक्षित परिणाम नहीं मिल सके। किसी ने ठीक ही कहा है कि तन अपना मन विदेशी काकुओं का, बुद्धि अपनी विचार दूसरों के, हाथ अपने कृति औरों की, आँखें अपनी दृष्टि परायों की, पैर अपने गति गैरों की-यह प्रगति नहीं दुर्गति है। यह विकृति है। अपनी मौलिक सोच से इस कदर हट जाना ही कृषि व किसान की उपेक्षा का एक प्रमुख कारण है। कृषि नीति के विश्लेषक श्री देवेन्द्र शर्मा ने दैनिक जागरण में दि. १८ फरवरी-२०११ को स्पष्ट लिखा," अभी तक सरकारी कृषि नीतियों से २००३ में किसान की औसत आय रु० २११५=०० थी जो शायद २०११ के बजट के 'उदार' प्रावधानों से बढ़कर

रु० २४००=०० हो जाय। फिर भी वह बी पी एल कार्ड धारक यानी गरीबी रेखा के नीचे है। आन्ध्र प्रदेश द्वारा परम्परागत टिकाऊ मॉडल से शरू की गई कृषि से किसान को आत्मनिर्भर तो बना ही रहे हैं, साथ ही पर्यावरण, ग्लोबल वार्मिंग, जैसी समस्याओं का समाधान बता रहे हैं। इससे किसान आत्म हत्या करने को मजबूर नहीं होंगे। २८ लाख हेक्टेयर में रासायनिक खादों व कीटनाशकों को तिलांजलि दे दी है, पर इसके बावजूद उपज बढ़ी है, मिट्टी का स्वास्थ्य सुधरा है और बीमारी के व्यय में ४% की कमी आई है। ऐसी योजनाओं में लाभदायक कृषि का भविष्य निहित है।"

अपने विचारों, संसाधनों, श्रोतों, लोगों व उनकी भावनाओं तथा परम्पराओं की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। ऋषि,कृषि प्रधान राष्ट्र-भारत में आज ऋषि एवं कृषि दोनों उपेक्षित हैं। ऋषि का मतलब है-हमारी आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं ज्ञान की धारा और कृषि का मतलब है कि जीवकोपार्जन हेतु आवश्यक उद्यम, सुख,सुविधा, खाद्यान्न व अन्य आवश्यक आवश्यकताओं की उपलब्धता के साथ जीवन धारा। सत्ता और योजना आयोग में बैठे लोग यदि अब भी नहीं चेते तो बढ़ता अभाव, असंतोष, अशान्ति कहीं देश को कदाचित् अराजकता की ओर न ढकेल दे।

अपनी पुस्तक "भारत २०२०" में पूर्व राष्ट्रपति डा० अब्दुल कलाम जी ने नवनिर्माण की रूपरेखा प्रस्तुत की है। जिसमें लिखा है कि भारत के किसानों में उद्यम करने का जोश भी है और लगन भी है। अतः यह अति आवश्यक है कि हमारे विशाल भू-भाग वाले भारतवर्ष के अन्नदाताओं के समक्ष ऐसी योजनाएं, सुविधाएं, जैविक प्रौद्यौगिकी द्वारा विकसित बीजों की उपलब्धता, सिंचाई हेतु नहरों का जाल, वर्षा जल के संचयन द्वारा अति वृष्टि आदि से बचाव आदि के सम्बंध में ठोस प्रयत्न करने की आवश्यकता है। कृषि की जब बात करें तो पशुधन की बात साथ में स्वयमेव आ जाती है। पशुधन अपनी देश की सकल कृषि उत्पाद का एक तिहाई के बराबर महत्व रखता है। अतः देशी गायों, बैलों आदि का संरक्षण, संवर्धन इसमें सहायक सिद्ध होगा। छोटी जोत के किसान बैलों से जुताई आदि तथा स्थानीय माल ढुलाई द्वारा लगभग ३० मिलियन टन पेट्रोलियम भी बचत कर सकते हैं। जिससे हम अपने देश की लगभग ४० हजार करोड़ रूपए की विदेशी मुद्रा भी बचा सकते हैं। तेल निर्यातक देशों पर निर्भरता भी कुछ कम हो सकती है। कुछ विशेष कृषि उत्पाद जैसे फल सब्जियों के रख रखाव की प्रभावी योजना, उनके परिवहन की सुरक्षित व्यवस्था किसान को अपेक्षित मूल्य दिला सकते हैं। इस तरह की योजना-रचना बना कर सफलतापूर्वक क्रियान्वित करके हम किसान की अपेक्षाओं,आकांक्षाओं को कुछ हद तक पूरा कर सकते हैं। दक्षिण के कवि तिरुक्कुरल ने ठीक ही कहा है:

अगर किसान के हाथ ढीले पड़ गये,
तो तपस्वियों का तप भी बेकार हो जायेगा।

❑

अध्यात्म

सुभाष शर्मा
आचार्य

कभी माँ हंस पर होती, कभी पद्मासना होती।
तिमिर अज्ञान के घर में, बनी माँ ज्ञान की ज्योती।
ॐ अनुनाद से चेतन हुई है, सृष्टि संरचना।
वीणा नाद न होता तो, दुनियाँ मूक ही होती।

फौलाद भी उसके दर पर, सख्त नहीं होता।
बिना उसकी कृपा बीज भी दरख्त नहीं होता।
बे-जुवा होकर तूँ उसके दर पे जा,
तकदीर बदलने का कोई वक्त नहीं होता।

ब्रह्म-आवर्त ही सहज ओङ्कार है।
इसकी सत्ता में साँसों का संसार है।
आत्म शक्ति की भक्ति का मालिक वही,
वो निराकार होकर भी साकार है।

चाहतें हो गयी विनिमय, तो ये व्यापार होता है।
रीति से प्रीति मिल जाये, तो जीवन पार होता है।
समय सबको सुलाता है, कभी सुख में, कभी दुख में,
जो होकर भी नहीं होता, वही संसार होता है।

धर्म की धरती आस्था का बगीचा है।
प्रेम सद्भावना जल से, इसे सन्तों ने सींचा है।
हिमाच्छादित हिमालय से भी गहरा है महासागर,
शिवोऽहम् के शिवाले में, न कोई ऊँचा है न नीचा है।

कोई अज्ञान में झूमे, कोई निज ज्ञान में झूमे,
जो खुद को मानता कर्त्ता, वही अभिमान में झूमे,
धरा से धर्म सीखा है, आस्मां ओढ़कर जिसने,
वही शमशान में झूमे, फकीरी शान में झूमे।

समन्दर से चला मोती, गले के हार तक पहुँचे।
जिसे माया रिझाती है, वो घर-व्यापार तक पहुँचे।
ये दुनियाँ एक मेला है, यहाँ मिलकर बिछुड़ना है,
जिसे 'उस' पर भरोसा है, वही उस पार तक पहुँचे।

उसी के नाम से सारे जहाँ का काम होता है।
बुरे कर्मों का दुनियाँ में, बुरा अन्जाम होता है।
गुलों के संग काँटे हैं, ये दुनियाँ का चमन ऐसा,
जो 'उसको' भूल जाता है, वही नाकाम होता है।

है बहुत गहरा समन्दर, थाह इसकी नाप लो।
जल में सोये जलचरों की, कुटिल मंशा भाँप लो।
अनगिनत सुरसा समन्दर में खड़ी मुँह खोलकर,
सत्सनातन धर्म की, हनुमन्त माला जाप लो।

पक्के घड़े यूँ रेत पर औंधे पड़े हैं।
और पनघट पर सभी, कच्चे घड़े हैं।
आपदायी आँधियों का है अंदेशा,
इसलिए चन्दन के वन सहमे खड़े हैं।

संवेदना

डा0 मनोज कुमार शुक्ल
आचार्य

हों सजल आँखें हमारी उर में करुणा भाव हो।
हो न कोई कर्म ऐसा कि बाद में पछिताव हो ।।

चल पड़ें उस ओर तेरे पाँव पर पीड़ा परखकर।
हाथ बढ़कर के उठा लें यदि गिरे नर भूमितलपर ।।
स्वार्थ साधन छोड़कर परहित परमहित चाव हो। हो न कोई...।।

बोलकर मृदुवचन मुख से व्यथित जन को शान्ति देवें।
हरणकर के कष्ट उसके मलिन मुख को कान्ति देवें।।
त्याग दो तुम वज्र वाणी जिससे कदापि न घाव हो। हो न कोई...।।

कष्ट होता है तुम्हारे तन में यदि है चोट लगती।
चोट मत मारो किसी को देह उसकी भी है दुखती।।
भगवान देता साथ सबका रंक हो या राव हो।। हो न कोई...।।

सौभाग्य से है जन्म पाया मातुभारत गोद में।
जब कर्म शुभ इससे बनें मन हो निरन्तर मोद में।।
भव सन्तरण का एक साधन त्याग सेवा नाव हो। हो न कोई...।।

छल छद्म और अनीतिकर धन तो बहुत तुम ने कमाया।
जग छोड़कर जाना पड़ेगा भावमन में है न आया ।।
कर ले 'मनु' कुछ कर्म ऐसे कि परलोक में भी ठाँव हो। हो न कोई...।।

विद्यालय के मेधावी छात्र

आदित्य दुबे – पंचम
97% अंक

देवांग पटेल – सप्तम 'क'
93% अंक

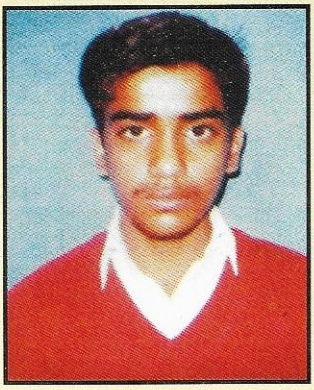

अंकित गुप्त – अष्टम 'क'
90.7% अंक

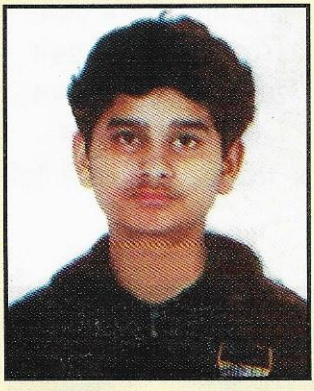

सागर गुप्त – नवम 'क'
88.89% अंक

प्रफुल्ल नयन – षष्ठ 'क'
92% अंक

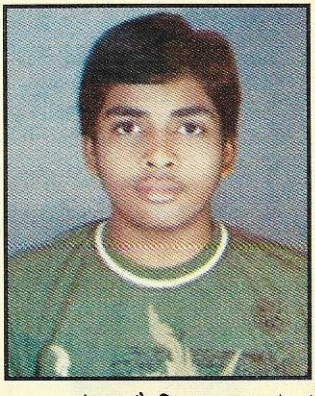

शाश्वत रंजन चौरसिया - दशम 'ख'
86.6% अंक

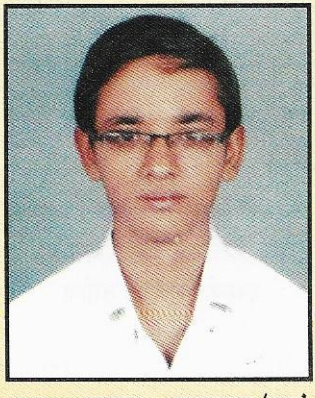

शुभम उत्तम – एकादश 'क'
82.6% अंक

यश अवस्थी – द्वादश 'क'
80.6% अंक

अभिनव पचौरी – दशम 'क'
86% अंक

उत्साही खिलाड़ी

दीपक सचान – दशम 'ख'
(एकलव्य दल)
100 मीटर दौड़ में प्रथम
200 मीटर दौड़ में प्रथम
400 मीटर दौड़ में द्वितीय
लम्बी कूद में द्वितीय स्थान
उछल कदम कूद में प्रथम स्थान
100 X 4 मीटर रिले रेस में प्रथम

विपुल कटियार – अष्टम 'ख'
चक्का प्रक्षेप में प्रथम
गोला प्रक्षेप में प्रथम
100 X 4 मीटर रिले रेस में प्रथम
भाला प्रक्षेप में प्रथम
उछल कदम कूद में द्वितीय
200 मीटर दौड़ में द्वितीय

पवन कुमार पाल – षष्ठ 'ग'
400 मीटर दौड़ में प्रथम
800 मीटर दौड़ में प्रथम
1500 मीटर दौड़ में प्रथम
2000 मीटर दौड़ में प्रथम
लम्बी कूद में द्वितीय
4 X 100 मीटर रिले रेस में द्वितीय

हिमांशु कुमार – षष्ठ 'ग'
100 मीटर दौड़ में प्रथम
200 मीटर दौड़ में प्रथम
400 मीटर दौड़ में प्रथम
1200 मीटर दौड़ में प्रथम
1500 मीटर दौड़ में प्रथम
100 X 4 मीटर रिले रेस में प्रथम

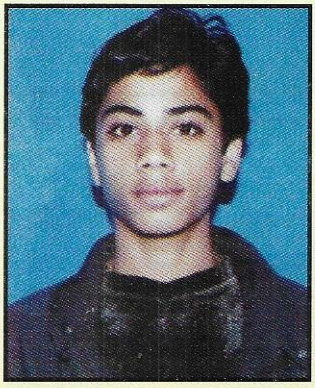

श्रेय मिश्र – एकादश 'ख'
200 मीटर दौड़ में प्रथम
400 मीटर दौड़ में प्रथम
800 मीटर दौड़ में द्वितीय
1500 मीटर दौड़ में प्रथम
100 X 4 मीटर रिले रेस में प्रथम
2000 मीटर दौड़ में प्रथम

तुषार त्रिवेदी – षष्ठ 'ख'
ऊँची कूद में प्रथम
लम्बी कूद में तृतीय

अन्यान्य प्रतिभाएँ

श्रुति गुप्ता – सप्तम 'क'
विज्ञान प्रदर्शनी में प्रथम स्थान

आशुतोष अग्निहोत्री – षष्ठ 'ग'
तबला वादन में कुशल

आयुष त्रिपाठी – अष्टम 'क'
श्रेष्ठ वक्ता

सुयश शुक्ल – दशम 'ग'
तबला वादन में प्रवीण

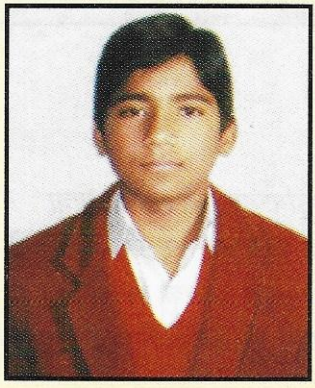

नीरज कुशवाहा – एकादश 'ख'
विद्यालय के सर्वश्रेष्ठ गायक

कृतिका मिश्रा – षष्ठ 'ग'
गायन एवं वादन

दिव्या – षष्ठ 'ग'
गायन तथा वादन

श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल,

शताब्दी वर्ष - 2011

श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल के शताब्दी वर्ष पर आयोजित शोभा-यात्रा में दीनदयाल विद्यालय के छात्र चि० अभिनन्दन के साथ केवट की नौका को आगे बढ़ाते हुए।

महामण्डल की शोभा-यात्रा के उद्घाटन पर प्रसन्न मुद्रा में पं० राम बालक मिश्र जी तथा श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी जी

महामण्डल की शोभा-यात्रा में महामण्डल द्वारा संचालित व संबंधित विद्यालयों ने अपनी झाँकी बनायी। श्री राम दरवार की सुन्दर झाँकी

छात्रों की प्रतिभाओं के विविध आयाम

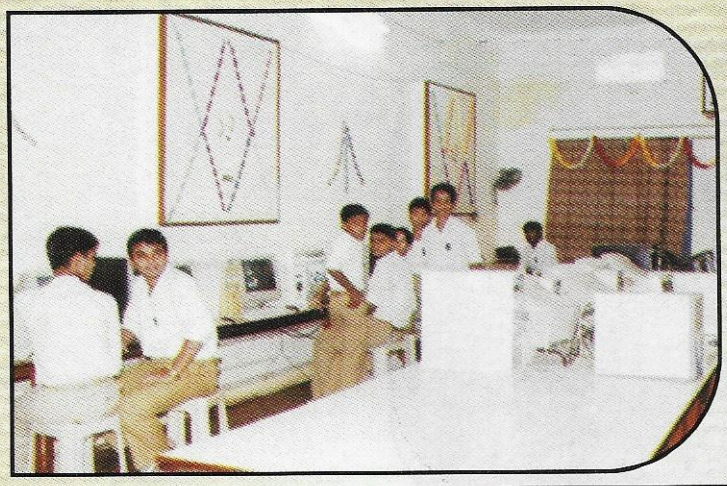

वार्षिकोत्सव में आयोजित कम्प्यूटर प्रदर्शनी में अपने प्रदर्श के साथ छात्र

विज्ञान प्रदर्शनी में अपने प्रदर्शों (मॉडल्स) के साथ प्रतीक्षातुर छात्र

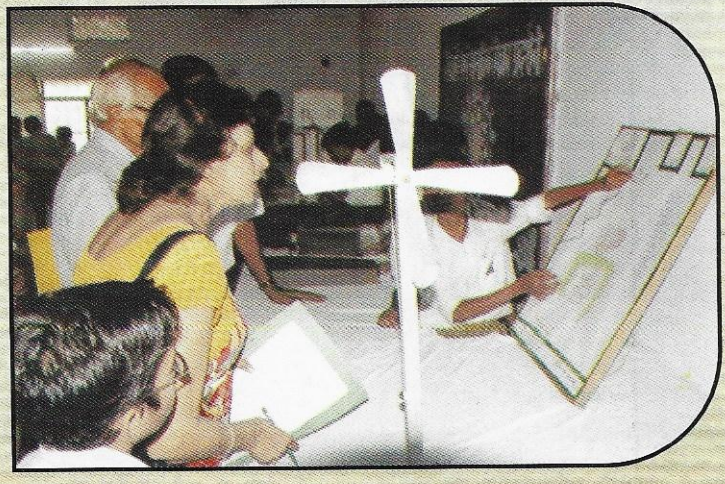

विज्ञान प्रदर्शनी में छात्रों की प्रस्तुतियों का निरीक्षण करती हुई डॉ० हेमलता सिंह (रीडर, इतिहास, वी० एस० एस० डी० कालेज, कानपुर)

छात्रों द्वारा थर्मकोल से बनाये गये ऐतिहासिक प्रदर्श

राष्ट्रपति भवन

ताजमहल

चार मीनार

श्री कृष्ण षष्ठी के अवसर पर
सरस कथा-वाचन करते हुए
पं० पुरुषोत्तम दास त्रिवेदी

प्रतिभा प्रोत्साहन प्रकल्प में
प्रतिभाशाली छात्रों को
पुरस्कृत करते हुए
आचार्य श्री जगपाल जी,
अंकिता जी तथा दीप्ति जी

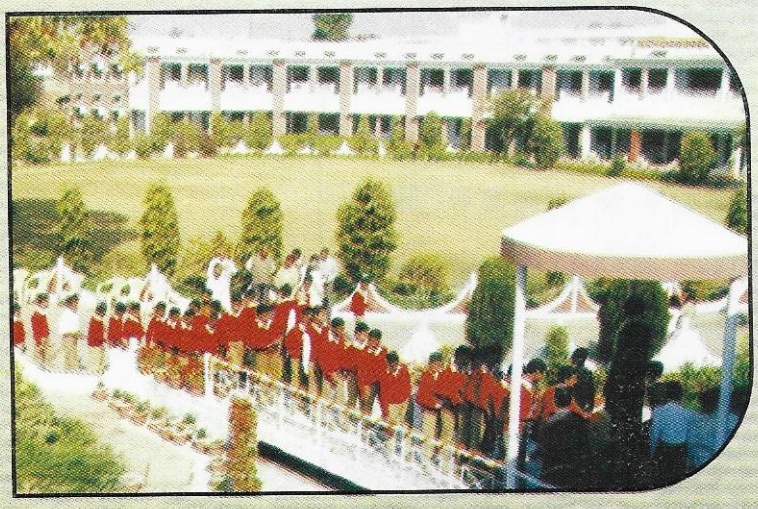

युग-दधीचि
पं० दीनदयाल उपाध्याय के
निर्वाण दिवस पर पंडित जी की
मूर्ति पर पुष्पार्पण करते छात्र

परिषदीय परीक्षा देने वाले छात्रों का विदाई कार्यक्रम

द्वादश 'ख' कक्षा के छात्र प्रधानाचार्य जी व शिक्षकों के साथ

द्वादश 'क' के छात्र

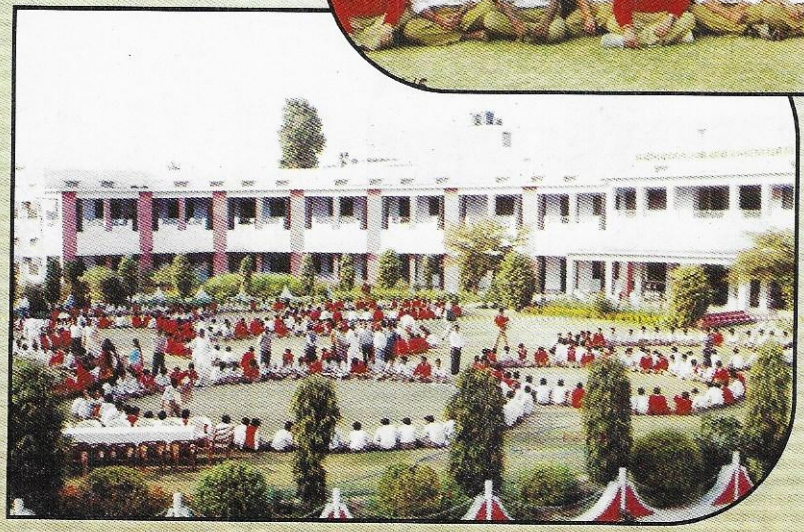

जलपान हेतु मंडलाकृति में बैठे दशम व द्वादश कक्षाओं के छात्र

सच्चाई

दुर्गेश वाजपेयी
आचार्य

मैं कैसे मान लूँ तुम्हारी बात
तुम कहते हो
सच्चाई की जीत होती है
जब कि मैं देख रहा हूँ
अँधरे उजालों को रौंद रहे हैं
वंचना शिखरस्थ है
झूठ की धौंस है
अन्याय की हुकूमत है
झूठ और फरेब दोनों
मिलकर मलाई खा रहे हैं
और सच्चाई
भूखी होकर दम तोड़ रही है।
फिर भी तुम कहते हो सच्चाई जीतेगी
.....शायद जीते।

पंखा

छत वाला पंखा
लगातार गतिशील रहता है
फिर भी
वह स्थिर होता है
क्योंकि
वह कुंडे से प्रतिबद्ध होता है।

आत्मा से साक्षात्कार - इसकी चाबी है संगीत

अंकुर द्विवेदी
आचार्य (संगीत)

आध्यात्मिक ज्ञान और संगीत जुड़वाँ बच्चे हैं। ये साथ-साथ पैदा होते हैं। इस देश के प्रमुख ग्रन्थ गीता को श्रीकृष्ण ने गाया, बोला नहीं। इसका नाम भी गीता पड़ा। अक्सर लोग सोचते हैं कि गीत और संगीत का अध्यात्म से क्या लेना-देना है। मैं कहूँगा कि जब आप स्वस्थ होते तो क्या करते हो, गुनगुनाते हो। गुनगुनाते नहीं हो तो गुस्सा करते हो। तनावमुक्त मन में ही गुनगुनाहट उठती है और अगर हमारा वह गीत, जिसे गाने के लिए हम पैदा हैं, उसे पहचानलेते हैं तो वह ज्ञान है, वह ध्यान है। शास्त्रीय संगीत का यह महत्त्व है कि यह हमें ब्रह्माण्ड के साथ-साथ प्रकृति के साथ भी जोड़ देता है। आपने सुना होगा कि सातों सुर जो हैं वे एक-एक पशु-पक्षी के साथ जुड़े हुए हैं। जैसे- स-मयूर से, मयूर की आवाज स है। बैल और गाय 'री' ऋषभ। ऐसे ही अज यानी भेड़-बकरी 'ग'। ये हुआ सा, रे, ग फिर 'म' क्रौञ्च पक्षी का स्वर है। 'प' जैसे आप जानते हैं पंचम स्वर में कोयल बोले, यह कोयल का स्वर है और 'ध' धैवत है अश्व यानी घोड़ा और 'नी' के स्वर में है हाथी। सबसे पतला सुर हाथी का है। तो सा, रे, ग, म, प, ध, नी, सा। ये सुर कैसे निकला है। हर प्राणी केवल एक स्वर में गा सकता है। लेकिन केवल मनुष्य का यह महत्त्व है कि वह सारे सुरों में गा सकता है। तो ईश्वर की एक देन है संगीत। जिसके जीवन में संगीत नहीं है कुछ अधूरा रह जाता है और संगीत का लक्ष्य ही यही है कि तुम्हें अपने आप में पहुँचा देना, तुम्हें अपनी आत्मा में प्रसन्न कर देना।

सुर कैसे निकलता है, उसकी मैकेनिक्स क्या है, उसका विज्ञान क्या है? इसे हमारे ग्रन्थों में बहुत सुन्दर तरीके से बताया गया है-

आत्मा बुद्धा समेव युक्ता, आत्मा बुद्धि के साथ मिलकर के, मनोयुक्ते विभुक्तया-मन के साथ जुड़ जाये, मन कायाग्निमादते- मन जो शरीर की अग्नि है, ऊर्जा है उसके साथ, सजग प्रेरति मारुतं-मारुति सूर्यति चरण मन्द्रमजनयते सुरम्- एकसुर कैसे पैदा होता है, इसका विज्ञान इस देश की गरिमा है। इतना सूक्ष्म ढंग से संगीत को कहीं भी नहीं देखा गया है।

शास्त्रीय संगीत एक प्रकार की ठण्डक पहुँचाता है और हमें इस विश्वात्मा से जोड़ देता है। हमारे देश की यह सम्पत्ति है गर्व है। अध्यात्म एक हाथ में और संगीत दूसरे हाथ में। ये दोनों लेकर हम चलें।

❑

विज्ञान और प्रौद्योगिकीकरण

अभिनव गंगवार
नवम (ख)

था जो स्वप्न आकाश में उड़ान भरने का
आया समय विज्ञान को अपने हाथ भरने का

आज उड़कर छूलो
आकाश की वह लालिमा
आज लहरा दो विजय की पताका
मिटा दो स्वप्न की कालिमा

जाकर अंतरिक्ष में,
गिन लिये हैं हमने ग्रह, नक्षत्र।
जाकर जान ली रहस्यमयी सृष्टि।

गई थी कल कल्पना आकाश में
आज सुनीता भी गई विश्वास में
विज्ञान के आविष्कारों से
होगा धरती और नभ अब पास में।

अब धरती पर भी,
गाड़ दी विज्ञान की विजय पताका।
लेकर विज्ञान का सहारा
कर रहे हैं स्वप्न साकार, भारत माता का।

इंजीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर बने,
लेकर विज्ञान का सहारा हम वीर बने
कम्प्यूटर, मोबाइल का कर लिया आविष्कार
मिट गया अज्ञानता का अंधकार।

आज नवीनीकरण और इलेक्ट्रानिक तुला
बन गये छोटे व्यवसाय का सहारा।
लेकर विज्ञान का सहारा,
लायें हम युग प्यारा।

देखो किया विकसित,
अपने विज्ञान के क्षेत्र को।
पा ही लिया उद्योग में,
विज्ञान रूपी नेत्र को।

आज हर व्यवसाय खुशहाल है,
आज बदली व्यक्ति की पहचान है।
विज्ञान ही हमारी शान है,
विज्ञान की शाखा के कारण आज हम बलवान हैं।

विज्ञान के बढ़ते चरण,
विकसित अंतरिक्ष और प्रौद्योगिकीकरण
हो रहा विज्ञान से भरण-पोषण,
पर याद रखें हम न हों विज्ञान की शरण। ❑

नेता और डाकू

अभिनव त्रिपाठी
नवम (क)

मेरे दो छोटे भाई हैं दोनों बड़े लड़ाकू,
सोच रहा हूँ क्या बनने दूँ नेता या फिर डाकू।
आज के नेता और डाकू में कोई नहीं है अंतर,
दोनों मिलकर पढ़ते हैं जनता पर उलटा मंतर।
लूटपाट को करने में है डाकू बड़े लड़ाकू,
घोटालों को करने में नेता हैं सबके बापू।
नेता का बस काम यही है, अपनी जेब को भरना,
जनता सारी भाड़ में जाये, देती रहे धरना।
डाकू अपनी चाकू की दम पर है सबको धमकाता
जनता सारी लूट के समृद्धिवान हो जाता है।
इन नेता और डाकू में कोई नहीं है नीचे,
पुलिस नेता के आगे है और डाकू के पीछे।
नेता सोता राजभवन में और डाकू जंगल में,
अपनी-अपनी करतूतों से हैं दोनों मंगल में।

परीक्षा गीत

प्रफुल्ल ओमर
अष्टम (ख)

दिन रात परिश्रम करतें हम
फिर भी नम्बर मिलते कम
पहली मुश्किल हिन्दी की
गलती होती बिन्दी की
उसके ऊपर इतिहास
जिसमें है कोरी बकवास
पर सबसे भारी एलजेबरा
दुनिया का भरा कूड़ा-कचरा
और गणित का क्या करें
दिन भर माथा गरम करें
भारत से अंग्रेज गये
फिर भी अंग्रेजी छोड़ गये
दिन-रात परिश्रम करते हैं।
फिर भी फेल हो जाते हैं।
क्या यही है भाग्य का खेल
हमारे भाग्य में बस फेल ही फेल।

अपने वतन के नाम पर (प्रेरक गीत)

विशाल यादव
सप्तम (ख)

हम अपनी आन पर,
और अपनी शान पर,
अपने वतन के नाम पर,
सिर को भी कटाएँगे।

दिन को और रात को,
शाम को, प्रभात को,
सेवा के जजबात को,
दुगुना करते जाएँगे।

सेवा दीन-दुखियों की,
और पशु-पक्षियों की ,
विकल अबल युवतियों की,
करके हम दिखाएँगे।

तेग से, तलवार से,
जुल्म के हथियार से,
तोपों की बौछार से,
हम नहीं घबराएँगे।

मरना अपनी आन पर,
और अपनी शान पर,
खेल जाना जान पर,
खेलकर दिखाएँगे।

हम अपनी बात पर,
और अपनी शान पर,
अपने वतन के नाम पर,
सिर को कभी कटाएँगे। ❑

नया सवेरा

शिवम त्रिपाठी
अष्टम (क)

भारत तेरी अमर कहानी
कहती है यूँ बूढ़ी नानी
भारत का हर बच्चा-बच्चा
त्यागी और राष्ट्र अनुरागी

इस माँ के आँचल का साया
जिस पर पड़ती उसकी छाया
वह हो जाता है स्वतंत्र
कभी न झुकता उसका शीश
करो स्वयं में यही प्रतिज्ञा

अपनी भारत माँ का
मस्तक कभी न हो नीचा
चाहे वह हो जिस क्षेत्र में
मस्तक न हो भारत का नीचा

नया सवेरा आज हुआ है।
भारत में देने को दस्तक
तैयार हो जाओ विजय पताका फहराने के लिए
यही समय है भारत को आजाद रखने का ❑

विश्व कप

दीपांशु तिवारी
षष्ठ (ग)

सचिन तेरी बात निराली
मारे छक्का गूँजे ताली
सहवाग तू जो मारे छक्का,
हो जाए हर कोई हक्का बक्का
स्टेन हो या शान टैट या फिर हो मलिंगा
युवी और माही के आगे लगते हैं सब पतिंगा,
आशीष, पीयूष और मुनाफ पटेल, जहीर खान
करें गेंद से मारक खेल।
बल्ले से रैना और कोहली
बंद कर दें ये सब की बोली।
मच जाए तब धूम-धडक्का
यूसुफ भज्जी जब मारें छक्का।
शुभकामनाएँ देते थे सभी नर-नारी
विश्व कप चम्पियन हुई टीम हमारी ❑

सत्य वचन

अर्पित मिश्र
षष्ठ (ख)

रखने के लिये कोई चीज़ है तो - **इज्ज़त**
फेंकने के लिए कोई चीज़ है तो - **ईर्ष्या**
लेने के लिए कोई चीज़ है तो - **ज्ञान**
देने के लिए कोई चीज़ है तो - **दान**
कहने के लिए कोई चीज़ है तो - **सत्य**
छोड़ने के लिए कोई चीज़ है तो - **लालच**
जीतने के लिए कोई चीज़ है तो - **प्रेम**
खाने के लिए कोई चीज़ है तो - **गम**
पीने के लिए कोई चीज़ है तो - **क्रोध**
करने के लिए कोई चीज़ है तो - **दया**

" मनुष्य वह करता है जो उसको पसंद है
मगर होता वही है जो मालिक चाहता है
अगर तुम वही करो जो मालिक चाहता है
तो फिर वही होगा जो तुम चाहते हो" ❑

राष्ट्र भाषा हिन्दी का सम्मान

दिनेश कुमार
सप्तम (क)

'ललित ललाट पर चमकती है बिंदी।
सब भाषाओं में सरल है हिन्दी ।।
आदि हिन्दी का होता है स्वर व्यंजन के ज्ञान से।
पूर्णता आती है उसमें व्याकरण के ज्ञान से।।
हिन्दी के हर अक्षर की यही है कहानी।
उसी से बना हम और बनें हम हिन्दुस्तानी।।
भारतीय संस्कृति का परिचय कराती है हिन्दी।
अपने धर्म का निश्चय कराती है हिन्दी।।
किसी धर्म की जाति पर इसकी नहीं पाबंदी ।
हम हैं हिन्दुस्तानी हमें भाती है हिन्दी ।। ❑

माँ

निर्मला उराव
सप्तम (ख)

माँ से बढ़कर कौन महान ।
माँ है सकल गुणों की खान ।।

लम्बी-लम्बी उमर माँगती
सीधी सच्ची डगर माँगती
बच्चों के ऊपर करती है
चन्दा, सूरज सब बलिदान
माँ से बढ़कर कौन महान।

उठकर रोज बलाएँ लेती
ममता का सागर भर देती
जिससे मिलती, उससे करती
अपने बेटों का यश-गान ।
माँ से बढ़कर कौन महान

जग से न्यारी होती है माँ
सचमुच प्यारी होती है माँ
माँ के चरणों में सब तीरथ
माँ ही होती है भगवान
माँ से बढ़कर कौन महान ।।

चिड़िया व मेढक

श्रुति गुप्ता
सप्तम (क)

जंगल के तालाब में,
चिड़िया मेढक साथ में।
चिड़िया के संग एक बाँसुरी,
ढप मेढक के हाथ में।
.....जंगल के तालाब में।

दोनों में थी बड़ी दोस्ती,
घने पेड़ की छाँव में।
ढप के संग नित बजे बाँसुरी,
लिए हाथ को हाथ में।
.....जंगल के तालाब में।

एक साँप था, बड़ा दुष्ट सा,
खाता मेढक चाव से।
पकड़ लिया उस मेढक को,
बोला, खाऊँगा इसे रात में।
.....जंगल के तालाब में।

इसे देखकर चिड़िया रानी,
झट चिल्लायी आकाश में।
एक बड़ी सी चील उसे सुन
दौड़ी आई पास में।
.....जंगल के तालाब में।

एक झपट में पकड़ लिया,
पंजे से उस साँप को।
बच गया मेढक बजी बाँसुरी,
उस दिन ढप के साथ में।
.....जंगल के तालाब में।

युवा जागरण

शिवम दुबे
एकादश (क)

रात कब की जा चुकी पर,
तू अभी भी सो रहा है।
तेरा मानस सो रहा है,
तेरा भारत रो रहा है।।

हे युवा तू जाग जा
यह देश की पुकार है।
राष्ट्र गिरता जा रहा है,
यहाँ भ्रष्टों की सरकार है।।

खेल ही खेल में घोटाले हो रहे,
कॉमनवेल्थ और आईपीएल निराले हो रहे।
पुत्र ही माता को बेचने पर तुले हैं,
राम के नाम पर भी धन्धे, काले हो रहे।

दुश्मन देश के दामाद बन रहे,
युवा देश के बर्बाद बन रहे।
आतंकवाद तो टिकट है दामाद बनने का,
इसीलिए तो अफजल और कसाब बन रहे हैं।

संविधान देश का आज रो रहा,
पुकार कर तुझसे यह कह रहा।
कानून का रक्षक मैं था पर,
आज रक्षा का खुद ही मोहताज हो रहा।

सो रहा है आज भारत,
रो रहा क्यों आज भारत।
जिस 'भा' में कल 'रत' था,
वह खो रहा क्यों आज भारत।।

तू जाग और शक्ति को अपनी नया आयाम दे,
और इस दुनिया को यह पैगाम दे।
कि यही भूमि जननी है उसमनु की
जो चला गया इस जग को मानवता का नाम दे।।

तू जाग तेरी हुंकार से डरेगी दुनिया सारी,
विश्व गुरु का आसन खाली है।
तू जो दिखा सका मानवता को प्रकाश,
जय भारत, जय भारत करेगी दुनिया सारी।।

चाँदनी

दिनेश कुमार
सप्तम (क)

हँस के देखा जो चाँद ने
चाँदनी शरमा गयी,
सितारों की चूनर में छिप के
शबनम सी बरसा गयी।

भीगी-भीगी सी ठण्डी रातों में
सिरहन सी बिखरा गयी,
धीमी सी हँसी की झालर में
बिजली सी लहरा गयी।

ओढ़ा घूँघट लाज का
खुद को भी बिसरा गयी,
सुनने मीठी बातें चाँद की
मन ही मन अकुला गयी।

पापा के संग मुन्ना जाता

दीपांशु तिवारी
षष्ठ (ग)

पापा के संग मुन्ना जाता
रोज-रोज बाजार
नई-नई फरमाइश करता
रोज नई दो चार।

माँग न पूरी होती जब
तब चलता वह अकड़ के
बीच बाजार में रोने लगता
वह फिर फफक-फफक के।

पापा कहते बेटा तुमको
मैं कल चीज दिलाऊँगा
अच्छे बच्चे की तरह चलो
कल दो-दो चीज खिलाऊँगा।

देख के मुन्ना की हरकत को
पापा हार हैं जाते
और मन माँगी चीज वह
मुन्ना को हैं दिलवाते।

चीज को पाते ही मुन्ना
प्रसन्न बहुत हो जाता
देख के तब मुन्ना का चेहरा
पापा का मन हरसाता।

लाठी का बोलबाला

अमन गुप्त
नवम (क)

अब लाठी का बोलबाला है,
हर घर की दाल में कुछ काला है।
किसी को थाली प्यारी है,
भ्रष्टाचार बनी अब क्यारी है।
हर घर में लगता ताला है,
यहाँ लाठी का बोलबाला है।
कोई यहाँ आग लगाता है।
कोई आग में घी डाल जाता है।
दुश्मन देश का रखवाला है,
अब लाठी का बोलबाला है।
पैसा गाड़ी, पैसा, नारी,
पैसा सबको प्यारा है।
पैसा, पैसा करे भिखारी,
क्या यही उसकी लाचारी है।
कौन कहता गलती उसकी,
कौन यहाँ सदाचारी है।
साधु वेश धरे दानव,
सब यहाँ भ्रष्टाचारी हैं।
देश मरा नादानी से अब,
हर घर में लगता ताला है।
सब जानते हैं यहाँ पर
अब लाठी का बोलबाला है।
लगता है अब यही रहेगा,
हमारे देश का लहराता संविधान।
जब हम ही गिरे हैं तो कौन रखेगा,
हमारे देश की आन, मान व शान।
यही सोच हर दिन मरूँ मैं,
कौन दे इन मूर्खों को ज्ञान।
अब लाठी का बोलबाला है।

स्वाधीन भारत

सुकान्त द्विवेदी
सप्तम (ख)

आजादी की वर्षगाँठ है, नई निरालीशान में।
सभी तरह की खुशियाँ छाईं, अपने हिन्दुस्तान में।
बड़े-बड़े बलिदान किये जब, तब ये शुभ दिन आया है।
नहीं बिरासत में हमने, इस आजादी को पाया है।
भइया ये आजादी हमको, नहीं मिली है दान में।
सभी तरह की खुशियाँ छाईं, अपने हिन्दुस्तान में।।

ओ अंग्रेजो भारत छोड़ो, गूँज यही थी नारा में।
गुरु भगत सिंह सुखदेव कूद पड़े, आजादी की धारा में।
वन्देमातरम् एक शब्द था, उनकी सरल जुबान में।
सभी तरह की खुशियाँ छाईं, अपने हिन्दुस्तान में।।

देश पे मर मिटने वालों में, श्रद्धांजलि चढ़ायें हम।
गाँधी शेखर व सुभाष को, मिलकर शीश झुकायें हम।
आजादी के बाद संगठन, भर दें हर इन्सान में।
सभी तरह की खुशियाँ छाईं, अपने हिन्दुस्तान में।।

माँ कौन है ?

आशीष मिश्र
एकादश (ख)

माँ एक खुशबू है जिससे सारा जहाँ महक उठता है।
माँ एक दरख्त है, जिसके नीचे बैठने से जिंदगी भर की थकान दूर हो जाती है।
माँ एक दुआ है, जो हमेशा हमारी सहायता करती है।
माँ एक दुआ है जो हमेशा हमारे साथ रहती है।
माँ एक आह है जो सीधे आसमान तक जाती है।
माँ एक मशाल है जो सीधा रास्ता दिखाती है।
माँ एक नगमा है, जिसकी गूँज जिन्दगी का एहसास दिलाती है।

चमत्कार

अभिषेक शुक्ल
एकादश (क)

भारत चमत्कारों का देश है
यह सुनकर स्टेनली मोरिस नोबल,
भारत भ्रमण करने आया
भ्रमण के चमत्कार देखकर
उसका माथा चकराया
एयरपोर्ट के बाहर उसने भव्य मन्दिर देखा
सोचा अच्छा रहेगा
अपने भारत भ्रमण का लेखा
दर्शन करके मंदिर से नीचे उतरा मोरिस
उसके विश्वास को किसी ने छुआ
एक चमत्कार हुआ
वह मंदिर की सीढ़ियों पर बैठकर रोने लगा
एक श्वेत, धवल, स्निग्ध, हिमाच्छादित देवदूत
आकर उसे गीता का उपदेश देने लगा
बोला, शोक मत कर, धैर्य धारण कर
जो होता है, वो होता है बिल्कुल सही
उसे देखकर मेरी भी गयी
तुच्छ चप्पल के लिए आँसू बहा रहा है।
मुझे देख क्या मैं रो रहा हूँ
मैं रो नहीं रहा, इसका मतलब ये
नहीं कि मैं आदमी बड़ा हार्ड हूँ
मैं रो ही नहीं सकता क्योंकि,
मैं यहाँ का सुरक्षा गार्ड हूँ।
थोड़ा गम खा, थोड़ा ठहर ले।
किसी की भी पहन ले
और ये बात मैंने किसी से नहीं कह रखी है।
मैंने भी ऐसी ही पहन रखी है
मोरिस नोबल बोला,
तुमने जो कहा, एकदम सही है
परन्तु तुमने जो पहन रखी है।
अपन का यही है.....यही है.....। ❑

प्रसिद्ध क्रिकेटरों के जन्मदिन

लोकेन्द्र प्रताप सिंह
सप्तम (ख)

सचिन तेंदुलकर	-	24 अप्रैल 1973
सौरव गांगुली	-	8 जुलाई 1972
राहुल द्रविड़	-	11 जनवरी 1973
वीरेन्द्र सहवाग	-	20 अप्रैल 1978
पार्थिव पटेल	-	9 मार्च 1985
युवराज सिंह	-	12 दिसम्बर 1981
मोहम्मद कैफ	-	1 दिसम्बर 1980
दिनेश मोंगिया	-	17 अप्रैल 1977
अनिल कुंबले	-	17 अक्टूबर 1970
हरभजन सिंह	-	3 जुलाई 1980
संजय बाँगड़	-	11 अक्टूबर 1971
जहीर खान	-	7 अक्टूबर 1978
आशीष नेहरा	-	27 अप्रैल 1979
अजीत अगरकर	-	4 दिसम्बर 1977
जगावल श्रीनाथ	-	31 अगस्त 1969

❑

पिता हैं तो.....

अनुज शुक्ल
नवम (ख)

पिता जीवन है, सम्बल है, शक्ति है
पिता सृष्टि में निर्माण की अभिव्यक्ति है

पिता अँगुली पकड़े बच्चे का सहारा है।
पिता कभी कुछ खट्टा-कभी खारा है

पिता पालन है, पोषण है, परिवार का अनुशासन है।
पिता धौंस से चलने वाला प्रेम का प्रशासन है।

पिता रोटी है, कपड़ा है मकान है
पिता छोटे से परिंदे का बड़ा आसमान है।

पिता अप्रदर्शित-अनंत प्यार है
पिता है तो बच्चों को इंतजार है

पिता से ही बच्चों के ढेर सारे सपने हैं
पिता हैं तो बाजार के सब खिलौने अपने हैं

पिता से परिवार में प्रतिदिन राग है
पिता से ही माँ की बिंदी और सुहाग है

पिता एक जीवन को जीवन का दान है
पिता दुनिया दिखाने का एहसान है

पिता सुरक्षा है, अगर सिर पर हाँथ है
पिता नहीं तो बचपन अनाथ है

तो पिता से बड़ा तुम अपना नाम करो
पिता का अपमान नहीं, उनपर अभिमान करो

क्योंकि माँ-बाप की कमी को कोई बाँट नहीं सकता

और ईश्वर भी इनके आशीषों को काट नहीं सकता

विश्व में किसी भी देवता का स्थान दूजा है

माँ-बाप की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है

विश्व में सभी यात्राएँ व्यर्थ हैं

यदि बेटे के होते माँ-बाप असमर्थ हैं

वे खुशनसीब हैं माँ-बाप जिनके साथ होते हैं।

क्योंकि माँ-बाप के आशीषों के हजारों हाँथ होते हैं।।

❑

आने वाली पीढ़ी को

तुषार त्रिवेदी
षष्ठ (ख)

दाने गिनकर दाल मिलेगी

गेहूँ की बस छाल मिलेगी।

पानी के इन्जेक्शन होंगे।

घोषित रोज इलेक्शन होंगे।

हलवाई हैरान मिलेंगे

बिन चीनी मिष्ठान मिलेंगे

शीशी में पेट्रोल मिलेगा।

आने वाली पीढ़ी को।

जनता गूँगी बहरी होगी

बेबस कोर्ट कचहरी होगी

गुण्डों का आरक्षण होगा

इन्सानों का भक्षण होगा।

प्यासों की भी रैली होगी

गंगा बिल्कुल मैली होगी।

घरों-घरों में फैक्स मिलेगा

साँसों पर भी टैक्स लगेगा।

आने वाली पीढ़ी को।

❑

पेट की आग

अभिषेक शुक्ल
एकादश (क)

न हैं देवर न भाभी, न ठठ्ठा ठिठोलियाँ
न हैं दादा न दादी, न मदमस्त टोलियाँ
संयुक्त परिवार विभक्त हुए हैं जबसे
न मनती दिवाली, न जलती हैं होलियाँ

बात करें हम कैसे, अबीर-गुलाल की
चंग-संग राग-रंग, मस्ती धमाल की
होली-दिवाली की बात करेगा कौन
हर घर में चिन्ता है, रोटी की, दाल की

कैसे मने दीवाली? भूखे खेत-खलिहान हैं
आत्महत्या कर रहे, इस देश के किसान हैं।
फसल उखाड़कर, खेत को उजाड़कर
कृषि मंत्री बना रहे, क्रिकेट का मैदान हैं।

तरस रहे हैं परिजन, दाल-रोटी खाने को
भटक रहे हैं सब, आग पेट की बुझाने को
कहाँ ये जुगाड़ करें होली की लकड़ी का
घर में नहीं लकड़ी है, चूल्हा जलाने को।

पर्यावरण

प्रणव सिंह चौहान
नवम (ख)

आज हो रहे पृथ्वी पर,
नित्य नये-नये चमत्कार।
जिनके कारण हम हैं करते
पृथ्वी व जीवन में हाहाकार।

सुविधाओं के बलबूते पर,
आज हैं हद के पार।
आज हम हैं नहीं निराश,
पर, कर रहे हम पृथ्वी विनाश।

यदि ऐसे ही करते रहे हम,
पृथ्वी का सिर्फ महाविनाश।
ऐसे दिन तब दूर नहीं,
जब जीवन होगा हमसे निराश।

आओ आज हम सब प्रण लें,
कि करेंगे पृथ्वी का बचाव।
कम करके सुविधाओं को,
देंगे पृथ्वी को नया प्रकाश।

मन करता है

वैभव गुप्त
षष्ठ (क)

पंछी बनकर उड़ जाने का
मन करता है,
हर डाल को छूने का मन करता है,
छोटे-छोटे घोंसले बनाने का
मन करता है,
उन घोंसलों में सपने सजाने का
मन करता है,
आशाओं की उड़ान को और दूर
ले जाने का मन करता है,
हर एक सपने को पलकों पर
सजाने का मन करता है,
पहाड़ों में चिल्लाने का मन करता है,
उन आवाजों में खो जाने का
मन करता है
मन करता है लौट जाऊँ
अपने बचपन में
बच्चा बनकर गुड्डे-गुडियों का
ब्याह रचाने का मन करता है
कुछ नए सपने
सजाने का मन करता है।

माँ की ममता

ऋषभ मिश्र
षष्ठ (क)

माँ के जैसा कोई नहीं
माँ के प्यार का अन्त नहीं
माँ तो ममता की मूर्ति है
बच्चे के जीवन में ज्योति है।
माँ की ममता का माप नहीं,
माँ के जैसा कोई नहीं;

माँ ही बच्चे की प्रथम गुरु है
हर राह पर बच्चों की साथी है।
माँ से साहस बढ़ जाता है।
सबकी पहचान कराती है,
माँ का दिल, इतना कोमल है,
सच्ची बातों से पिघलता है,
माँ के जैसा कोई नहीं।

माँ पढ़ने को दूर भेजती है
अन्दर ही अन्दर वह रोती है
अन्दर से उदास रहती है
बाहर से वह खुशी दिखाती है
माँ के जैसा कोई नहीं।
माँ कभी डाटती है, धमकाती है।
पल भर में ही क्षमा करती है
माँ के गुस्से में प्यार बसा;
माँ के जैसा कोई नहीं।

तू माँ, तू जननी

प्रियश गुप्त
षष्ठ (क)

वह प्रसव पीड़ा में तड़प रही असह्य दर्द को झेल रही ।
एक नवीन सृजन होने वाला एक नव जीवन आने वाला।।
कहते हैं नारी धरती है जो धैर्यवती जो शीलवती।
जो अनन्त पीड़ा को सहकर भी नित नया सृजन कर सकती।।
उस नारी से जाना है क्या? उस धरती से पूछा है क्या ?
इतनी पीड़ा सहकर के भी वह जीवन को जीती है क्यों?
क्यों नहीं कभी विद्रोह करे स्वयं के लिए भी संघर्ष करे।
जो सृजन उसे ही दे पीड़ा क्यों न उसका प्रतिकार करे।।
प्रश्नों की जब यह बौछार हुई वह मौन रही, वह मूक रही।
फिर धीरे से दो होंठ हिले एक मीठी, मधुर बोली निकली।।
मैं नारी हूँ मैं धरती हूँ पर मैं ही तो माँ भी हूँ।
जिस सृजन की पीड़ा सहती हूँ वह तो मेरी ममता है।।
जब वह मेरी गोद में आता है और अपलक मुझे निहारता है।
मेरी गोद में लिपट-लिपट जब अपनी क्षुधा मिटाता है।।
उसके जीवन में आते ही मैं औरत से माँ बन जाती हूँ।
अपनी ही नजरों में उठ कर ईश्वर जैसी हो जाती हूँ।।
तब कोई पीड़ा नहीं रहती कोई भी दंश नहीं चुभता।
उस आँखों के तारे के खातिर मन सर्वस्व न्यौछावर करता।।
उसकी तोतली बातों में मैं खुद विस्मृत हो जाती हूँ।
वह जीवन में फूले और फले, यह सोच पुनः जी जाती हूँ।।

❑

मैं उस दिन की राह देख रही हूँ, जब मेरा हर बेटा एक शक्ति पुंज बन कर मेरा ही नहीं, समस्त विश्व का भार हरने वाला महामानव बनेगा।

- माँ भारती (भारत माता)

यदि भगवा आतंकी होता तो

प्रशान्त मिश्र
एकादश (ख)

काश भारत का भगवाधारी, यदि हिन्दू आतंकी होता।।
तो सत्ता की कुर्सी पर, देश का सबसे मजबूर प्रधानमंत्री न बैठा होता ।।
इन चूहों की जमात में, विदेशी बिल्ली का संचालन न होता ।।
सत्ता के गलियारों में, सोनिया का मुखौटा मनमोहन कभी न होता।।

यदि हिन्दू आतंकी होता।

कश्मीर में पंडित होता। अलगाववादियों का सफाया होता।
लाल चौक पर तिरंगा फहरता। पूरा पाकिस्तान हिन्दुस्तान में होता।
चाइनीज माल का बहिष्कार होता। स्वेदशी माल का भण्डार होता।

यदि हिन्दू आतंकी होता।

76,000 करोड़ का घोटाला न होता। काला धन वापस आ गया होता।।
घर-घर में हथियार का कारखाना होता। हर गली चौराहा पर मंदिर होता
बलात्कारियों का सिर कट गया होता। बदला हुआ कानून होता।

यदि हिन्दू आतंकी होता।

मुम्बई जैसा हमला कभी न होता। कसाब अबतक जिंदा न होता।
हिन्दी हिन्दुत्व का बोलबाला होता। अंग्रेजी का उजड़ा चमन होता।।
कोई भी नेता विदेश में शादी न करता होता। एक की भूल से देश बच गया होता।
हो जाती आजाद सोनिया मोनिया क्योंकि हिन्दुस्तान कभी इटली न होता।

यदि हिन्दू आतंकी होता।

माया के पास इतना धन न होता। मूर्ति लगवाने का शौक न होता।
जाति भाषा धर्म से ऊपर देश होता। गरीबी का नामोनिशॉ मिट गया होता।
बाबरी का दूर-दूर तक नाम न होता। अयोध्या में राम का भव्य मंदिर होता।

यदि हिन्दू आतंकी होता।

भारत-पाकिस्तान एक होता। सचिन-शोयेब एक टीम में होते ।
पानी के ऊपर घर होते। 46 वर्ष के युवा बताने वाले कुँवारे न होते।

हॉलीवुड ही बॉलीवुड होता। ओबामा भी अपना वफादार होता।

यदि हिन्दू आतंकी होता।

बंजर भूमि पर भी कमल खिलता। पीने को साफ पानी मिलता।
बेरोजगार को रोजगार मिलता। शिक्षा का व्यसायीकरण न होता।।
चूहे बिल्ली के खेल में बंदर बाजी न मार जाता। भारत का हर प्रदेश गुजरात होता।

यदि हिन्दू आतंकी होता।

बजरंग दल, शिवसेना का परचम होता। वैलेन्टाइनडे कभी न होता
मस्जिद में भी सुन्दरकाण्ड होता। भगवे की लहर में जय श्री राम होता
हिन्दुस्तान की सड़कों पर कभी जाम न होता। हर भारतीय के मन में वन्देमातरम् होता

यदि हिन्दू आतंकी होता।

यदि बारूद की ढेरी पर सुलगता हुआ गोला गिर गया होता।
तो भूचाल आ गया होता। सारा संसार जाग गया होता।
आकाश पाताल एक हो गया होता। तीसरा विश्व युद्ध छिड़ गया होता।
यदि मैं आतंकी हो गया होता। तो हिटलर का बाप बन गया होता।
सच मानो यदि हिन्दू आतंकी होता, तो पूरा विश्व हिन्दुस्तान बन गया होता। ❑

आज का विद्यार्थी

अर्चित पाण्डेय
षष्ठ (ख)

हम कालेज के स्टूडेण्ट
आठ बजे हम सोकर उठते
पाट्टी से पहले पीते टी
पूछते हैं कहाँ गया सरवेण्ट।
हम कालेज के स्टूडेण्ट।।
कालेज जाते साइकिल पर
पैंड़िल मारें खूब उछल कर
पथ पर गिर जाते हम
अन्धों की उपाधि पायें हम
फिर भी न जाने
कैसे हो जाती एबसेण्ट।
हम कालेज के स्टूडेण्ट।।
कल-कल में ही वर्ष गँवाया
टीचर को भी खूब छकाया
अब सुनो हमारा रिजल्ट
आया है जीरो परसेण्ट
हम कालेज के स्टूडेण्ट।। ❑

भगवान् सूर्य का परिवार

दिव्या
षष्ठ (ग)

भगवान् सूर्य उत्पत्ति के समय एक प्रकाशमान्य विशाल गोलाकार वृत्त के रूप में थे, उनका एक नाम मार्तण्ड है। देव शिल्पी विश्वकर्मा ने अपनी पुत्री संज्ञा का विवाह उनके साथ कर दिया संज्ञा के सुरेण, राज्ञी, द्यौ, त्वाष्ट्री एवं प्रभा आदि अनेक नाम हैं। सूर्य का प्रचण्ड तेज संज्ञा के लिए सर्वथा दुःसह था। तेज संज्ञा से वैवस्वत मनु, यम और यमुना नाम की तीन सन्तानें उत्पन्न हुईं।

संज्ञा के मन में अपने पति के सुन्दर रूप को स्पष्ट न देखने का दुःख बना रहता था। उसने सोचा कि तपस्या करने से मुझ में वह शक्ति आ सकती है, जिससे मैं उनके साथ उसके सुन्दर रूप को देख सकूँ और उनके अंग स्पर्श को सह सकूँगी। ऐसा विचार कर उसने अपने शरीर से एक छाया प्रकट की और उसे पति की सेवा में नियुक्त कर स्वयं कुछ दिन पिता के घर रहकर, बाद में उत्तर कुरु में तपस्या करने चली गयी अपने सतीत्व की रक्षा के लिए उसने अपना स्वरूप अश्विनी का बना लिया था। छाया का दूसरा नाम विक्षुभा है, उसके प्रत्येक अंग, आकृति, बोल-चाल आदि संज्ञा के सदृश ही थे, इसलिए भगवान् सूर्य ने इस रहस्य की ओर ध्यान नहीं दिया वे छाया को संज्ञा मानते रहे। उससे सावर्णि मनु, शनि, तपती तथा विष्टि नामक चार सन्तानें हुईं। छाया अपनी संतानों को बहुत प्यार करती थी और वैवस्वत यम तथा यमुना से द्वेष करती थी और यह विषमता अन्त में इतनी बढ़ी कि उसने विषाद का रूप लिया।

छाया द्वारा निरन्तर उत्पीड़न होने पर यम को एक दिन क्रोध आया माता को धमकाने के लिए अपना पैर उठा लिया। यह देखकर उसने शाप दे दिया। इसी कलह के बीच भगवान् सूर्य आ गये। बालक यम ने पिता को सारी बात बताई और यह शाप भी बताया यह सुनकर सूर्य ने छाया से पूछा। तुम्हारे लिए सभी सन्तानें बराबर हैं। यह विषमता क्यों करती हो। भगवान् सूर्य ने कहा यम का पैर नहीं गिरेगा। तपती संवरण की पत्नी होगी। विन्ध्याचल के दक्षिण 'तपती' और उत्तर में यमुना बहेगी। ये दोनों नदियाँ जनता के पाप-ताप को नष्ट करेंगी। पुनः उन्होंने पुत्र को वरदान दिया कि तुम लोकपाल बन जाओ।

इसके बाद सूर्य अपने ससुर त्वष्टा के पास गये। वे जानना चाहते थे कि मेरी प्रियतमा मुझे छोड़कर तप क्यों कर रही हैं।

त्वष्टा ने ध्यान लगाकर सब बातें जान लीं उन्होंने बताया कि संज्ञा आपका रूप देखना चाहती थी इसलिए तप कर रही हैं। सूर्य अपनी पत्नी की प्रसन्नता के लिए कष्ट सहने को तैयार थे। तब त्वष्टा ने भ्रमि पर चढ़ाकर उनके तेज को छाँट दिया।

भगवान् सूर्य को अपनी पत्नी के अनुरूप पाकर बड़ी प्रसन्नता हुयी वे अपनी पत्नी के पास उत्तर कुरु चले गये। वहाँ उन्होंने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए अश्विनी रूप में स्थित अपनी पत्नी को पहचान लिया और स्वयं अश्व का रूप धारण कर उससे मिले। बेचारी अश्विनी घबरा गयी। वह डर गयी कि किसी दूसरे पुरुष ने स्पर्श न कर लिया हो तब उसने दोनों नाकों से सूर्य के तेज को फेंक दिया। उसी से अश्विनी कुमारों की उत्पत्ति हुई। तेज के अन्तिम अंश से रेवन्त की उत्पत्ति हुई। बड़े होने पर दोनों अश्विनी कुमार देवताओं के वैद्य हुए और रेवन्त को गुह्यकों एवं अश्वों का आधिपत्य प्राप्त हुआ।

इस तरह भगवान् सूर्य को संज्ञा से वैवस्वत मनु, यम, यमुना, अश्विनीकुमार और रेवन्त तथा छाया से शनि, तपती, विष्टि और सावर्णि मनु ये दस संतानें हुईं। ❑

पं० दीनदयाल का त्याग

सोनम
सप्तम (ग)

लंदन की यात्रा पर जाते समय पं० दीनदयाल उपाध्याय को केवल तीन पौण्ड दिए गए। उस समय विदेशी मुद्रा का संकट था। लंदन के हिन्दू सेण्टर में उनका स्वागत किया गया। संस्था के अध्यक्ष फकीरचन्द्र सोंधी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में एक हिन्दू मंदिर की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने सोचा कि उपाध्याय जी के प्रभाव से धन जुटाने में भी सहायता मिल सकेगी।

उपाध्याय जी ने धन्यवाद देते हुए इस पुनीत कार्य में सहयोग देने का संकल्प किया और कहा मेरे पास केवल तीन पौण्ड हैं। इन्हें सद्भावना के प्रतीक रूप में स्वीकार कीजिए। मेरे प्रभाव के उपयोग की जो बात है, वह तो बाद में देखी जायेगी, इतना कहकर जेब से निकाले तीन पौण्ड और दे दिए अध्यक्ष को। उपाध्याय जी की यह त्याग वृत्ति ही अनेक उदार लोगों की प्रेरणा स्रोत बनी। ❑

उत्तराधिकारी घोषित करना

सूरज प्रताप सिंह सिकरवार
सप्तम (ख)

प्राचीन समय की बात है। एक राजा के चार पुत्र थे। राजा जब वृद्ध हो गया तो उसे यह चिंता हुई कि वह चारों राजकुमारों में से किसे अपना उत्तराधिकारी घोषित करे। उसने राजगुरु से कहा कि आप एक परीक्षा लें जिससे मुझे उत्तराधिकारी को घोषित करना आसान रहे। राजा ने कहा कि आप जो करेंगे मुझे मान्य होगा। राजगुरु ने चारों राजकुमारों को कल सुबह राजसभा में उपस्थित होने का संदेश भिजवाया। अगले दिन राजकुमार राजसभा में पधारे। पहला राजकुमार हाथी पर सवार होकर आया। वह सुनहरी हौदे में बिछी रेशमी झूल के आसन पर विराजमान था। सिर पर हीरे-मोतियों से जड़ा छत्र झूल रहा था। साथ ही कई सेवक भी थे। दूसरा राजकुमार घोड़े पर सवार था सिर पर चमचमाता मुकुट कमर में दोनों ओर मखमली म्यान में बंद दो तलवारें। घोड़े के दोनों ओर दास-दासियाँ और सेवक। तीसरा राजकुमार रथ पर सवार होकर आया आगे लगाम थामे सारथी व पीछे कई सेवक। चौथा राज कुमार दिखाई नहीं दे रहा था। अचानक चौथा राजकुमार पैदल आता हुआ दिखाई दिया। साधारण सूती वस्त्र सिर पर राजपूती पगड़ी, दाएँ हाथ में मामूली-सी लाठी और बाँए हाथ में पके हुए चावल वाली हँड़िया। वह चुपचाप राजगुरु एवं राजा को अभिवादन करके खड़ा हो गया। कुछ क्षण पश्चात् राजगुरु बोले आप चारों राजकुमारों का राजसभा में स्वागत। पहले राजकुमार को एक सौ हाथी, दूसरे को एक हजार घोड़े तथा तीसरे को पचास रथ प्रदान किए जा रहे हैं हर प्रकार की आवश्यक सामग्री से सुसज्जित। इतने ही योद्धा सैनिक भी साथ रहेंगे। चौथे राजकुमार का तो कोई हाथ खाली ही नहीं। फिर भी उसे मुट्ठी भर कच्चे चने दिए जाते हैं। उन्हें वह अपनी पगड़ी के पल्लू में बाँध सकता है। राजगुरु ने चारों राजकुमारों को संबोधित करते हुए कहा आप चारों को दस वर्ष के लिए देश से निकाला जाता है आप चारों राज्य की सीमाओं से दूर चले जाएँ। राजगुरु के आदेश का पालन हुआ। दस वर्ष बाद पहला राजकुमार राजसभा में प्रविष्ट हुआ-पैदल, गंदे वस्त्र, बीमार निर्बल शरीर। राजगुरु के संकेतानुसार वह एक ओर सिर झुकाकर खड़ा हो गया। कुछ क्षण पश्चात् दूसरा राजकुमार दिखाई दिया। घोड़ा भी साथ था परन्तु राजकुमार उस पर सवार नहीं था। वह अभिवादन करके पहले राजकुमार के साथ खड़ा हो गया। तभी एक भील ने सूचना दी कि वे वन में विश्राम कर रहे हैं वे यहाँ आने की स्थिति में नहीं हैं। उसी समय चौथा राजकुमार आता है। वही सूत्री वस्त्र, सिर पर बड़ी पगड़ी दाएँ हाथ में लाठी व बाएँ हाथ में मोटी-सी बही। राजगुरु ने कहना प्रारम्भ किया कि पहले व दूसरे वे तीसरे राजकुमारों ने आस-पास के इलाकों को जीतना चाहा परन्तु पराजित हुए। चौथे

राजकुमार को आप देख रहे हैं। वे अपनी दस वर्षों की कहानी खुद सुनाएँ चौथे ने कहना प्रारंभ किया कि मैंने यहाँ से प्राप्त चने एक नदी के किनारे गीली मिट्टी में बो दिए। कुछ दिन मैं कंद-मूल फल खाकर व नदी का पानी पीकर रहा। जब चने के पेड़ होने के बाद वे पके तो मैंने कुछ चने अलग कर दिए शेष बाजार में बेचकर एक झोपड़ी खरीदी व एक गाय भी ली। बचे हुए चनों को मैंने फिर बो दिया। धीमे-धीमे मेरी आमदनी बढ़ती गई। मैंने सुरक्षा के लिए कुछ घोड़े खरीदे मेरे भाइयों की सेना पराजित होकर भागी व मेरे पास पहुँच गई। इस प्रकार एक सेना अपने-आप तैयार हो गई। मैंने आस-पास के क्षेत्रों से संबंध बनाए। मिल-जुलकर जनता की सुख-सुविधा के लिए कई योजनाएँ चलाईं यह कहकर उसने हाथ जोड़कर सिर झुका दिया। राजगुरु ने कहा तुम ही आज से राजा के उत्तराधिकारी हो।

भाग्य (Luck)

रोहन वर्मा
षष्ठ (क)

उसने सारा दिन काम किया
और सारी रात काम किया।
उसने खेलना छोड़ा
और मौज-मस्ती छोड़ी
उसने ज्ञान के ग्रन्थ पढ़े
और नई बातें सीखीं
वह आगे बढ़ता गया
पाने के लिए सफलता जरा सी
दिल में विश्वास और हिम्मत लिए
वह आगे बढ़ा
और जब वह सफल हुआ
लोगों ने उसे भाग्यशाली कहा।

कवि सम्मेलन

दीपांशु कटियार
षष्ठ (क)

कविता लिखते रात-दिन कविवर लल्लू लाल,
तरबूजे सी तोंद है खरबूजे से गाल।।
नाक आम की फाँक है, आँखें ज्यों बादाम।
घर में करते ही नहीं, कविवर बिल्कुल काम।।
देख-देख कर लाल हुई, क्रोधित घर वाली।
घर के अन्दर रोज पटकती लोटा अरु थाली।।
घर में आटा नहीं, पड़े हैं खाली बर्तन।
जहाँ देखिये चूहे, करते अपना नर्तन।।
घर वाली बोली कविवर, कुछ शर्म न आती।
कविता लिखने चले निराला जी के नाती।।
दौड़ पड़ी वह क्रोधित होकर लेकर लम्बासा बेलन।
पूर्ण करूँ लोसहित दक्षिणा कवि सम्मेलन।।

''दोस्ती''

तन्मय द्विवेदी
एकादश (क)

हर दुख दर्द की दवा है दोस्ती,
तन्हा, होते सभी अगर होती न दोस्ती,
कही अनकही बातों की गवाह है दोस्ती,
दूर रहने पर खुशबू बनकर महकेगी दोस्ती,
पास रहने पर बातों में चहकेगी दोस्ती,
अरमानों से आगे जाकर एक जहाँ है दोस्ती,
आशाओं के बल पर निराशाओं को हटाना है दोस्ती,
अनजानों से जो रिश्ता बनता है वह है दोस्ती,
चमक है जिस रिश्ते की आँखों में वह है दोस्ती,
करोगे जिस दिन उस दिन पता चलेगा क्या है दोस्ती,
कमी है पूजने वालों की इस दुनियाँ में वरना खुदा है दोस्ती।

संकल्प शक्ति

कृष्ण मोहन द्विवेदी
नवम (ग)

जो करता है संकल्प महान ।
करते सब उसका सम्मान ।।
संकल्प पूर्ण करना सीखो।
मुश्किलों से लड़ना सीखो।।
डर कर हार कभी मत मानो।
अपने लक्ष्य को स्वयं पहचानो।।
संकल्प करोगे तो सफलता पाओगे।
जीवन के रहस्य को समझ जाओगे।

चाह लक्ष्य की

नितिश कटियार
नवम (ख)

अगर चाह हो आगे बढ़ने की,
तो राह निकल आती है।

काँटे धूमिल हो जाते हैं,
जीवन में कलियाँ मुस्कातीं हैं।

जब याद लक्ष्य की आती है,
तो जान, जान में आती है।

पर पाने के लिये लक्ष्य,
चलना अभी काफी है।

जब आगे बढ़ने की चाहत,
मेरे दिल को तड़पाती है

हौसले बुलन्दी के लिये,
अभी आगे बढ़ना काफी है।

जब धन अभाव टकराता है,
तो अन्धकार छा जाता है।

दुनिया में कुछ नहीं दिखता,
फिर अश्रु आँख में आता है।

मन सोच तभी बढ़ जाती है,
तब घुटन बड़ी तड़पाती है।

अगर चाह हो आगे जाने की,
तो राह निकल आती है।।

चतुर्वर्णस्थ माँ

आशुतोष अग्निहोत्री
षष्ठ (ग)

"ऊपर जिसका अन्त नहीं उसे आसमाँ कहते हैं
सृष्टि में जिसका अन्त नहीं, उसे ही माँ कहते हैं"

सदोष या कि निर्दोष जैसी भी है
वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत
हम सबका कोई न कोई वर्ण है
लेकिन माँ
माँ में चारों वर्ण
एक साथ लीन हो गये
कितने समीचीन हो गये!
और यों माँ चतुर्वर्णस्थ है।
माँ जब-जब बोध देती है
वह ब्राह्मण बन जाती है।
माँ जब-जब रक्षा करती है
और समय से लड़ना सिखाती है।
वह क्षत्रिय सी लगती है।
अन्नपूर्णा के रूप में
माँ वैश्य नहीं तो और क्या है?
दिन रात यथा आवश्यकता
समय-असमय
जब वह मलमूत्र साफ करती है
माँ सफाई कामगार लगती है।
माँ बनने के लिए
औरत होना जरूरी है
हर और माँ नहीं हो सकती
माँ बनने के लिये
औरत का चुतुर्वर्णस्थ होना जरूरी है।

" बचपन के आठ साल, तुझे अँगुली पकड़कर जो माँ-बाप स्कूल ले जाते थे, उस माँ-बाप को बुढ़ापे के आठ साल, सहारा बनकर मंदिर ले जाना..... शायद थोड़ा सा कर्ज, थोड़ा फर्ज पूरा होगा" ❑

शिक्षा

आकाश सिंह
नवम (ख)

शिक्षा है एक ऐसा आधार,
जिससे होता है जीवन साकार।
शिक्षा बिना मानव है ऐसे,
जल बिना सागर हो जैसे।
शिक्षा से व्यक्ति बनता है धीर, वीर, गम्भीर
शिक्षा की परिभाषा से बनता है पवित्र शरीर।
शिक्षित व्यक्ति को बनना चाहिए कृतज्ञ, उपकारी,
प्रत्येक व्यक्ति को बनना चाहिए उसका अधिकारी।
शिक्षा को हमेशा ही ग्रहण करना चाहिए,
जीवन भर उसका अनुगमन करना चाहिए।

❑

एक आजाद पंक्षी की तलाश

प्रशान्त मिश्र
एकादश (ख)

मैं बहुत आनन्द में था, क्योंकि मुझे आजादी मिल गई है।
जो मेरी सोच कहती थी, उसे नई आशायें मिल गई हैं।

न जाने लोग क्यों एक के पीछे एक भागते हैं।
न चाहकर भी चले गये रास्तों में मंजिल को तलाशते हैं।

आज के अभिभावक अपने बच्चों पर सट्टा लगाते हैं।
जन्म से पहले ही उन्हें, डाक्टर या इन्जीनियर बना देते हैं।

मगर बच्चा अपनी आजादी में शमाँ बाँधना चाहता है।
वह औरों से हटकर एक नयी उड़ान भरना चाहता है।

एक सच्ची आजादी के लिए अपनी महत्वाकांक्षाओं से समझौता करना होगा।
अपने नये चिन्तन से, हिन्दुस्तान को पुनः सोने की चिड़िया बनाना होगा। ❑

हिन्दी हैं हम

अश्विनी अग्निहोत्री
सप्तम (क)

देवनागरी लिपि है हम सब का अभियान,
हिन्दी भाषा का आगे बढ़ करो सभी सम्मान।
बंद दीवारों में ही न करना इस पर विचार,
घर-द्वार से बाहर भी कायम कर दो अधिकार।
दोहा, कविता, कहानी, उपन्यास, छंद,
हिन्दी भाषी कर लो अपनी आवाज बुलंद।
स्वर-व्यंजन की सुंदर यह वर्णमाला,
सुर संगम सी शोभित होती वर्णमाला।
कोकिला-सी मधुर है हिन्दी बोली।
उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम सबकी हमजोली।
भिन्नता में भी यह एकता दर्शाती,
लाखों, करोड़ों भारतीयों के दिल में जगह बनाती।
निराला, दिनकर, गुप्त, पंत, सुमन,
जिनसे महका है हिन्दी का शोभित चमन।
आओतुम भी समर्पित करो अपना तन-मन ,
सींचो बगिया चहक उठे हिन्दी से अपना वतन। ❑

ठण्डा मतलब.....

आकाश सिंह
नवम (ख)

पेप्सी बोली कोका कोला!
भारत का इन्सान है भोला।
विदेश से मैं आयी हूँ,
साथ मौत को लायी हूँ।

लहर नहीं जहर हूँ मैं,
गुर्दों पर बहता कहर हूँ मैं।
मेरी पी एच दो प्वांइट सात,
मुझमें गिर कर जल जायें दांत।

जिंक आर्सेनिक लेड हूँ मैं,
काटे दाँत को वो ब्लेड हूँ मैं।
मुझसे बढ़ती एसिडिटी,
फिर क्यों पीते भैया-दीदी?

ऐसी मेरी कहानी है,
मुझसे अच्छा तो पानी है।
540 करोड़ कमाती हूँ,
विदेश में ले जाती हूँ।

शिव ने भी जहर उतारा,
कभी अपने कण्ठ के नीचे।
तुम मूर्ख नादान हो यारों,
जो पड़े हुए हो मेरे पीछे।

देखो इन्सान अंधा है,
बना लिया मुझको ही धन्धा है
मैं पहुँची हूँ आज वहाँ पर,
पीने का पानी नहीं जहाँ पर

छोड़ो नकल अब अक्ल से जियो,
जो कुछ पीना सँभल के पियो।
दूध, अनानास और आम का जूस,
स्वास्थ्यवर्धक नीबू का पानी।

जिसका नहीं है कोई सानी,
तुम भी पीना और पिलाना।
पेप्सी नहीं अब घर में लाना,

नहीं तो होगा वो अंजाम।
कर दूँगी मैं काम तमाम।।

ऊपरी चमक का भ्रम

अतुल तिवारी
अष्टम (क)

रूपम नगर में एक राजा रहता था। उसका एक लड़का था। वह बहुत सुन्दर था इसलिए उसे प्यार से चाँद कहते थे। जब वह आठ वर्ष का था तब उसका मन महल में नहीं लगता था। वह चुपचाप महल से निकलकर गरीब बच्चों के बीच पहुँच जाया करता था। वह गरीब बच्चों को नये-नये वस्त्र मिठाई इत्यादि बाँट दिया करता था। उसे गरीबों से बहुत हमदर्दी थी। इसलिए वह किसी न किसी रूप में उनकी समय-समय पर सहायता करता था।

एक दिन पुत्र को गरीब बच्चों के साथ खेलता देख राजा ने उसे समझाया लेकिन उस बालक का मन नहीं बदला राजा को बहुत क्रोध आया और आदेश दिया कि इस नालायक को फाँसी पर चढ़ा दो। यह सुनकर राजकुमार ने पिता से कहा पिता श्री मुझे कुछ समय दे दो उसके बाद आप मुझे फाँसी पर चढ़ा देना। राजा ने उसकी बात मान ली दूसरे दिन राजकुमार तीनों घोड़े लेकर जंगल में पहुँचा पाँच दिन बाद महल वापस लौटा उसके पास तीन घोड़े थे और तीनों घोड़ों पर एक-एक और एक ही तरह के संदूक रखे थे जब वह राज दरबार में तीनों संदूकों को लेकर पहुँचा तो उसने वहाँ पर उपस्थित दरबारियों से कहा कि यह तीन तरह के संदूक हैं। पहला सोने का, दूसरा चाँदी का, तीसरा लकड़ी का है तो बताओ कौन-सा सन्दूक सबसे अच्छा है। सभी दरबारियों ने एक साथ कहा सोने का इसके बाद चाँदी का और खराब सन्दूक लकड़ी का है। जब राजकुमार ने तीनों संदूक खोले तो सोने के सन्दूक में जहरीले कीड़े बिच्छू आदि थे। चाँदी के सन्दूक में कंकड़ पत्थर व लकड़ी के सन्दूक में हीरे जवाहरात भरे थे। यह तमाशा राजा अपने सिंहासन पर बैठे-बैठे देख रहा था। तभी राजकुमार ने कहा कभी ऊपरी चमक के भ्रम में न पड़ें उसने राजा से कहा यह न सोचिए कि धनी सभी अच्छे हैं तथा गरीब सभी बेकार व खराब हैं। तभी राजा को अपनी भूल का एहसास हुआ उसने अपने पुत्र को गले से लगाते हुए कहा पुत्र तू बुद्धिमान है मैंने बिना सोचे समझे बिना विचार किए तुझे गलत समझ लिया। तू हमारे कुल का दीपक है।

परहित बस जिनके मन माहीं।
तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कुछ नाहीं।।

❑

मनुष्य के सपने

आशुतोष त्रिपाठी
नवम (क)

आग अगर होती तो,
मैं पानी से बुझा देता।
दर्द अगर होता तो,
उसे भी दिल में सजा लेता।
प्यास अगर होती तो,
शराबों का सहारा ले लेता।
ख्वाब अगर होते तो,
उसका भी खूब मजा लेता।
उन दिलों को चैन कहाँ,
जिनके सपने तक टूट गये।
उन अँखियों को नींद कहाँ,
जिनके अपने तक छूट गये।
कुछ पाने कुछ खोने का,
जिनके अन्दर सपना है।
समन्दर ही क्या दरियों में भी,
जिनका सब अपना है।
क्या है मेरा, क्या है तेरा,
जिनके अन्दर यह भाव है।
एक दूसरे की परितारणा से,
जिनके अन्दर अभी घाव है।
उनके लिए देश ही क्या,
विदेश तक न प्यारा है।
इस जोर-जुल्म के टक्कर में,
संघर्ष हमारा नारा है।
"प्यास जिनमें बसी, पानी रहते हुए ।
ख्वाब जिनके न जगे एहसास रहते हुए।
रह रहा है जो इस जग में जुल्म सहते हुए।
मर गये वे दीन मानव उम्र के रहते हुए। ❑

चाँदबीबी

शिखर पाण्डेय
षष्ठ (ग)

दक्षिण भारत के छोटे से राज्य अहमदनगर का मुगल साम्राज्य से लोहा लेना बड़े साहस का कार्य था। किन्तु अहमदनगर ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि चाँदबीबी जैसी वीरांगना का कुशल नेतृत्व मिल जाये तो अकबर जैसे प्रतापी सम्राट की सेना को भी मुँह की खानी पड़ सकती है।

चाँद बीबी अहमदनगर के शासक हुसैन निजामशाह की पुत्री थी। बाल्यकाल में ही इनके पिता की मृत्यु हो गयी थी। इसलिए शासन का काम भी इनकी माँ देखती थी। माँ ने चाँदबीबी की शिक्षा दीक्षा पर विशेष ध्यान दिया। थोड़े ही समय में चाँद बीबी रणनीति और राजनीति में कुशल हो गयीं।

चाँदबीबी का विवाह बीजापुर के सुल्तानअली आदिल शाह के साथ हुआ था। ❑

माँ का कर्ज

सिद्धार्थ पोरवाल
सप्तम (क)

महाराणा रणजीत सिंह राजगद्दी पर बैठे तब अपनी माँ से बोले - " माँ बोलो मैं आपको क्या प्रदान करूँ? आपका सम्पूर्ण कर्ज अदाकरूँ।" माँ कुछ सोचकर बोली बेटा ! समय आने पर माँग लूँगी। कुछ समय पश्चात् एक शाम को राजा रणजीत सिंह के शयन कक्ष में पड़े बिस्तर को गीला कर दिया। सर्दी का मौसम था। राजा रणजीत सिंह समस्त कार्य निपटाकर जब शयन कक्ष में सोने के लिए आए, बिस्तर को गीला देखकर क्रोध से बिफर पड़े। समस्त दास-दासियाँ डर से काँपने लगी। बोलने को किसी की भी हिम्मत नहीं हुई। अन्त में माँ आई बोली "बेटा मैंने ही बिस्तर गीला किया है। आज तुम इसी पर विश्राम करो। "नहीं माँ नहीं, माँ ऐसी भीषण सर्दी में गीले बिस्तर पर नहीं लेट पाऊँगा। आप यह क्या कह रही हैं? माँ ने कहा, "बेटा तू मेरे समस्त कर्ज अदा कर रहा था। आज केवल एक कर्ज अदा कर दे मैं सैकड़ों रात गीले बिस्तरों पर लेटी, तू क्या मेरे लिए एक रात के लिए गीले बिस्तर पर नहीं सो सकता।" रणजीत सिंह का सिर लज्जा से झुक गया। उसे अपनी भूल का एहसास हुआ।

"इस प्रेरक प्रसंग से यह शिक्षा मिलती है कि कोई भी पुत्र अपनी माँ का कर्ज अदा नहीं कर सकता। ❑

क्या आप जानते हैं ?

अंकित मिश्र
नवम (ख)

१. चन्द्रमा के बाद पृथ्वी का दूसरा साथी एक छोटा-सा एस्ट्राएड 'क्रडथने' है जो चन्द्रमा की तरह पृथ्वी के चक्कर लगाता है। यह क्रडथने बारी-बारी से पृथ्वी और सूर्य की परिक्रमा करता है।

२. वैज्ञानिकों ने एक ऐसी बैटरी बनाई है जो रसोई के बेकार खाद्य पदार्थों और सब्जियों के छिकले वगैरह से विद्युत उत्पन्न कर सकती है।

३. विटर्न पक्षी (द० अमेरिका) बाघ की तरह बोलता है।

४. दरियाई घोड़े के गुलाबी पसीना आता है।

५. 'टु आटेरा' जीव के तीन आँखें होती हैं।

६. सहदूल या उकाब पक्षी (रूस) हाथी को पंजे से दबाकर उड़ सकता था।

७. तारपीडो मछली करेंट उत्पन्न करती है। ❑

प्रेरक प्रसंग
स्वामी विवेकानन्द

अनुज ओमर
सप्तम (क)

'तुम्हारा हृदय भी उन्हें देखकर द्रवीभूत हो उठेगा।' पिता के ये वाक्य बालक नरेन्द्र के हृदय को स्पर्श कर गये। गली में साधु सन्तों को देखकर उनके मन में आदर व श्रद्धा का भाव उठता था। उन्हें जिन-जिन चीजों की आवश्यकता होती बालक नरेन्द्र तत्काल उन्हें दे देता था। साधु सन्तों ने घर पर आकर आवाज लगायी 'नारायण' कि वह दौड़ पड़ता था। बालक ने दौड़कर उसकी झोली में चावल आदि लाकर डाल दिये। साधु महोदय ने कहा बेटे। भगवान तुम्हारा भला करे। ठण्ड के दिन हैं। कोई वस्त्र दे सको तो अच्छा रहेगा। नरेन्द्र की कमर में रेशमी रुपट्टा बँधा था। उसने झट खोलकर साधु को दे दिया। 'बेटे तुम अवश्य बड़े होकर जगत कल्याण करोगे। घर में पुनः प्रवेश करने पर माँ ने पूछा वस्त्र कहाँ है? ''बाबाजी को दे दिया'। पुत्र का उत्तर सरल था। माँ सन्न रह गयी।

दूसरे दिन प्रातः काल ही नरेन्द्र को दूसरी मंजिल पर बन्द कर दिया गया। नित्य की भाँति साधु मण्डली आयी। 'भिक्षां देहि मातरम्' की आवाज लगायी। कमरे में नरेन्द्र व्याकुल हो उठा। खिड़की से झाँक कर देखा तो साधुओं के शरीर पर कोई उत्तरीय तक न था। उसने तुरंत कहा - 'स्वामी जी रुकिए' बालक विद्युत की गति से अन्दर गया तथा खूँटी पर टँगे पिताजी के वस्त्र एक-एक कर नीचे फेंक दिये। साधु अगणित आशीर्वाद देकर चले गये। पिताजी ने नरेन्द्र को डाँटकर पूछा, 'तुमने वे कपड़े क्यों दे डाले?' बालोचित सरलता में वह बोल उठा, 'पिताजी उन्हें भी ठण्ड लगती होगी उनके पास कपड़े न थे, इसलिए मैंने कपड़े दे दिये। आप ही ने तो कहा था कि हमें साधुओं की सहायता करनी चाहिए।' पिता का क्रोध भाग गया। उनकी आँखें सजल हो गयीं। बड़ी देर तक वे पुत्र के सिर पर हाथ फेरते रहे। बालक नरेन्द्र की सहृदयता और निखरने लगी थी।

विद्यार्थी जीवन

नैना
षष्ठ (ग)

विद्यार्थी जीवन, जीवन का वह स्वर्णिम काल है जब उमंगों, आकांक्षाओं से भरपूर मानवी व्यक्तित्व कुछ न कुछ ग्रहण करने को लालायित रहता है। नई कल्पनाएँ अँकुराती हैं, नई आशाएँ कोपलों की भाँति उगती हैं, नई उपलब्धियों की कलियाँ फूल बनकर खिलखिलाती हैं। दिवास्वप्नों में डूबे किन्तु शक्ति एवं संभावनाओं से भरपूर इस जीवन पर अभिभावकों का ही पूरे परिवार एवं समाज का ध्यान केन्द्रित रहता है। सीखने, कुछ जानने, कुछ बनने का सतत सार्थक प्रयास इसी समय में होता है। प्रत्येक छात्र को यह अनुभव करना चाहिए कि वह एक ऐसी अवधि से होकर गुजर रहा है, जो उसके भाग्य भविष्य निर्माण करने की निर्णायक भूमिका अदा करेगी। इन्हीं दिनों श्रेष्ठ विचार सद्भावनाओं एवं सत्प्रवृत्तियों का अभ्यास किया जाता रहे तो उसका प्रभाव जीवनभर बना रहता है और सुख-शान्ति की सम्भावनाएँ साकार होती हैं। इन्हीं दोनों मित्रों का आकर्षण अपनी चरमसीमा पर रहता है। अच्छे साथी मिले तो विकास एवं प्रसन्नता की वृद्धि में सहायता ही मिलती है। हर समझदार छात्र का कर्तव्य है कि मित्रता से पूर्व हजार बार सोचे। सच्चरित्र मित्रों, श्रेष्ठ पुस्तकों और सर्वशक्तिमान् परमात्मा का ही संग करें। सद्विचारों की नोटबुक बनायें जब भी कोई अच्छी बातें पढ़ें सुनें तो नोट करें। समय-समय पर दोहरायें आदर्श व्यक्तियों का, महापुरुषों का ध्यान व उनके चरित्र का चिन्तन-मनन करें।

स्वास्थ्य-संरक्षण के लिए यही समय सबसे अधिक उपयुक्त है। जो जीवनभर साथ दे।

अधिकतर अकुशल छात्र ही अनुशासनहीन हुआ करते हैं। पढ़ने लिखने में उनका मन नहीं लगता। अच्छे विद्यार्थी के लक्षणों से रहित होने से गुरुजनों के प्रति श्रद्धा नहीं होती। श्रेणी, श्रेय अथवा सराहना के योग्य नहीं होते। आगामी जीवन के उत्तर दायित्व से अनभिज्ञ रहते हैं, जीवन का कोई विशेष लक्ष्य नहीं होता। इसी प्रकार की मानसिक शून्यताओं से जन्मी हीनभावना को दबाने के लिए अकुशल एवं अयोग्य छात्र अनुशासनहीनता को शान समझने लगते हैं। जिन विद्यार्थियों के लक्षण पढ़ने के होते हैं, वे पढ़ाई के सिवाय बेकार की खुराफातों में नहीं पड़ते।

आत्मनिर्भरता, दूसरों की सहायता, धर्म का सदुपयोग, समय का सुनियोजन एवं सदुपयोग, मानसिक सन्तुलन, सत्साहित्य का स्वाध्याय, कठिन परिश्रम, दृढ़ संकल्प, स्वच्छता, सुव्यवस्था, सुसंगति सकारात्मक विचार, स्वस्थ जीवन, शालीनता, सज्जनता, हँसमुख, शिष्ट एवं विनम्र व्यवहार युवावस्था को अलंकृत करने वाले सद्गुण हैं। अर्थ-उपार्जन का अभ्यास नवयुवक यदि करने लगें तो उनके भीतर ऐसी विशेषताएँ उगती चली जाएँगी, जिनके द्वारा उनका भविष्य स्वर्णिम और शानदार बन जाएगा। ❑

प0 पू0 डा0 साहब का संक्षिप्त परिचय

अपूर्व त्रिपाठी
अष्टम (क)

जंजीरों में जकड़ी माता अपमानित जब की जाती थी।
माथे पर धर हाथ थी बैठी, हिन्दू जाति भी घबराती थी।।
संगठन का वीर प्रसूता भारत माँ ने, तब केशव को जन्म दिया था
मंत्र फूककर हिन्दू-हिन्दू को एक किया था।।
डा० केशव हम प्रण करते ऊँच-नीच का भेद भुलाकर।
सुखी करेंगे जन-जन को हम तेरा सुन्दर आशिष पाकर।।

नाम	:	परम पूज्य केशवराव बलिराम पन्त हेडगेवार
जन्म तिथि	:	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा १ अप्रैल १८८९ ई०
जन्म स्थान	:	नागपुर (महाराष्ट्र)
पिता जी	:	श्री बलिराम पन्त हेडगेवार
माता जी	:	श्रीमती रेवती
भाई	:	श्री महादेव व श्री सीताराम

जीवन की प्रमुख घटनाएँ

१८९७	:	यूनियन जैक के स्थान पर भगवाध्वज फहराने का प्रयास
१९०२	:	प्लेग की बीमारी से माता-पिता का देहान्त
१९०७	:	विजयादशमी के अवसर पर वन्देमातरम् का उद्घोष करके सीमोल्लंघन किया।
१९१३	:	बाढ़ पीड़ितों की सहायता की।
१९१६	:	राष्ट्रीय स्वयंसेवक मण्डल की स्थापना की।
१९२१	:	गाँधी जी के साथ असहयोग आन्दोलन में भाग लिया।
१९२२	:	जेल से मुक्त होने के बाद कांग्रेस में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संगठन की नींव डाली।
१९२३	:	मुसलमानों के द्वारा विरोध करने पर स्वयं ढोल बजाकर जुलूस का नेतृत्व किया।

१९२५ : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की।

१९३० : महात्मा गाँधी जी के साथ नमक सत्याग्रह में सक्रिय भूमिका निभाते हुए अहमदाबाद गये।

१९३४ : डा० साहब से गाँधी जी संघ शिक्षा वर्ग में बन्धुत्व भावना का उदाहरण देकर प्रभावित हुए।

१९४० : ९ जून को नागपुर संघ शिक्षा वर्ग में अन्तिम भाषण दिया।

१९४० : १५ जून को मेयाओ अस्पताल में चिकित्सा हेतु जाना, २९ जून को प्रातः ७ बजकर २७ मिनट पर यह पुण्यात्मा पंचतत्व में विलीन हो गया। ❑

प्रार्थना

मिली श्रीवास्तव
षष्ठ (ख)

प्रभु जी सुन लो मेरी विनती,
याद हो जाये सारी गिनती।

अक्षर सब हो जायें याद,
समय न मेरा हो बरबाद।

अच्छे काम करूँ मैं जग मैं,
यश फैले सारे ही नभ में।

मात-पिता गुरू का सम्मान,
सारे जग में हो गुणगान।

करूँ देश का ऊँचा नाम,
जीवन में मैं बनूँ महान। ❑

उतना ही बोलो, जितना लगे ठीक

अमित यादव
सप्तम (ख)

अपने दिल में ये बात लो लिख,
उतना बोलो जितना ठीक।

मुख से अमृत है बरसता,
इसी मुख से निकलता जहर।
मनमुटाव करती रिश्ते को,
ढाता अपना कहर।

निंदा न करो किसी की,
वाणी में मिश्री घोल।
अच्छे बनो सबकी नजर में,
अपना ही हो तेरा मोल।

छोटे-बड़े की कद्र करोगे,
प्रतिज्ञा ले लो पढ़ोगे पाठ।
जीवन गुजरेगा खुशियों में,
अलग रहेगा तब सब ठाठ। ❑

गंगा को प्रदूषण से बचाने में समाज की भूमिका

आयुष त्रिपाठी
अष्टम (क)

भागीरथ की कठोर तपस्या से शिव की जटाओं से उद्भूत हुई देवापगा युगों-युगों से मुनष्यों के कल्मष धोते-धोते आज स्वयं कलुषित हो गयी हैं। आज का मनुष्य धन एवं स्वार्थ की होड़ में ऐसा अन्धा हुआ है कि उसने अपने प्राकृतिक संसाधनों को समाप्त कर देने की सीमा तक दोहन किया है। विलासितापूर्ण जीवन शैली ने पर्यावरण में कार्बन डाई-आक्साइड की मात्रा को खतरनाक स्तर तक पहुँचा दिया है। जल जीव धारियों के लिए वायु के पश्चात् सर्वाधिक आवश्यक तत्त्व है।

जल प्रकृति की अनमोल एवं अद्भुत देन है जीव-धारियों के शरीर में ७० से ८० प्रतिशत तक जल ही पाया जाता है अतः जल को ''अमृत'' या ''जीवन'' भी कहा गया है पृथ्वी के तीन चौथाई भाग में जल होने के बावजूद भी इसका केवल ०.१ प्रतिशत भाग ही पीने के लिए उपलब्ध है। लेकिन चिन्ता का विषय है कि इस सीमित जल को भी मानव अपने तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति हेतु विभिन्न प्रकार से प्रदूषित कर रहा है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के आँकड़ों ने इस तथ्य को रखांकित किया है कि विश्व की ६ अरब की आबादी में हर छठवाँ व्यक्ति सुरक्षित पेयजल के बिना जीवन यापन कर रहा है। चिन्ता का विषय है कि पानी से फैलने वाले रोगों के कारण विश्व में हर आठवें सेकेण्ड में एक बच्चा मौत का शिकार हो जाता है।

जल प्रदूषण में मानव ने सर्वाधिक दुरुपयोग नदियों व समुद्रों का किया है। नदियों को कचरा घर बना दिया है। चिन्ता का विषय है कि उद्योगों से निकलकर विषैली धातुएँ जैसे पारा, आर्सेनिक, ताँबा नदियों को विषाक्त कर रहा है।

गंगा जल के प्रदूषण का जनक स्वयं मानव है जो अपनी विभिन्न क्रिया कलापों से जल पदूषण की समस्या को गंभीर बना रहा है। गंगा नदी में विसर्जित मलमूत्र, मृतक शरीर, कूड़ा करकट व गंदा पानी गंगा के जल को प्रदूषित कर रहा है। जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के साथ ही यह समस्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। सांस्कृतिक व धार्मिक सम्मेलनों, मेलों व उत्सवों के दौरान भी गंगा जल प्रदूषित होता है।

चिन्ता का विषय है कि गंगा जैसी पवित्र नदी भी उसके किनारे बसे 118 शहरों की गंदगी के कारण दूषित हो गयी है। गंगा नदी में प्लास्टिक के बहाये जाने से हानिकारक बैक्टीरियों की उत्पत्ति होती है जो जल को दूषित कर देते हैं। भारत में इन प्लास्टिक थैलियों के निस्तारण की उपयुक्त व्यवस्था का अभाव है जिसका प्राविधान करना आवश्यक है।

गंगा नदी में सर्वाधिक प्रदूषण कानपुर में है कानपुर में 10 किमी पहले गंगा का जल गुणात्मक

दृष्टि से सन्तोषप्रद पाया गया है जबकि आगे काफी प्रदूषित है। उसमें स्नान करने पर चर्मरोग हो जाने का खतरा रहता है। मछलियाँ जल को शुद्ध करने का काम करती हैं लेकिन गंगा जल के प्रदूषित होने के कारण मछलियाँ भी मरने लगी हैं और इसकी जिम्मेदारी हमारी लचर शासन व्यवस्था है। यह कौन नहीं जानता कि जाजमऊ के चमड़ों के कारखाने अपना विषैला गंदा पानी गंगा नदी में बहा रहे हैं। लेकिन धन बल के प्रभाव के कारण इन चमड़ा कारखानों को वहाँ से स्थानान्तरित नहीं किया गया।

गंगा नदी में प्रदूषण की रोक थाम के लिए जनसामान्य की सहभागिता व योगदान को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। समाज को जल प्रदूषण से उत्पन्न बीमारियों व खतरों से अवगत कराया जाना चाहिए ताकि प्रत्येक नागरिक इस समस्या के समाधान में अपना सक्रिय योगदान दे सके। मृतशरीर का अंतिम संस्कार, घरेलू गंदगी व मल को जल में प्रवाहित करने से रोकने के लिए जन-चेतना जाग्रत करने के साथ ही कानूनी प्राविधान किये जाने आवश्यक हैं। प्रदूषित जल के उपचार हेतु सस्ती व सुलभ तकनीक व विधियों के विकास को प्राथमिकता दी जानी चाहिए ताकि जन सामान्य इस तकनीक का उपयोग कर सके।

गंगा नदी हमारी आस्था, श्रद्धा एवं भक्ति का प्रतीक है। इसको प्रदूषण से मुक्ति आज की एक मुख्य चुनौती है। इस हेतु देश की जनता को स्वयं पहल करनी होगी। ❑

पहेलियाँ

सौरभ कुमार केसरवानी
षष्ठ (का)

1. एक गाड़ी में दो बाप और दो बेटे सैर कर रहे हैं। गाड़ी में कुल यात्री बताओ। - तीन
2. एक लड़का जनम का हीना। जिन देखा तिन शू-शू कीना।। - पीकदान
3. छोटा-सा धागा, सारी बात ले भागा - टेलीफोन
4. पत्थर की नाव पर बैठा सवार। चलती नहीं नाव चलता सवार ।। - सिलबट्टा
5. पक्षी है उड़ता नहीं, दौड़े तेज अपार। जो पहले बतलायेगा; वह पायेगा प्यार।। - शुतुरमुर्ग
6. किसने भू से जन्म लिया। जंगल में चिरवास किया। - सीता जी
7. कोयले से जो जन्मता, क्या है उसका नाम।
   काँच काटने के लिए, आता है जो काम।। - हीरा

❑

समय की महत्ता

आदित्य धनराज
एकादश (क)

समय बहुत कीमती है। बीता हुआ समय कभी भी किसी भी कीमत पर वापस नहीं आता। इसलिये समय की महत्ता को समझकर उसका पूर्ण उपयोग करो। जो लोग समय की महत्ता को समझते हैं, वे प्रत्येक कार्य को समयानुसार समय नियोजन करके करते हैं और इसी कारण उन्नति के शिखर पर चढ़ते हैं।

'मित्रो! शुभ काम का आरम्भ अभी से कीजिए, अभी और इसी समय से।' यह एक सफलतम व्यक्ति का आदर्श वाक्य है। यह आदर्श वाक्य अनेक युवकों का जीवन विनाश से बचा सकता है। काम को भविष्य के लिए टालने से बढ़कर भ्रांतिपूर्ण एवं घातक विचार अन्य कोई है ही नहीं।

दूसरी ओर कुछ लोगों की टालने की आदत होती है। वे वर्तमान समय को शुभ नहीं मानते और टाल-मटोल करते हुये किसी अज्ञात शुभ मुहूर्त के चक्कर में वक्त बरबाद करते रहते हैं। इस प्रकार वे न केवल अपने जीवन को धोखा दे रहे हैं वरन् अपने जीवन के कीमती समय को भी बरबाद कर रहे हैं।

इस दोष को दूर करने का एक ही सम्भव उपाय है कि आपके सामने जो काम उपस्थित है, उसे अभी आरम्भ कीजिए। आप समझिए इस सत्य को कि बीतने वाले एक-एक क्षण के साथ आपका कार्य और भी कठिनतर होता जा रहा है, कठिन से कठिनतर होता जा रहा है।

आज के काम को कल पर मत टालो। इस प्रकार की आदत एक अपराध है ज्यों ही काम का विचार आए, उत्तेजना आए, त्यों ही काम शुरू कर दें और अपनी पूरी सामर्थ्य से उसमें जुट जाएँ।

" जो तुरन्त काम करता है, वस्तुतः वही विजयी होता है। जो विजयी हुआ और, उससे पूछकर देखिए, वह अपनी सफलता का रहस्य यही बतलाएगा कि वह आज का काम आज ही कर डालता है। तुरन्त काम करने की आदत के कारण आपकी शक्तियाँ और योग्यताएँ संगठित भी रहती हैं।

डॉक्टर चामर्स का कहना है कि मानवीय सम्बन्धों में महान सक्रिय-सफलता के लिए दो गुण बहुत ही आवश्यक हैं - कार्य शक्ति तथा तुरन्त काम करने की आदत।

जो पुरुष अथवा स्त्री समय के मूल्य से परिचित एवं प्रभावित है, जिसे अपना एक-एक क्षण बहुमूल्य प्रतीत होता है और जिसे ये आकांक्षा है कि वह अपने एक-एक मिनट को अपने उद्देश्य की

सफलता में लगाऐं, उसके प्रत्येक काम पर उसके अपने व्यक्तित्व की गहरी छाप पड़ जाती है।

नेपोलियन ने एक बार अपने कुछ ऊँचे सेनाधिकारियों को डिनर पर आमन्त्रित किया, पर वे निश्चित समय पर न पहुँचे। नेपोलियन ने खाना शुरू कर दिया। भोजन समाप्त कर उठने ही वाला था कि सेनाधिकारीआ पहुँचे।

नेपोलियन ने कहा; सज्जनो! भोजन का समय समाप्त हुआ। अब हम एक दम काम की बातों पर विचार-विमर्श आरम्भ करेंगे।

आप किसी से भेंट का समय निश्चित कर ठीक समय पर मिलने नहीं जाते तो आप अपना जीवन बिगाड़ लेते हैं। आपका अपना जीवन तो चलो आपका 'अपना' है, बनाएँ या बिगाड़ें, पर आपको दूसरों के समय को नष्ट करने का क्या अधिकार है? अपनी भूल से, हम उनके लिए न जाने कितनी असुविधाएँ और कठिनाइयाँ पैदा कर देते हैं

किसी ने ठीक ही कहा है -

''यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के समय की रक्षा नहीं करता है, तो वह उसके धन की क्या रक्षा करेगा? किसी मनुष्य का एक घंटा नष्ट करना और उसके कुछ रुपये नष्ट करने में भला क्या अन्तर है।''

जो व्यक्ति एक-एक मिनट समय का पाबन्द होता है, उसके पास प्रत्येक काम के लिए औरों से दुगुना समय होता है, अतः उसका काम औरों से अच्छा होता है।

समय की पाबंदी रखने वाले को जहाँ सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है, वहीं उसका लोग विश्वास भी करते हैं। फोर्ड मीटर कम्पनी के मालिक हेनरी फोर्ड ने अपना व्यवसाय मात्र पाँच डॉलर से शुरू किया था। यह रकम भी उसने अपने मित्र से उधार ली थी। उसने दिन रात मेहनत की और अपने वायदे के अनुसार समय पर वापस कर दी। उसने जब भी अपना काम बढ़ाया उसे धन की आवश्यकता हुई। उसे यह धन हर कोई देने के लिए तैयार हो जाता था। क्योंकि सबको पता था हेनरी फोर्ड समय का पाबंद व्यक्ति है जिस समय धन वापसी का वायदा करेगा, वह उस समय तक यह धन अवश्य लौटा देगा।

विचार कीजिए यदि फोर्ड समय का पाबंद और वायदे का पक्का न होता तो क्या कभी इस उन्नति के शिखर पर चढ़ पाता? कदापि नहीं। हेनरी फोर्ड ने स्वयं अपने संस्मरण में लिखा है, ''आदमी लोक व्यवहार में तभी सफल हो सकता है जब वह समय की पाबंदी करता हो और अपने

❑

बापू को श्रद्धांजलि

रवि प्रताप सिंह
नवम (क)

राजघाट में छिपी हुई है एक राख की ढेरी।
आजादी के महासमर की जिसने फूँकी रणभेरी।।

जिसकी एक पुकार पे जुटते श्रमिक किसान सभी जन।
जिसका स्वागत करने की खातिर झुका तख्त-ए-लंदन।।

सत्य अहिंसा असहयोग का मंत्र दिया था जिसने।
शांति मार्ग से आंदोलन का रथ हाँका था जिसने।।

नोआखली में खून की होली बंद कराई जिसने।
हिन्दू मुस्लिम एकता का पाठ पढ़ाया जिसने ।।

सभी धर्म जिसको प्यारे भारत की आँखों के तारे।
न केवल भारत के ही, पर थे वे अखिल विश्व के प्यारे।।

जिसके चरखे की खटखट से हुई मशीनें ठण्डी।
वस्त्र विदेशी राख हुए लहराई तिरंगी झण्डी।।

दांडी तक पैदल जा करके नमक बनाया जिसने।
जो अछूत थे उनको भी सम्मान दिलाया जिसने।।

आओ उनका नमन करें हम उनको शीश झुकाएँ।
उनके आदर्शों पर चल कर देश महान बनाएँ।।

1947 के भीषण पर्व में गुरुजी का अद्वितीय नेतृत्व

पवन प्रकाश पाण्डेय
द्वादश (ख)

3 जून 1947 को देश विभाजन की घोषणा के पश्चात् एकाएक देश की परिस्थिति का चित्र ही बदल गया। गुरु जी ने स्वयंसेवकों को यह आदेश दिया कि जो भू-भाग पाकिस्तान बनने वाला है, वहाँ के हिन्दुओं को यथाशीघ्र सुरक्षित ढंग से भारत भेज दिया जाए और जब तक आखिरी हिन्दू वहाँ से भारत में न आ जाए तब तक हिन्दुओं की रक्षा के लिए वे स्वयं वहीं डटकर खड़े रहें। उन भीषण दिनों में स्वयंसेवकों के लिए अनेकानेक हृदय विदारक रक्तरंजित प्रसंग उपस्थित हुए। वह कार्य करते समय उनका अतुलनीय पराक्रम, त्याग और बलिदान स्वर्णाक्षरों में लिखने लायक है।

उन दिनों का स्वयं श्री गुरु जी का उदाहरण भी बड़ा स्फूर्तिदायी रहा। श्री गुरु जी भी उन आतंकित प्रदेशों में प्रवाह करते रहे। अगस्त 1947 के पहले सप्ताह में सिंध का प्रवास करके जब उन्होंने पंजाब में प्रवेश किया, उस समय पूरा पंजाब भय और आतंक से घिरा हुआ था फिर भी जगह-जगह पर आपात ग्रस्त हिन्दू बन्धुओं से मिलकर उनका मनोबल बढ़ाने की उत्कंठा से श्री गुरुजी स्वयं के प्राण संकट में डाल कर भी विभिन्न स्थानों पर पहुँचते रहे।

श्री गुरु जी ने देश विभाजन को अन्तिम सत्य नहीं माना मातृभूमि की खण्डित प्रतिमा पुनः अखण्ड बनाने का स्वप्न प्रत्येक देश भक्त के हृदय में पल्लवित होता रहे, यही उनकी तीव्र आकांक्षा थी। ❑

नव संवत्सर

अभय शुक्ल
सप्तम (क)

जब दी विक्रम ने मात शकों को, शुरू हुआ नव संवत्सर था।
भरतभूमि इतिहास में बड़ा ही मंगलमय ये अवसर।।
इस नव संवत्सर के ही दिन, बहमा ने सृष्टि का सृजन किया।
भारत माँ की इस पुण्य भूमि को, सुर-देवों ने नमन किया।।
फिर बना इतिहास धरा का अतुलनीय और सदा अमर।
जब दी विक्रम ने.....।।**1**।।
जब लौटे राम अयोध्या तो उनका विधिवत् राज्याभिषेक हुआ।
नव संवत्सर के दिन ही, सारा अवध खुशी में एक हुआ।।
फिर प्रसन्नता से झूम उठा, हर गाँव-गाँव हर नगर-नगर जब दी विक्रम ने.....।।**2**।। ❑

दयालु विद्यार्थी

सुकान्त द्विवेदी
सप्तम (ख)

एक स्कूल में दो भले विद्यार्थी पढ़ते थे। प्रतिवर्ष उनका पहला व दूसरा नम्बर आता था पहले विद्यार्थी की माँ बीमार पड़ी व मर गयी इससे वह महीने दो महीने स्कूल नहीं जा सका। लोगों ने सोचा कि इस बार परीक्षा में दूसरे विद्यार्थी का नम्बर आयेगा, पर जब परीक्षा फल निकला तब पता लगा कि जो दो महीने स्कूल नहीं गया था इस बार भी उसका पहला नम्बर आया। इससे शिक्षक को आश्चर्य हुआ उन्होंने दोनों लड़कों की उत्तर पुस्तिका देखी तो पता चला कि दूसरे विद्यार्थी ने बहुत से प्रश्नों का उत्तर नहीं लिखा है। वे प्रश्न इतने सरल थे कि उसका उत्तर न आता हो ऐसी बात नहीं थी, इसलिये शिक्षक ने उस विद्यार्थी से एकान्त में पूछा तो उसने बतलाया कि वह लड़का मेरी अपेक्षा अधिक बुद्धिमान है। उसकी माँ मर गयी उससे उसकी पढ़ाई में विघ्न पड़ा और मुझको पहला नम्बर मिलने की स्थिति हो गयी। उससे मुझे अच्छा न लगा। जान बूझकर मैंने अधूरा उत्तर लिखा मेरी तो माँ है। पर उस बेचारे की माँ नहीं है। आप कृपया इस बात को अपने तक ही रखें।

शिक्षक को उस विद्यार्थी की दया और उदारता को देखकर बहुत ही सन्तोष हुआ और उसने कहा- सबसे बड़ी परीक्षा तो महत्त्व की परीक्षा है। उसमें तुम्हारा पहला नम्बर आया है। इससे हमें यह प्रेरणा मिलती है हमें दयालु बनना चाहिये।

साहस

अभय शुक्ल
सप्तम (क)

साहस से आती है जीवन में बहार,
साहस के हैं कई प्रकार।।
साहस के बढ़ता है मन का सुख,
इससे न आता जीवन में कभी दुःख।।
अगर साहस का करना है काम,
कर्तव्यनिष्ठा तथा धैर्य से करना है काम
साहसी व्यक्ति होता है प्रशंसनीय
यह शक्ति होती है ईश्वरीय।।
साहस दिखाना कोई खेल नहीं,
इसमें डर तथा घमंड का कोई मेल नहीं।।
साहस दिखाने से बढ़ती है प्रशंसा,
इसमें न होती है दुःख की मंशा।।

सत्संगति का महत्त्व

अभिनव तिवारी
सप्तम (ख)

एक बार गोस्वामी तुलसीदास जी जाड़े की रात में कहीं से लौट रहे थे। अंधेरा हो गया था। रास्ते में चोरों का एक दल मिला। चोरों ने पूछा-तुम कौन? तुलसीदास जी ने कहा- जो तुम हो। अकेले हो? चोरों ने पूछा गोस्वामी जी ने कहा हाँ भाई अकेला ही तो हूँ। चोरों ने उन्हें अपनी तरह चोर जानकर कहा-लगता है पेशे में नये हो, चाहो तो हमारे साथ चलो तुलसीदास उनके साथ चल पड़े एक गाँव में चोर चोरी के लिये घर में घुसे। तुलसीदास जी का काम पहरा देना था। चोरों ने उनसे कहा कि यदि कोई खतरा हो तो शंख बजा देना। तुलसीदास जी ने शंख बजाया तो चोर डरकर भाग निकले। इस प्रकार दूसरे स्थान पर भी ऐसा हुआ। तीसरे स्थान पर जब उन्होंने शंख बजाया तो एक चोर ने शंख बजाते देख लिया। चोरों ने उनसे पूछा कि कोई दिखाई भी नहीं पड़ रहा है। फिर भी तुमने बिना महत्त्व के शंख बजा दिया। तुलसीदास जी ने कहा- जी हाँ मैंने शंख बजाया था। आप ने ही कहा था कि यदि कोई खतरा हो तो शंख बजा देना। मैंने देखा कि भगवान रामचन्द्र आप सब को देख रहे हैं। वे आपको इस बुरे काम के लिए अवश्य दण्ड देंगे। इसलिये शंख मैंने बजा दिया। गोस्वामी जी की इन बातों को सुनकर चोरों की आँखें खुल गईं। उनका हृदय परिवर्तन हो गया और उस दिन से ही उन्होंने चोरी जैसा घृणित कार्य बन्द कर दिया एवं सदैव के लिये अपना चोरी का कार्य त्याग दिया। इस प्रकार उन्होंने अच्छा जीवन व्यतीत करने का निश्चय किया।

शिक्षा- संगति का असर अवश्य होता है। हम जैसी संगति में रहेंगे वैसे ही बनेंगे। रामचरित मानस में तुलसीदास जी ने कहा है कि -

" सठ सुधरहिं सत्संगति पाई ।
पारस परस कुधातु सुहाई।"

❑

राष्ट्र का स्वरूप

राष्ट्र का अस्तित्व उनके जीवन का ध्येयभूत भाव है। जब एक मानव समुदाय के समक्ष एक मिशन, विचार या आदर्श रहता है और वह समुदाय किसी भूमि विशेष को मातृभाव से देखता है तो वह राष्ट्र कहलाता है। इनमें से एक का भी अभाव रहा तो राष्ट्र नहीं बनेगा।

-पं० दीनदयाल उपाध्याय

विद्यालय का विदाई समारोह

वैभववरीश सिंह राठौर
दशम (क)

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यालय में विदाई समारोह मनाया गया। इसकी पूर्व निर्धारित तिथि 22 से 24 कर दी गयी। प्रत्येक छात्र द्वारा विदाई समारोह को अन्य कार्यक्रमों की दृष्टि से अलग भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से देखा जा रहा था।

विद्यालय में नियम अनुसार कक्षा नवम, दशम, एकादश, तथा द्वादश कक्षा के छात्रों ने विदाई समारोह में भाग लिया कार्यक्रम का प्रारम्भ श्रीमती रेखा जी द्वारा किया गया । ईशवन्दना से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। तरुण भारती के अध्यक्ष द्वारा इस कार्यक्रम का संचालन किया गया। प्रथम छात्र प्रस्तुति के रूप में भैया प्रणव आये व उन्होंने अपनी विद्यालय के प्रथम दिन से जुड़ी हुई बातें बतायीं व्यक्तिगत रूप से मेरे अनुसार छात्रों द्वारा उनके वक्तव्य में यह देखा जा रहा था कि किस शिक्षक का नाम उन्होंने लिया उनके द्वारा प्रस्तुत किया गया भाषण एक अभिव्यक्ति नहीं अपितु मनः उद्गार ही थे।

तत्पश्चात् विद्यालय के प्रतिभा सम्पन्न, कवि छात्र देवेश बाजपेयी उन्होंने अपनी प्रस्तुति का प्रारम्भ हास्यपूर्ण ढंग से किया इनके द्वारा श्री सुभाष जी को अपूर्ण योजनाओं और आचार्य श्री महेश जी को अत्यन्त शिष्ट परन्तु सटीक उपमा देते हुए कि - पेड़ बूढ़ा तो हो गया परन्तु दिखता अभी भी नवीन है। के साथ ही पूरे छात्र वर्ग अपितु शिक्षक वर्ग में भी उत्साह की लहर दौड़ उठी अन्त में उन्होंने अपने गम्भीर व्यक्तित्व एवं सभी आचार्यों के प्रति अत्यधिक सम्मान को व्यक्त करते हुए अपनी प्रस्तुति का अन्त एक अत्यन्त आकर्षक कविता से किया। इनके द्वारा उन भावात्मक क्षणों को हास्य और पुनः भावात्मक क्षणों में परिणित किया गया।

तत्पश्चात् छात्र प्रस्तुतियों के अगले क्रम में वक्ता के रूप में भैया श्वेतांक आये। उनके द्वारा भैया देवेश द्वारा कहे गये एक वैज्ञानिक वाक्य में संशोधन करते हुए कहा गया कि' **"भैया देवेश द्वारा यह सही कहा गया था कि प्रारम्भ में खड़े होने से ऐसा लगता था कि 440 वोल्ट का करेण्ट किसी ने लगा दिया हो, परन्तु शायद वे इसे बताना भूल गये कि आज कल हम जहाँ जाते है 440 वोल्ट का करेण्ट देकर आते हैं "**

उनके इस वाक्य में प्रबल आत्म सम्मान व विद्यालय का गौरव स्पष्ट रूप से दिख रहा था उनके इस वाक्य में आचार्य श्री सुभाष जी द्वारा आचार्य वर्ग से विशेष प्रोत्साहन दिया गया उन्होंने ने भी अप्रत्यक्ष रूप से एक कुशलवक्ता के रूप मे अपनी प्रस्तुति का अन्त कुछ इन शब्दों में किया:-

जिस दिन सपनों के मोलभाव पर उतरूँगा।
जिस दिन संघर्षों पर डाली चढ़ जाएगी।
जिस दिन लाचारी मुझ पर तरस दिखाएगी
उस दिन जीवन से मौत कहीं बढ़ जायेगी।

तत्पश्चात् छात्र प्रस्तुतियों की अन्तिम कड़ी के रूप में भैया प्रखर द्वारा पूर्ण से भावात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत की गयी। उनके द्वारा अपने जीवन के कठिनतम क्षणों का विवेचन एवं प्रत्येक छात्र के सम्मुख एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया जिसने प्रत्येक छात्र एवं शिक्षक के निर्मल मन में अन्तःकरण तक प्रहार किया। उनके द्वारा उनकी प्रस्तुति का अन्त विद्यालय का उद्देश्य वाक्य बोलकर किया गया। उस क्षण पर सम्पूर्ण मारुति भवन में एक अजीब सी अनकही सोच से परे दुःख और सुख की मिश्रित शान्ति आ गयी। इस प्रकार छात्र प्रस्तुतियों का अन्त हुआ।

तत्पश्चात् आचार्य वर्ग के वरिष्ठ आचार्य श्री गणेश जी द्वारा छात्रों का मार्ग दर्शन किया गया। इसके बाद विद्यालय की प्रबन्ध समिति के सदस्य श्री योगेन्द्र भार्गव जी के द्वारा छात्रों विशेषतः द्वादश को युग भारती और उसकी आगे की योजनाओं के बारे में छात्रों को जीवन में सफल रहने के उनके कुछ अनुभव बताये गये जिसमें उन्होंने Alrility, attitude hardwork, time, management आदि बिन्दुओं पर विचार प्रस्तुत किए। इसके बाद विद्यालय के सेवानिवृत्त आचार्य श्री राजेश जी द्वारा तत्कालीन समय की माँग को देखते हुए छात्रों को परीक्षा में अच्छे अंक लाने के प्रभावशाली टिप्स दिया जाना सर्वोत्तम था।

कार्यक्रम के अन्त में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री प्रकाश जी द्वारा विद्यार्थियों को एक पिता के रूप में अगले कुछ दिनों बेजोड़ श्रम तथा स्वास्थ्य ठीक रखने की प्रेरणा दी गयी इसके बाद वन्देमातरम् हुआ, साथ ही कार्यक्रम समाप्त हो गया।

कार्यक्रम की समाप्ति पर प्रसाद वितरण तथा Photo Session प्रारम्भ हुआ। सभी छात्र अपने अन्दर कुछ सुखद, कुछ दुःखद तथा कुछ प्रेरणादायी बातों को लेकर अपने घर गये।

'याद रखें'

"Seved/Ten years from today
it won't matter
what shoes you wore
our jeans you brought
what will matter
is what you achieved
and where you stood?"

हमारा प्यारा भारत वर्ष

सत्येन्द्र सिंह यादव
सप्तम (ख)

सत्त्व तत्त्व से युक्त सर्वदा "भा में रत" भारतवासी हैं।
वसुधा ही परिवार हमारा इस चिन्तन के विश्वासी हैं।
हमने अपने शोणित से ज्योतित की अपनी वह ज्योति प्रखर,
जिससे दीपित दुनिया भर की मानवता का इतिहास अमर।
यह विश्व सदा से जलता आया है प्रपंच की ज्वाला में
हम इस ज्वाला को सदा शमित करते अपनी आहुति देकर
औरों के हित अमरित झरते सुख पा जाते विष पीकर।
सत्त्व तत्त्व से युक्त सर्वदा "भा में रत" भारतवासी हैं।
यह भासमान भारत ही है अब विश्व का प्रखर सूर्य
है संघर्षण का और उत्ताल उदधि का प्रबल सूर्य।
इसके "रव" से इसके गर्जन से काँपी सदैव से दानवता,
पंकिल गर्तों से उठ आयी सर्वोच्च शिखर पर मानवता।
फिर से समग्र मानवता अब प्रारम्भ करें भारत पूजन,
भारत ही है विश्वास सुखद भारत ही है पौरुष गर्जन ।

'राष्ट्र के विधायक तत्त्व'

राष्ट्र के लिए चार बातों की आवश्यकता होती है। प्रथम भूमि और जन जिसे हम देश कहते हैं। दूसरी सबकी इच्छाशक्ति यानि सामूहिक जीवन का संकल्प। तीसरी एक व्यवस्था जिसे नियम या संविधान कह सकते हैं और सबसे अच्छा शब्द जिसके लिए हमारे यहाँ प्रयुक्त हुआ है वह है 'धर्म'। और चौथा है जीवन - आदर्श। इन चारों का समुच्चय यानि ऐसी समष्टि को राष्ट्र कहा जाता है।

- पं० दीनदयाल उपाध्याय

परीक्षा का भूत

रचित मिश्र
अष्टम (क)

हे प्रभो! दास की इतनी विनय सुन लीजिए,
मार ठोकर नाव मेरी पार तो कर दीजिए।
मैं नहीं डरता प्रभो! आँधी मौत या तूफानों से,
काँपती है रूह मेरी सर्वदा इम्तिहानों से।
हिन्दी के हर शब्द के हिस्से सताते हैं मुझे
स्वप्न में भी 'सूर' और 'तुलसी' दिख जाते मुझे।
एलजेबरा व गठित के सिवा कुछ भाता नहीं,
क्या करें, लेकिन गुणा अभी आता नहीं।
रामः रामौ-राममृ हाय प्यारी संस्कृतमृ,
अब मुझे लगता, यह पीछा न छोड़ेगी मरतेदम।
नाश हो इतिहास का सात समुन्दर बह गये,
मर गये वो लोग रोने के लिये हम रह गये।
शाहजहाँ अकबर, हुमायूँ, और बाबर शाप हैं
कौन बेटा, यह न जाने, कौन किसके बाप हैं।
भूगोल में एक प्रश्न है कि गोल कैसे है धरा,
और पल में लिख लिया मैंने भी उत्तर खरा।
गोल है पूड़ी, कचौड़ी गोल गप्पा गोल है,
गोल रसगुल्ला, जलेवी, मुँह हमारा गोल है।
झूम उठे सिर मेरे इस अनोखे ज्ञान से,
पुस्तिका में लिख दिया जल्दी बड़ी ही शान से।
ठीक है बेटा हमारी लेखनी भी गोल है,
गोल है दाबात मेरी नम्बर तुम्हारा भी गोल है।❑

भाता है मोबाइल

कुन्दन कुमार
सप्तम (ख)

साथ निभाता है मोबाइल,
मुझको भाता है मोबाइल।

छोटा-सा आकार सलौना,
फोन बना यह एक खिलौना।
रखो जेब के भीतर उसको,
दो संदेशा चाहो जिसको।।

काम बनता है मोबाइल,
मुझको भाता है मोबाइल।

बैठे रेल में सुख पाते हो,
कहीं तुम बस से जाते हो।
ट्रिन-ट्रिन जब-तब है बज उठता,
उत्सुकता का पर्दा खुलता।
हाल सुनाता है मोबाइल
मुझको भाता है मोबाइल।

नई सदी की खोज अनोखी,
रंगत आई इससे चोखी।
मुन्नी पापा से बतियाए।
सुविधा की पूँजी पा जाए।

श्रेष्ठ कहाता है मोबाइल,
मुझको भाता है मोबाइल।

❑

'वृक्ष लगायें वृक्ष बचायें'

प्रियांशु कुशवाह
सप्तम (क)

वृक्ष धरा के हैं भूषण,
करते हैं ये दूर प्रदूषण!!
करते,नव जीवन संचार,
वन्य जीव का ये आहार!!
इन वृक्षों में पलने वाले,
जीवों का अनुपम संसार!!
मानव जीवन के ये रक्षक,
करते हैं सबका उपकार!!
वृक्ष लगायें वृक्ष बचायें,
वृक्ष हमारे हैं जीवन!
पोषक तत्त्वों की रक्षा,
और प्राण वायु का उत्सर्जन!!
प्रदूषण की समस्या का
ये वृक्ष ही हैं एकमात्र निदान!!
रोगों का ये उपचार करते,
देते हमको जीवनदान!!
यह तनिक जो खुशहाली है,
वह भी न रहने पायेगी।
यह स्वर्णमयी वसुन्धरा,
मरघट बन जायेगी!!
यदि वृक्षारोपण की प्रक्रिया,
आरम्भ नहीं की जायेगी!!
वृक्षारोपण का अभियान,
है पुनीत अरु कर्म महान
तन-मन-धन से इन्हें सँवारें
पर्यावरण संरक्षण पर दे ध्यान!! ❑

हँसी घर

अमित यादव
सप्तम (ख)

बच्चों के विज्ञान भवन ने,
सभी जनों को खूब लुभाया।
उत्तल अवतल दर्पण रखकर,
हँसने वाला कक्ष बनाया।

मम्मी पापा भैया दीदी,
सभी देखने इसको आए।
खड़े हुए दर्पण के आगे,
और अनोखे पोज बनाए।

दीदी पतली हो गयी है लम्बी,
जैसे बिजली वाला पोल।
और बेचारे मोटे पापा,
बने बजाने वाला ढोल।

हम सबने देखा दर्पण में,
अपने अपने तन का हाल।
हँसते-हँसते लोटपोट सब,
क्या दर्पण ने किया कमाल। ❑

'क्रिकेट का जुनून'

उत्कृष्ट द्विवेदी
सप्तम (क)

चूहे राजा क्रिकेट टीम के चुने गए कप्तान,
अपनी बल्लेबाजी का था उनको बड़ा गुमान।
पैड बाँध, दस्ताने पहने, हेलमेट एक लगाए,
टॉस जीतकर खुद ही पहले बैटिंग करने आए।

उधर दूसरी क्रिकेट टीम का बन्दर था कप्तान,
उसे क्रिकेट के दाँव पेंच की थी पूरी पहचान।

पहला ही ओवर उसने बिल्ली से फिंकवाया,
उसको आउट करने का एक नया ढंग अपनाया

चली गेंद लेकर जब बिल्ली काँपे डर के मारे,
क्रीज छोड़कर पीछे हट गए धीरे से बेचारे।

लगी गेंद स्टंप उड़ गया मचा जोर से हल्ला,
आउट होकर चूहे राजा भागे लेकर बल्ला ❑

सूर्य (Sun)

ऋषभ सिंह राजावत
सप्तम (ख)

आलोकित करता आकाश
सूर्य हमें देता है ऊर्जा,
सूर्य हमें देता है प्रकाश
सूर्य हमें देता है ऊष्मा।
सब कुछ वह देता है हमको
हमसे कुछ नहीं लेता है,
इसलिए सब पूजा करते
कहते सूर्य देवता है।।
सूर्य से पेड़ बड़े होते हैं
पेड़ों से हम जीवित रहते ।
सूर्य देव जल शोषित करके।
धरती पर वर्षा करवाते ।। ❑

उपहार और पुस्तक

शौर्य प्रताप सिंह
सप्तम (ख)

ज्ञान भरा अम्बार है पुस्तक
विश्व सोच का सार है पुस्तक
जीवन के हर अंधियारे में,
नई ज्योति की धार है पुस्तक।

किस्से, कहानी और कविताएँ,
ज्यों दादी का प्यार है पुस्तक।
महक उठे जिससे फुलवारी,
मीठी वह बहार है पुस्तक।

नीले-पीले जिल्दों में तो,
लगती राजकुमारी पुस्तक।
जैसी चाहो वैसी हाजिर,
कभी नहीं लाचार है पुस्तक

देश-देश की सैर कराती,
मनमोहन संसार है पुस्तक।
ले लो, ले लो चुन्नू मुन्नू,
जीवन का उपहार है पुस्तक ❑

देश भक्ति गीत

अर्चित पाण्डेय
षष्ठ (ख)

संस्कृति सबकी एक चिरन्तन खून रंगों में हिन्दू है।
विराट सागर समाज अपना हम सब इसके बिन्दू हैं।।

राम कृष्ण गौतम की धरती महावीर का ज्ञान यहाँ।
वाणी खण्डन-मण्डन करती, शंकर चारों धाम यहाँ।
जितने धर्म राहें उतनी, चिंतन का चैतन्य भरा।
पंथ खालसा गुरु पुत्रों की, बलिदानी यह पुण्य धरा।।
अक्षयवट अगणित शाखाएँ, जड़ में जीवन हिन्दू है।
विराट सागर.....।।

कोटि हृदय है भाव एक है, इसी भूमि पर जन्म लिए।
मातृभूमि यह पितृ भूमि यह, पुण्य भूमि पर जन्म लिए।।
हारे-जीते संघर्षों में साथ लड़े बलिदान हुए।
काल चक्र की मजबूरी में रिश्ते नाते बिखर गये।।
एक बड़ा परिवार हमारा पुरखे सबके हिन्दू हैं।
विराट सागर.....।।

भारतीय युवक के सपने

अभिनव पटेल
नवम (ग)

हे भारतीय युवक,
ज्ञानी विज्ञानी,
मानवता के प्रेमी,
संकीर्ण तुच्छ लक्ष्य,
की लालसा पाप है,।
मेरे सपने बड़े,
मैं मेहनत करूँगा,
जिससे मेरा देश महान् हो,
धनवान् हो गुणवान् हो,
यह प्रेरणा का भाव अमूल्य है
कहीं भी धरती पर,
उससे ऊपर या नीचे,
दीप जलाए रखूँगा
जिससे मेरा देश महान हो।

मिट्टी की मूरत है इंसा.....

मु० निहाल अहमद
सप्तम (ख)

मिट्टी की मूरत है इंसा, मिट्टी में मिल जाना है।
जो आया है वो जाएगा, बस मौत तो एक बहाना है।
जब आये थे इस दुनिया में, तो क्या लेकर तुम आये थे।
हाथों में चन्द लकीरें थीं, वह भी धुँधली सी लाये थे।
अँगुली पकड़ाई थी जिसने और स्तनपान कराया था,
उस माता की तू पूजा कर, जिसने चलना सिखलाया था।
वो जन्मभूमि भी कहती है तुझे अपना फर्ज निभाना है।
मिट्टी की मूरत है इंसा मिट्टी ही में मिल जाना है।।
जो खोता है खो जाने दो, उसका कोई अफसोस न कर।
बस आगे बढ़ते जाना तुम, पीछे अपने सब छोड़कर।
चलते-चलते एक दिन मञ्जिल, तेरे कदमों को चूमेगी,
फिर दीवारों पर तेरी भी, हँसती तस्वीर लगी होगी।
बस तुमको अपने अन्दर थोड़ा सा विश्वास जगाना है।
मिट्टी की मूरत है इंसा, मिट्टी ही में मिल जाना है।।

एक नया लड़का आया

शिखर सेंगर
सप्तम (ख)

आज नया एक लड़का आया।
उसे देख कर जी घबराया।
गंदा बदन निथाब नहाया।
सिर पर सेरो मैल चढ़ाया।
लम्बे गंदे उसके बाल।
बड़े बड़े नाखून कराल।
गंदे बाल व कुर्ता मैला।
स्याही से था कोट गंधेला।
सब बच्चों ने दूर हटाया।
कहा गुरू जी ने यह उससे।
कल सबेरे नित ही नहाना।
बाल नख कटवा कर आना।
तब होगे तुम सब के भाई।
बात मेरी कुछ समझ में आई।।

रिश्ते बने रहें

ऋषभ कटियार
अष्टम (क)

चलो करें कुछ कोशिश ऐसी,
रिश्ते बने रहें।

रिश्ते जिनसे सीखी हमने,
बोली बचपन की।
सम्बन्धों की परिभाषाएँ,
भाषा जीवन की।
कुछ भी तो ये अपनेपन के,
रस में सने रहें।
रिश्ते बने रहें।।

बन्द खिड़कियाँ दरवाजे सब,
कमरों के खोलें।
हो न सकें जो अपने,
आओ हम उनके हो लें।
ध्यान रहे ये पुल कोशिश,
के न अधबने रहें।
रिश्ते बने रहें।

यह ही सच है, ये जीवन
की असली पूँजी है।
रिश्तों की खुशबुएँ बन हर घर पर गूँजी हैं।
अपने अपनों से पल भर भी न अनमने रहें।
रिश्ते बने रहें।

श्री निवास रामानुजम्

कार्तिकेय प्रताप सिंह भदौरिया
षष्ठ (ग)

मद्रास प्रान्त के तन्जौर जिले के इरोड नामक छोटे से गाँव के स्कूल की घटना है। प्रारभिक कक्षा के अध्यापक कक्षा में आये। उन्होंने शिक्षार्थियों को कार्य दिया। आधे घण्टे में एक से सौ तक की सभी संख्याओं का जोड़ निकालकर मुझे दिखाइये। सारे बच्चे सवाल हल करने में लग गये। दस मिनट भी न बीते होंगे। कि सात वर्ष का एक विद्यार्थी सवाल हल कर गुरूजी से जाँच कराने ले गाया गुरूजी ने सवालों को जाँचा और सही उत्तर पाया। शिक्षक यह देखकर हैरान रह गये कि बालक ने सवाल हर करने में जिस सूत्र का प्रयोग किया है उसका ज्ञान केवल उच्च कक्षा के विद्यार्थी को ही हो सकता है।

अध्यापक ने बालक से पूछा - ''बेटा तुमने यह सूत्र कहाँ से सीखा?''

बालक बोला,'' यह अध्ययन किताब से पढ़कर।'' गणित की यह विलक्षण प्रतिभा वाले बालक 'श्री निवास रामानुजम् आंयगर' थे।

सरित गाथा

अंकित शुक्ल
नवम (क)

सरित उठ हिमगोद से,
जीवन धारा में बह चली।
स्वच्छ निर्मल चाँदनी सी,
कुमुदिनी की सी कली।

पिता जिसका है हिमालय,
बन्धु बान्धव शिखर जिसके,
मन्द बहने लगी धारा,
बढ़ चले अब कदम उसके।

कंटकों को ले बहाने का
अदम्य साहस सँजोकर।
हिमशिलाएँ चीर कर भी,
चलने का उत्साह लेकर।

रास्ते से डिग न जाना,
पिता हिम कहता यही
राह में न हों सुमन ,तो
पत्थरों का पथ सही।

रास्ते के कंटकों से,
कर्म पथ मत भूल जाना।
धर्म, सेवा है तुम्हारा,
कन्या ने माता से जाना।

हिम कुटुम्ब से विदा हुई वो,
नम आँखों से प्रस्थान किया।
दुर्जन-सज्जन का ज्ञान नहीं,
पर सेवा का आह्वान किया।

स्वच्छन्द विचरण की खुशी थी,
तो गृह-विरह का गम भी था।
लौटने की इच्छा थी, तो
जन-सेवा का मन भी था।

लौटकर जाना कभी,
सीखा नहीं था सरित ने।
कर्तव्य पथ पर बढ़े जाना,
चाहे स्वयं अर्थी बने।

घाटियों से कूदती, अठखेलती,
उतरी धरा पर।
कठिनाइयाँ भी कम थीं अब,
जितनी सदा मिलती गिरि पर।

राह में उस जल का जाने,
कितने जीवों ने पान किया।
कोई नर उसको गंगा कहता
किसी ने साष्टांग प्रणाम किया।

देख अपना मान,मन
सरिता का मुग्ध हुआ था।
हिमकुटुंब में नेह तो था,
पर वैसा सम्मान नहीं था।

पर अगले ही क्षण,
यह क्या अनर्थ, अन्याय हुआ।
देवपूजक मानवों ने,
अपशिष्टों को भी विसर्ज दिया।

गति में भी अवरोध लगा,
अपशिष्टों का भार हुआ।
तीव्र नहीं पर मन्द गति से,
हिमपुत्री ने प्रस्थान किया।

तट से दूर हुई अब तटिनी,
नर स्वार्थ ने आह्वान किया,
क्रोध सरिता का चरम था,
था उसका अपमान हुआ।

दुर्जनों से दूर रहने,
का स्वयं लेकर संकल्प
चल पड़ी थी सरित अब,
लक्ष्य की दूरी थी अल्प।

लक्ष्य उसका सामने था,
लहरों का प्रियतम दिखा।
नवोत्साह से भर चली वो,
सागर सरिता का मेल हुआ

दान

रोहन मुकेश
सप्तम (क)

करो तुम दान बढ़ेगा मान,
नष्ट होगा पूर्ण अभिमान।
बनोगे तुम अच्छे इन्सान,
करो तुम दान बढ़ेगा मान।।
सदा फैले यश चारों ओर,
कीर्ति भी होगी चारों ओर।
बनोगे तुम नेक, महान,
करो तुम दान बढ़ेगा मान।
पुलकित हो जिससे सबके प्राण।
जिससे सबका हो परित्राण।।
अपनी हो बस एक ही आन।
दान से ही होता कल्यान।।
करो तुम दान, बढ़ेगा मान।
नष्ट होगा पूर्ण अभिमान।।

सुर सम्राज्ञी 'लता मंगेशकर'

हर्षित कटियार
नवम (ग)

लता मंगेशकर का जन्म 28 सितम्बर 1929 को इंदौर में हुआ। इनके पिता शास्त्रीय गायक थे। वे थियेटर कम्पनी चलाते थे। उन्होंने लताजी की प्रतिभा को देखकर कहा, ''यह लड़की एक दिन चमत्कार साबित होगी।

लता मंगेशकर ने पहली बार मराठी फिल्म के लिए गाना गाया। पहली हिन्दी फिल्म जिसके लिये उन्होंने गीत गाया, वह थी **''आपकी सेवा में''** यह फिल्म 1947 में आयी परन्तु गाने को कोई ख्याति न मिली। निराश न होते हुए लता जी ने 'मजबूर ' फिल्म में पुनः गाना गाया। गाना था, **''मेरा दिल तोड़ा''**। लता जी की गायन शैली से प्रभावित उस समय के सर्वश्रेष्ठ निर्देशकों में से एक नौशाद व हुस्नलाल भगतराम ने उन्हें अपनी फिल्मों **'अंदाज'** और **''बड़ी बहिन''** में मौका दिया। फिर उन्होंने **'बरसात'** मूवी में गाने गाये जिसके गाने बहुत लोकप्रिय हुए।

सन् 1949 में लता जी के सुर से सुसज्जित चार फिल्में आयीं। **''बरसात''**, **''अंदाज''**, **''दुलारी''** व **''महल''**। इनमें से महल का गीत ''आयेगा आने वाला'' बहुत लोकप्रिय हुआ। तब से आज तक वे सुर सम्राज्ञी के पद पर विराजमान हैं।

सन् 1962 में चीनी आक्रमण के बाद जब लता जी ने रुँधे गले से **''ऐ मेरे वतन के लोगो''** गाया तो सारा देश तड़प उठा। तत्कालीन प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू की तब आँखें भर आयी थीं। लता जी ने इस गीत की पंक्ति **''जो खून गिरा सरहद पर वह खून था हिन्दुस्तानी''** को गाकर देश की एकता व अखण्डता की मशाल जलायी उससे दुःख की घड़ी में भी देशवासियों का हृदय रोशन हो गया।

आश्चर्यजनक लता जी

- लता जी जिस मंच पर भी गाती हैं। हमेशा नंगे पाँव जाती हैं। ऐसा वे मंच के सम्मान में करती हैं।
- लता जी लगभग 20 भाषाओं में 50,000 से अधिक गीत गाकर विश्व रिकार्ड बना चुकी हैं। जिसके लिये उनका नाम बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अंकित है।
- लता मंगेशकर देश की सम्भवतः ऐसी हस्ती हैं जिनके जीवनकाल में ही उनके नाम पर **''लता मंगेशकर अवार्ड''** दिया जाता है।
- लता जी अभिनेत्रियों की तीन पीढ़ियों-मधुबाला, जीनत अमान व प्रियंका चोपड़ा के लिए पार्श्व गायन कर चुकी हैं तथा अभी भी पार्श्व गायन में सक्रिय हैं। ❑

बोया पेड़ बबूल का.....

शिखर अग्रवाल
एकादश (ख)

यह बात भवानीपुर गाँव की है। वहाँ सुलेखा नाम की एक स्त्री रहती थी। उसका पति भगत हवलदार था। सुलेखा दूध का व्यापार करती थी। एक माह सुलेखा ने दूध में अधिक पानी मिलाकर 800 रु० अधिक बचाये और यह बात अपने पति को नहीं बताई। जब वह यह रुपये अलमारी में छुपा रही थी तब उसके 12 वर्षीय पुत्र सौरभ ने यह देख लिया। उसने कहा कि मम्मी मैं पापा को बता दूँगा। तो उसकी माँ ने उसके हाथ में 100 रुपये का नोट रख दिया और बोली कि बेटा यह बात पापा को मत बताना।

करीब 7 साल बाद जब सौरभ 19 वर्ष का हो गया तब एक रात सौरभ एक नोटों से भरा बैग लेकर घर में घुसा तब उसका पैर हांडी में पड़ गया जिससे घर में बहुत शोर हुआ और उसकी माँ जग गयी। जब वह अपने बेटे के कमरे में गयी तब उन्होंने देखा कि उनका बेटा नोटों की गड्डियाँ गिन रहा है। जब वह कमरे में पहुँची तब उसने अपने बेटे को डाँटा और बोली मैं अभी जाकर तुम्हारे पापा को उठाती हूँ। तब सौरभ ने 1 लाख रुपये की गड्डी अपनी माँ को दी और कहा मैंने आपकी गलती पर पर्दा डाला अब आप मेरी गलती पर पर्दा डालो।.....

जब बोया पेड़ बबूल का, तो आम कहाँ ते होय।

पहली साइकिल

शिवम त्रिपाठी
अष्टम (क)

पहली साइकिल वॉन ड्रेइस की सवारी थी जिसमें दो पहिये तो थे पर पैडल नदारद था इसे बेरोन वॉन ड्रेइस ने पेरिस में सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया था। लोग इसे देखकर हैरान थे हालाँकि यह बहुत काम की साइकिल नहीं थी, क्योंकि बिना पैडल के इसे आखिर कितनी दूर तक चलाया जा सकता।

लेकिन समाज के उच्च वर्ग के युवा इसे मनोरंजन के लिये ही सही, लेकिन इस्तेमाल करते थे।

महात्मा बुद्ध की सीख

ऋतेश भारती
अष्टम (ख)

एक बार महात्मा बुद्ध अपने शिष्यों को ज्ञान दे रहे थे। उसी समय उनके एक शिष्य ने उनसे पूछा कि- ''ईश्वर कहाँ रहते हैं? मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।'' इसपर महात्मा बुद्ध ने कहा- ''मान लो, किसी चोर ने पैसे के लिए किसी व्यक्ति को घायल कर दिया और वह घायल व्यक्ति किसी वैद्य के पास जाये वैद्य उसका उपचार न करके उससे पूछे कि वह कौन था? कहाँ से आया था? मैं उसे खोजकर ही तुम्हारा उपचार करूँगा। तो वह घायल व्यक्ति तड़प-तड़प कर मर जाएगा। उसी प्रकार तुम भी उस परमपिता परमात्मा की खोज में लग जाओगे तो तुम्हारा जीवन व्यर्थ हो जाएगा। अच्छा होगा कि तुम उस ईश्वर का ध्यान करते हुए, उसका चिंतन करते हुए, एक सच्चे मानव की तरह अपने जीवन का निर्वाह करो।''

❑

मूरख हृदय न चेत

शुभम् गुप्त
सप्तम (क)

किसी वन में एक शमी का वृक्ष था। उसकी लंबी शाखाओं में चटक नामक चिड़िया ने अपना घोंसला बना रखा था। हेमन्त ऋतु में वहाँ वर्षा शुरू हुई। ठंडी हवा के झोंकों से सर्दी बढ़ गई। तभी ठण्ड से काँपता हुआ बन्दर शमी वृक्ष की छाया में आकर बैठ गया।

चटक चिड़िया ने उससे कहा-'अरे भाई, तुम्हारी आकृति तो पुरुष के समान है। पुरुषों की तरह तुम्हारे हाथ पैर भी हैं। फिर ठंड से क्यों काँप रहे हो? अपने रहने के लिए घर क्यों नहीं बना लेते।

यह सुनकर बंदर को क्रोध आ गया। अरे ओ चूँ-चूँ की बच्ची तू खामोश क्यों नहीं रहती? मजाक उड़ाती है मेरा, चुपचाप पड़ी रह।

जब चटक चिड़िया फिर भी नहीं मानी और अपनी बात दोहराई तो बंदर ने चिढ़कर शमी वृक्ष पर बने घोंसले को नष्ट कर दिया।

कहानी की मुख्य प्रेरणादायक बात यह है कि- 'मूर्खों को उपदेश देने से कोई लाभ नहीं।' दुष्ट व्यक्ति दूसरों के सुखों को देखकर बहुत कष्ट से युक्त हो जाता है। यह मूर्खों का स्वाभाविक गुण है।

❑

एक छत्ते में कितनी मधुमक्खियाँ

मोहित यादव
अष्टम (ख)

'आपने मुधमक्खी के बारे में तो सुना ही होगा लेकिन शायद इस प्रकार नहीं।

एक मधुमक्खी के छत्ते में कम से कम 20,000 से 60,000 मधुमक्खियाँ एक साथ रहती हैं। परिवार का मुख्य सदस्य होती है रानी मधुमक्खी यह एक दिन में कम से कम 1500 अण्डे देती है। जिनका जीवन करीब दो साल तक रहता है। मधुमक्खी के छत्ते में सबसे आलसी होते हैं ड्रोन्स, उनका सिर्फ एक ही काम होता है, रानी मधुमक्खी का साथी बनकर रहना। ड्रोन्स की जिन्दगी लगभग 21 दिन की होती है। इनके डंक नहीं होते और ये काम नहीं करते हैं। सारा काम छत्ते में रहने वाले वर्कर करते हैं। वर्कर दूर उड़कर परागकण और रस इकट्ठा करते रहते हैं। वर्कर मधुमक्खी भोजन की तलाश में करीब 14 किमी. तक उड़ती हैं।

उनकी गति एक घण्टे में 14 किमी. तक होती है। मधुमक्खियों का गति अनुकूलन और उनका कम्पन करना फूल की दिशा और दूरी बताने का तरीका होता है। पर यह कठिन गतिविधि इन्हें काफी नुकसान पहुँचाती है और इस प्रक्रिया में कई वर्कर की मौत 40 दिन के अन्तर में ही हो जाती है।

पराग ढूँढ़ कर उसे छत्ते में जमा करने के अलावा ये वर्कर किसी तरह के पानी को अपने पंखों के तेज गति से वाष्पित कर सकते हैं। कई बार रात में ओस की बूँदें फूलों पर जमा हो जाती हैं इन्हें वह आसानी से हटा सकती हैं। जब पानी की मात्रा 18% से कम हो जाती है तो इस मिश्रण को शहद कहा जाता है। वैज्ञानिकों ने काफी अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष निकाला है कि मधुमक्खी बहुत चालाक होती है। ❑

संस्कार-सिंचन

दीपक कुमार
सप्तम (ख)

- एक सर्वेक्षण के अनुसार तीन वर्ष का बच्चा जब टी० वी० देखना शुरू करता है, और तब उसके घर में केबल कनेक्शन हो तो हर रोज 5 घण्टे के हिसाब से 20 वर्ष का होने तक उसकी आँखे 33,000 बार हत्या 72,000 बार अश्लीलता एवं बलात्कार के दृश्य देख चुकी होती हैं।
- ..... जो बालक 33,000 बार हत्या एवं 72,000 बार अश्लील दृश्यों को देखेगा वह क्या बनेगा जरा सोचें.....

  बालक मोहनदास करमचंद गाँधी 'सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र' नाटक देखकर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने आजीवनसत्यव्रत ले लिया। ❑

ईश्वर की सवश्रेष्ठ रचना (मानव) है या नहीं

शान्तनु राज
नवम (ख)

प्राचीन प्रथाओं तथा ऋषि मुनियों के अनुसार इस पृथ्वी का निर्माण अत्यंत प्राचीन समय में परमपिता ईश्वर द्वारा हुआ था। तथा उन्हीं परमपिता परमेश्वर ने सभी प्राणियों को रूप तथा पृथ्वी को सौंदर्य प्रदान किया है। उनकी सभी कृतियों तथा रचनाओं में एक परम अनुभवी कृति मानव भी है। कहा जाता है कि मानव ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट रचना है परंतु आज के युग में यह कहना रास्ते में पड़ी धूल के समान प्रतीत होता है क्योंकि आज के जीवन में मनुष्य के पास न तो आत्मबल है और न ही अभूतपूर्व, अपूर्व शक्ति। आज के इस जीवन में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो संयम तथा शांति से अपना जीवन व्यतीत कर रहा होगा। आज का जीवन इस प्रकार घटित हो रहा है जिस प्रकार हाथी रूपी पापी चींटियों जैसी पुण्यात्माओं को कुचल देते हैं। क्या यही मनुष्य ईश्वर की महानतम कृति है?.. यदि है तो क्यों प्रश्नवाचक चि अपनी संपन्नता प्रकट कर रहा है, क्योंकि आज के जीवन में मनुष्य की तुलना अगर पशुओं से की जाए तो भी कम है क्योंकि वर्तमान में पशु हम से अच्छा ही है जो सुकून से अपना जीवन तो निर्वाह कर रहा है परंतु मनुष्य को प्रत्येक पल चिंतावस्था सताया ही करती है, चोर-डाकुओं का डर तो कहीं आतंकवादियों का आक्रमण जो मनुष्य को भयभीत किया करते हैं। आतंकवाद तथा दुष्कर्म जो मनुष्यों द्वारा ही संपादित हो रहा है आज कल की आम बात हो गयी है। जहाँ लोग अपनी खुशियाँ मिलबाँट कर व्यक्त करते हैं वहाँ आतंकवादी लोग अनहोनी (बमविस्फोट) इत्यादि कर ही देते हैं व लोगों की सिसकियाँ दबकर रह जाती हैं।

यह सब तो मानव और उन्हीं की प्रजाति के द्वारा प्रतिपादित हो रहा है। क्योंकि मनुष्य ऐसा हो गया है? जब मनुष्य कोई नेक कार्य करता है तो प्रभु को भी अपनी कृति पर गर्व होता है परंतु आज-कल का मानव श्रेष्ठ कार्य की ओर ध्यान क्या उनकी अवहेलना करता है। क्या यही है मानव जो इस प्रकार से घटनाग्रस्त होते हुए भी सर्वोच्च पद प्राप्त किए हुए है? क्या मानव को सर्वोच्च स्थान दिया जाना प्रभावशील है? क्या मानव इस प्रकार का कार्य किए जाने पर सर्वोच्च पद पर रह सकता है? क्या मनुष्य अब भी सर्वोत्कृष्ट है?

सोचिए.....!

नदी की धारा मुड़ गयी

रामनरेश सारस्वत
अष्टम (ख)

आद्य शंकराचार्य जी की माता विशिष्टा देवी अपने कुल देवता केशव की पूजा करने जाती थीं। वे पहले नदी में स्नान करतीं, फिर मंदिर में जाकर पूजन करती। एक दिन वे प्रातः काल ही पूजन-सामग्री लेकर मंदिर की ओर गयीं किन्तु सायंकाल तक घर नहीं लौटीं।

शंकराचार्य तब 7-8 साल के ही थे। वे ईश्वर के परमभक्त और निष्ठावान थे। माता के वापस न लौटने पर उन्हें बड़ी चिन्ता हुई और वे उन्हें खोजने के लिए निकल पड़े। उन्होंने बहुत देर तक माता का उपचार किया तब वे होश में आ सकीं। नदी अधिक दूर थी। वहाँ तक पहुँचने में माता को बड़ाकष्ट होता था। आचार्य ने भगवान से मन-ही-मन प्रार्थना की। प्रभो ! किसी प्रकार नदी की धारा को मोड़ दो, जिससे कि माता निकट ही स्नान कर सकें। वे ऐसी प्रार्थना नित्य करने लगे। एक दिन नदी की धारा किनारे की धरती को काटती-काटती मुड़ने लगी तथा कुछ दिनों में ही वह आचार्य शंकर के घर के पास ही बहने लगी। इस घटना ने आचार्य का अलौकिक शक्ति सम्पन्न होना प्रसिद्ध कर दिया। ❑

क्रिकेट जगत

शौर्य प्रताप
सप्तम (क)

दो तिहरे शतक मारने वाले बल्लेबाज

बल्लेबाल	टीम	स्कोर	विरूद्ध
डॉन ब्रैडमैन	आस्ट्रेलिया	334	इंग्लैण्ड
		304	इंग्लैण्ड
ब्रायन डारा	वैस्टइंडीज	375	इंग्लैण्ड
		400	इंग्लैण्ड
वीरेन्द्र सहवाग	भारत	309	पाकिस्तान
		319	दक्षिण अफ्रीका
क्रिस गेल	वैस्टइंडीज	319	दक्षिण अफ्रीका
		333	श्री लंका

काँच की बरनी और दो कप चाय

आकाश जायसवाल
नवम (क)

जीवन में सब कुछ एक साथ और जल्दी-जल्दी करने की इच्छा होती है, सब कुछ तेजी से पा लेने की इच्छा होती है और हमें लगने लगता है कि दिन के चौबीस घण्टे भी कम पड़ते हैं। उस समय से बोध कथा "काँच की बरनी और दो कप चाय" हमें याद आती है। दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर कक्षा में आए और उन्होंने छात्रों से कहा कि वे आज जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पाठ पढ़ाने वाले हैं। उन्होंनें अपने साथ लाई एक बड़ी काँच की बरनी (जार) टेबल पर रखी और उसमें टेबल/टेनिस की गेंदें डालने लगे और तब तक डालते रहे जब तक उसमें एक भी गेंद समाने की जगह नहीं बची।

उन्होंने छात्रों से पूछा- क्या बरनी पूरी भर गयी? हाँ.....आवाज आई.....फिर प्रोफेसर साहब ने छोटे-छोटे कंकड़ उसमें भरने शुरू किये, धीरे-धीरे बरनी को हिलाया तो काफी सारे कंकड़ उसमें जहाँ जगह खाली थी समा गए।

फिर से प्रोफेसर साहब ने पूछा, क्या अब बरनी भर गयी है।

छात्रों ने फिर से एक बार कहाँ हाँ.....अब प्रोफेसर साहब ने रेत की थैली हौले-हौले उस बरनी में डालना शुरु किया, वह रेत भी उस जार में जहाँ सम्भव था बैठ गयी। अब छात्र अपनी नादानी पर हँसे।.....

फिर प्रोफेसर साहब ने पूछा, क्यों अब तो यह बरनी पूरी भर गयी ना? हाँ, अब तो पूरी भर गयी.....सभी ने एक स्वर में कहा, सर ने टेबल के नीचे से दो कप चाय के निकालकर उसमें की चाय जार में डाल दी। चाय भी रेत की बीच में थोड़ी-सी जगह में सोख ली गई।

अब प्रोफेसर ने गम्भीर आवाज में समझाना शुरू किया। इस काँच की बरनी को तुम लोग अपना जीवन समझो- टेबिल-टेनिस की गेंदें सबसे महत्त्वपूर्ण भाग अर्थात् भगवान, परिवार, बच्चे, मित्र, स्वास्थ्य शौक है, छोटे कंकड़ मतलब तुम्हारी नौकरी, कार, बड़ा, मकान आदि हैं, और रेत का मतलब और भी छोटी-छोटी बेकार-सी बातें मनमुटाव, झगड़े हैं। अब यदि तुमने काँच की बरनी में सबसे पहले रेत भरी होती तो टेबिल-टेनिस की गेंदों और कंकड़ों के लिए जगह नहीं बचती या कंकड़

भर दिए होते तो गेंदें न भर पाते, रेत जरूर आ सकती थी.....ठीक यही बात जीवन पर भी लागू होती है, यदि तुम छोटी-छोटी बातों के पीछे पड़े रहोगे और अपनी ऊर्जा उसी में नष्ट करोगे तो तुम्हारे पास मुख्य बातों के लिए समय नहीं रहेगा..... मन के सुख के लिए क्या जरूरी है ये तुम्हें तय करना है। अपने बच्चों के साथ खेलो, बगीचे में पानी डालो, सुबह पत्नी के साथ घूमने निकलो घर के बेकार समान को बाहर निकाल फेंको, मेडिकल चेक-अप करवाओ.....टेबल-टेनिस की गेंदों की फिक्र पहले करो, वही महत्त्वपूर्ण है.....पहले तय करो कि क्या जरूरी है.....छात्र बड़े ध्यान से सुन रहे थे।

अचानक एक ने पूछा, सर आपने यह नहीं बताया कि 'चाय के दो कप' क्या है? प्रोफेसर मुस्कुराये, बोले.....मैं सोच ही रहा था कि अभी तक ये सवाल किसी ने क्यों नहीं किया .... इसका उत्तर यह है कि, जीवन हमें कितना ही परिपूर्ण और संतुष्ट लगे, लेकिन खास मित्र के साथ दो कप चाय पीने की जगह हमेशा होनी चाहिए। ❑

''जीना''

दिव्या
षष्ठ (ग)

एक चींटी जीवन से ऊब कर आत्महत्या करने चली। वह अपना जीवन व्यर्थ समझने लगी थी। उसने ठान लिया कि अब वह इस दूभर जिन्दगी से मुक्त होकर ही रहेगी । उसने उसी क्षण एक ऊँची चट्टान की ऊँचाई तय की और उसके अंतिम छोर से सीधे नीचे गिर पड़ी। परन्तु हैरान अपने आप को जीवित पाया। हैरान चींटी ने जाकर अपना सिर एक ताड़ के पेड़ से टकरा दिया, परन्तु उसे जरा सी भी चोट नहीं आयी अब उसने एक मोटे ताजे व्यक्ति को आते देखा देखा चींटी उसके पैर के नीचे जा दबी। दूसरे पल अपने आप को सही सलामत पाकर उसे हैरानी हुई कि यह कैसे हो गया। मैं मौत खोज रही हूँ और मौत मुझसे भाग रही है। शायद मरना अभी मेरे भाग्य में नहीं। यही सोचते हुए वह जा रही थी कि गुड़ से भरा पतीला उसे दिखा। गुड़ देखते ही चींटी को जोर की भूख मालूम हुई। उसने गुड़ खाना शुरू किया। वह गुड़ खोते-खाते खूब अन्दर जा घुसी जब पेट भर गया, तो उसने सोचा काश ऐसा भोजन रोज मिलता। वह गुड़ से बाहर निकलना चाह रही थी पर अन्ततः उसकी मौत हो गयी जबकि उसमें जीने की इच्छा जागत हो चुकी थी। उसे जीवन प्यारा लगने लगा था। ❑

क्रांतिकारी विद्यार्थी

एकाग्र पाण्डेय
नवम (ग)

कानपुर सन् 1857 से क्रान्ति का एक गढ़ रहा है। कानपुर में जो कई प्रकार के क्रान्तिकारी दल सक्रिय थे उनमें सन् 1929-30 में बनाया गया बी०एन०एस०डी० इण्टर कालेज के छात्रों का भी एक दल था। राजकुमार सिन्हा और विजय कुमार सिन्हा के भान्जे पी०सी० मिश्र इसके अध्यक्ष थे। इस दल की संख्या 15 थी। कॉलेज के बाहर के सदस्यों में केवल अर्जुन अरोड़ा शामिल थे। अन्य सदस्यों में थे- शिवआधार पाण्डेय, राजकुमार मिश्र, राम प्रसाद अग्रवाल और श्याम सुन्दर माथुर। इस दल के सदस्यों ने क्रान्तिकारी विचारों के प्रसार के लिए हिन्दी व अंग्रेजी में पर्चे निकाले थे जो हाथ से टाइप किये हुये थे।

26 जनवरी 1930 ई० को इस दल के पर्चे कानपुर में ही नहीं बल्कि इलाहाबाद में भी चिपकाये गये। इन्हें चिपकाने रामकुमार मिश्र व शिवआधार पाण्डेय इलाहाबाद गये थे। विशेष बात यह थी कि इस दल के सदस्य हाईस्कूल के विद्यार्थी थे जिनकी आयु 16 वर्ष थी।

कानपुर में स्थित डी०ए०वी कॉलेज काकोरी कांड के बाद क्रांति के एक गढ़ के रूप में कार्य करने लगा था। इस कालेज से अनेक क्रान्तिकारी निकले जिसमें प्रमुख रूप से डॉ० गया प्रसाद, शिव वर्मा, जयदेव कपूर, विजय कुमार सिन्हा, अजय घोष, सुरेन्द्र पाण्डेय और अमर शहीद महावीर सिंह थे।

क्रान्तिकारी उस समय खुलकर काम तो कर नहीं सकते थे अतः उन्होंने क्रान्तिकारी विचार फैलाने तथा नये सदस्यों की भर्ती के लिए अनेक संस्थायें बना रखी थीं। ऐसी ही एक संस्था थी कानपुर का जिम्नास्टिक क्लब। विजय कुमार सिन्हा, बटुकेश्वर दत्त, अजय घोष, सुरेन्द्र नाथ पाण्डेय आदि ने इस क्लब की स्थापना की थी।

भगत सिंह तथा चन्द्रशेखर आजाद की मृत्यु के पश्चात् क्रान्तिकारी दल के छिन्न-भिन्न हो जाने पर भी युवा क्रान्तिकारी दल का उत्साह क्षीण नहीं हुआ। 12 अगस्त 1932 ई० की रात क्रान्ति के गढ़ कानपुर में एक साथ कई घरों पर क्रान्तिकारियों को पकड़ने हेतु पुलिस का छापा पड़ा। पकड़े जाने वालों में सबसे पहला नाम राजेन्द्र निगम का था, पुलिस लगभग दो वर्ष से उन्हें खोज रही थी। वे

कछियाना के एक मकान में गिरफ्तार किये गये। इनके यहाँ बहुत से अस्त्र भी बरामद हुए इनमें एक स्टिकगन थी, जो देखने में बिल्कुल छड़ी थी परन्तु उसके अन्दर गन फिट थी। एक छोटा-सा फाउन्टेन पेन मिला जिसके अन्दर पिस्तौल था।

परमट के एक मकान से क्रान्तिकारी राम प्रसाद (सुक्खा) भी पकड़े गये। इनके पास से एक पेटी कारतूस तथा अस्त्र-शस्त्र और बम बनाने की सामग्री बरामद हुई। 8 अगस्त 1942 को महात्मा गाँधी ने पूरे देश में 'भारत छोड़ो आंदोलन' का आवाहन किया। इस आन्दोलन को आगे बढ़ाने में कानपुर किसी से पीछे न रहा इस कार्य हेतु जो वर्ग सबसे आगे था, वो छात्र वर्ग था। 10 अगस्त को छात्र सड़कों पर उतर आये उन्होंने सबसे पहले हड़ताल कर दी और जुलूस बनाकर चौक की ओर बढ़े। सबसे आगे क्राइस्टचर्च के विद्यार्थी थे जिनका नेतृत्व आनन्द माधव त्रिवेदी कर रहे थे। चौक में कोतवालेश्वर मन्दिर के निकट पुलिस ने छात्रों को रोका व फायरिंग की जिसमें कई छात्र घायल हुए।

इन्हीं सब क्रान्तियों के आधार पर आज हमारा देश स्वतन्त्र है। ❑

सज्जनता का फल

हर्षित मिश्र
एकादश (क)

नदी के किनारे एक विशाल शमी का वृक्ष था, एक बेंत का पेड़ भी लगा था, जिसकी लताएँ फैली हुई थीं। एक दिन नदी में भयंकर बाढ़ आई। प्रवाह प्रचंड था। शमी सोचता था कि मेरी जड़ें गहरी हैं। मेरा क्या नुकसान होगा। इसी बीच लहरों ने जड़ों के नीचे की मिट्टी काटनी शुरू कर दी। हर लहर मिट्टी खिसका देती। देखते-देखते वृक्ष उखड़ गया। देखने वालों ने अगले दिन पाया कि वृक्ष उखड़ गया है। उसकी जड़ों ने हाथ खड़े कर दिए और वह अब शांत हो चुकी नदी के किनारे असहाय पड़ा है। बेंत का गुल्म इसी बीच उसी बाढ़ से जूझा। जब पानी का प्रवाह तेज हुआ तो वह झुका और मिट्टी की सतह पर लेट गया गरजता पानी उस पर होकर गुजर गया। बाढ़ उतरने पर उसने पाया कि वह तो सुरक्षित है, पर उसका पड़ोसी उखड़ा पड़ा है। देखने वाले चर्चा कर रहे थे कि अहंकारी, अक्खड़ और अदूरदर्शी जो समय की गति को नहीं पहचान पाते, इसी तरह समय के प्रवाह से उखड़ जाते हैं। जो विनम्र हैं, झुकते हैं, अनावश्यक टकराते नहीं, तालमेल बिठा लेते हैं, वे अपनी सज्जनता का सुफल पाकर रहते हैं। ❑

जर्जर महल

प्रशान्त मिश्र
एकादश (ख)

एक ऐसा महल जिसका नाम सुनते ही दूर-दूर के लोग सम्मान में दो-चार बातें करने के लिए मजबूर हो जाते हैं उस महल की आभा ने समूचे देश को सोचने पर मजबूर कर दिया, उस महल को देखने में और प्रवेश पाने में सैकड़ों की भीड़ लग जाती है।

मगर आज उस महल की चमक धीरे-धीरे कम हो रही है, क्योंकि उस महल का राजा बीमार होकर सुस्त पड़ा हुआ है, राजा के अभाव में उसके सलाहकार महल से मनमाने ढंग से उसका दीदार कर रहे हैं, समय के अनुरूप महल में कुछ अच्छे रखवाले भी हैं मगर चाहकर भी वह महल की दुर्दशा को देख रहे हैं।

मैं भी आते-जाते वक्त उस महल की ओर निहारता हूँ और सोचता हूँ कि इस महल की चमक फीकी होने के दो ही कारण हैं।

1. आज के समय की माँग।
2. कुछ लोगों की महत्वाकांक्षाओं की वृद्धि, मगर मेरे साथ भी समय की माँग ने क्या अप्रत्याशित अनुभव जोड़ दिया है कि जिस महल को रास्ते में देखकर सोचने कर लिखने पर मजबूर हो जाया करता था, उसी महल की जर्जर अवस्था देखते हुए अब उससे दूर हो जाने का समय आ गया है। ❑

आइन्सटीन का ड्राइवर

ज्ञानेन्द्र अवस्थी
एकादश (क)

अल्बर्ट आइन्सटीन जब भी लेक्चर देने के लिए कहीं बुलाये जाते थे तो वे कार में अपने ड्राइवर के साथ जाते। लेक्चर के दौरान हॉल में पीछे की सीट पर बैठकर ड्राइवर भी लेक्चर सुनता था सालों तक यही सिलसिला चलता रहा। यहाँ तक कि कार ड्राइवर को आइन्सटीन के लेक्चर याद हो गये। एक दिन आइन्सटीन ने अपने ड्राइवर से कहा आज हम जहाँ जा रहे हैं वहाँ मुझे कोई पहचानता नहीं है। एक काम करते हैं कि मैं ड्राइवर बनकर हॉल में पिछली सीट पर बैठूँगा और तुम मेरी जगह लेक्चर देना। ड्राइवर ने बात मान ली और बिल्कुल आइन्सटीन के अन्दाज में लेक्चर दिया। लोगों ने तालियाँ बजाईं।

लेक्चर के बाद जैसे ही आइन्सटीन बना ड्राइवर चलने को हुआ तो एक व्यक्ति ने खड़े होकर किसी कठिन विषय पर सवाल पूछ दिया। ड्राइवर आखिर इतनें दिनों तक आइन्सटीन की संगत में था तो उसने तुरन्त कहा आपका सवाल बहुत मामूली है। मैं नहीं समझता कि इस पर मुझे समय खराब करना चाहिये क्योंकि इसका जवाब तो हॉल में पीछे बैठा मेरा ड्राइवर भी दे सकता है। बेहतर होगा कि आप उसी से पूछ लें।

धन्यवाद ❑

पुराण एवं उनके श्लोकों की संख्या

अनुग्रह दुबे
षष्ठ (ख)

पुराण	संख्या		
1. विष्णु पुराण	2300	10. ब्रह्माण्ड पुराण	12000
2. भागवत पुराण	18000	11. ब्रह्म वैवर्त पुराण	18000
3. पद्म पुराण	55000	12. शिव (वायु) पुराण	24000
4. वराह पुराण	24000	13. लिंग पुराण	11000
5. मत्स्य पुराण	24000	14. स्कन्द पुराण	81000
6. कूर्म पुराण	17000	15. नारदीय पुराण	25000
7. वामन पुराण	10000	16. अग्नि पुराण	18000
8. गरुड़ पुराण	19000	17. मार्कण्डेय पुराण	9000
9. ब्रह्म पुराण	10000	18. भविष्य पुराण	14000

कुल श्लोकों की संख्या- चार लाख बारह हजार

आचार्य की महत्ता

अंकित मिश्र
नवम (ख)

ऐसा सत्य सिखाना जग हो,
अनाचार मिट जाये,
मिटे स्वर्ग की असत् कल्पना
शाश्वत सत्य भूमि परआये।
तुम भू के भगवान तुम्हारे
चरणों में ईश्वर मिलते हैं,
तुम अन्तर के माली
तुमसे फूल जिन्दगी के खिलते हैं।
मैं भूलूँगा, पर तुम मेरी
भूलों से उदास मत होना।
तुम शिक्षक विद्वान् तुम्हारी
प्रतिभा से लोहा भी सोना।।

वीर बालक चाणक्य

आशा
षष्ठ (ग)

चाणक्य जब बड़ा हुआ तो एक दिन उसकी माँ अपने पुत्र का मुँह देखकर रोने लगी। बेटे ने इसका कारण पूछा तो वह बोली-बेटा, तुम्हारे भाग्य में राज्यछत्र धारण करना लिखा है, तुम थोड़ा ही प्रयत्न करके किसी बड़े राज्य के स्वामी बन जाओगे- यही सोचकर मैं रो रही हूँ।

चाणक्य ने हँसते हुए पूछा - माँ इसमें रोने की कौन-सी बात है। तुम्हें तो खुश होना चाहिए। सच-सच बताओ तुम क्यों रोती हो? माँ ने कहा "बेटा अधिकार पाकर लोग अपने सगे-सम्बन्धियों तक की उपेक्षा करने लग जाते हैं, तुम भी राजा बनकर मुझे भूल जाओगे, मेरा बेटा मुझसे दूर हो जायेगा यही सोचकर रोती हूँ।"

चाणक्य ने फिर पूछा- माँ तुमने कैसे जाना कि मेरे भाग्य में राजा होना लिखा है? माता ने कहा- बेटा, तुम्हारे सामने के दोनों दाँतों से पता चलता है कि तुम राज-वैभव प्राप्त करोगे। शास्त्रों में ऐसा लिखा है। चाणक्य ने उसी समय एक पत्थर से अपने दोनों दाँत तोड़ लिए और माँ से कहा- "माँ अब तुम निश्चिन्त हो जाओ, अब मैं राजा नहीं बन सकता, इसलिए तुम्हारे पास ही रहूँगा।" बेटे का अद्‌भुत कर्म देखकर माँ चकित हो गयी। आँचल से बेटे के मुँह का रक्त पोछते हुए बोली- चाणक्य तूने यह क्या किया? चाणक्य ने सहज भाव से कहा- माँ तुम्हारी ममता के आगे संसार की बड़ी-बड़ी वस्तु को भी तुच्छ मानता हूँ। माँ की ममता, इन दाँतों से और संसार के राज्य से भी अधिक मूल्यवान है।

माता ने प्रेम गद्‌गद होकर पुत्र को गले से लगा लिया। उसी दिन से चाणक्य खण्डदन्त के नाम से प्रसिद्ध हो गये। ❑

भारत की आत्मा - संस्कृति

भारत की आत्मा को समझना है तो उसे राजनीतिक अथवा अर्थ नीति के चश्में से न देखकर सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ही देखना होगा। भारतीयता की अभिव्यक्ति राजनीति के द्वारा न होकर उसकी संस्कृति के द्वारा ही होगी। विश्व को भी यदि हम कुछ सिखा सकते हैं तो उसे अपनी सांस्कृतिक सहिष्णुता एवं कर्तव्य प्रधान जीवन की ही शिक्षा दे सकते हैं।

-पं० दीनदयाल उपाध्याय

'नेता' का 'रासायनिक' विश्लेषण

उत्कृष्ट द्विवेदी
सप्तम (क)

प्राप्ति - ये अत्यधिक सक्रिय होने के कारण मुक्त अवस्था में नहीं पाए जाते हैं। ये अधिकांतशतः चापलूसों से घिरे रहते हैं। साधारणतः संयुक्त अवस्था में अर्थात् दल बनाकर चलते हैं। प्रजातान्त्रिक देशों में अत्यधिक मात्रा में पाएं जाते हैं।

भौतिक गुण :

अवस्था - चुनाव के समय नरम अथवा द्रव रूप में किन्तु चुनाव जीतने के पश्चात् कठोर अर्थात् ठोस रूप में पाये जाते हैं।

रंग - कोई निश्चित रंग नहीं होता है आवश्यकतानुसार गिरगिट की तरह रंग बदल देते हैं।

विलेयता - किसी भी विलायक (दल) में विलेय हैं।

गलनांक - रिश्वत व सिफारिश उत्प्रेरक की उपस्थिति में सामान्य ताप पर पिघलने के कारण इनका गलनांक अत्यंत कम होता है।

क्वथनांक- विरोध करने पर उबलने लगते हैं।

रासायनिक गुण :

हवा का प्रभाव- हवा के रुखानुसार कार्य करते हैं। जिस दल की हवा होती है उसे ही सहयोग करते हैं।

जल से क्रिया- प्रायः जनता की आशाओं पर पानी फेर देते हैं।

अणुभार- अत्यधिक मेवे-मिष्ठान आदि खाने के कारण इनका भार अत्यधिक होता है।

कुर्सी से क्रिया - कुर्सी के प्रति अत्यधिक क्रियाशील होते हैं। कुर्सी मिलने पर उससे चिपकने की प्रवृत्ति दिखाते हैं।

चुम्बकीय गुण - चुनाव के समय जनता के प्रति आकर्षण व बाद में प्रतिकर्षण का गुण रखते हैं। ❑

राम राज तब आयेगा

रवि प्रताप
नवम (ख)

राजनीति के दलदल में,
जब राम घसीटा जाएगा।.....

जहाँ नैतिकता दम तोड़ेगी,
और मानवता मुँह मोड़ेगी।
जहाँ जुनून सिर चढ़ बोलेगा।
सद्भावना टिक पायेगा।.....

जब होगा भ्रष्टाचार चरम पर,
घोर कुठाराघात धरम पर।
जब ऊँच-नीच के पालों में,
मानव से मानव बाँटा जायेगा।.....

जहाँ ढिंढोरे धर्म के पीटे जायेंगे,
दुर्बल निर्धन निर्मम लूटे जायेंगे।
जब होगी आहत मानवता,
फिर सौभाग्य न वहाँ बच पायेगा।.....

होगा कथनी-करनी में भेद जहाँ,
भाई-भाई में भारी मतभेद जहाँ।
होगा छलबल का जहाँ प्रदर्शन,
वहाँ न अमन-चैन दिख पायेगा।.....

जब दंगों के दौर चलाये जायेंगे,
आतंकवाद के पैर जमाये जायेंगे।
और सत्य अहिंसा के दामन पर,
जब रक्तिम दाग लगाया जायेगा। .....

जब होंगे दागी, दामन पहरेदारों के,
लहू बहेगा अपनों का, अपनों के बारे में
जब अनहोनी अपना जाल बिछायेगी,
और भाई खुद भाई का खून बहायेगा।.....

❑

आश्चर्यजनक सत्य

वैभव गुप्त
षष्ठ (क)

1. फ्रांस में मच्छर नहीं पाये जाते।
2. साँप अपनी जीभ और आँख से सुनता है।
3. अफ्रीका का काला हिरन जीवन भर पानी नहीं पीता है।
4. हवाई द्वीप में साँप नहीं पाये जाते हैं।
5. भूटान ऐसा देश है, जहाँ आज तक सिनेमाघर नहीं हैं।
6. विश्व में नेपाल ऐसा देश है, जो आज तक गुलाम नहीं बना।
7. महाराष्ट्र में सिंगापुर गाँव के लोग आज तक घरों में ताला नहीं लगाते हैं।
8. अमेरिका में "मैण्ड्रक" नामक पौधे की शक्ल आदमी से मिलती है।
9. संसार में दो लाख पच्चीस हजार किस्म के पौधे पाये जाते हैं।
10. मेंढक बिना भोजन के मिट्टी में दो वर्ष तक अन्दर रह सकता है। ❑

थोड़ा हँस लो

शिखर सेंगर
सप्तम (ख)

1. **डॉक्टर (मरीज से)**- अब तो तुम बिलकुल ठीक हो गये हो। फिर भी क्यों डर रहे हो?
   मरीज (डॉक्टर से)- जिस गाड़ी से मेरा एक्सीडेंट हुआ था, उसमें लिखा था फिर मिलेंगे।
2. **गणित का शिक्षक (छात्र से)**- जब मैं तुम्हारी उम्र का था तो मेरे 100 नंबर आते थे।
   छात्र (शिक्षक से)- आपको कोई अच्छा टीचर पढ़ाता होगा।
3. **संता (बंता से)**- मैं नालायक को भी लायक बना सकता हूँ।
   बंता (संता से)- वो कैसे ?
   संता - नालायक से ना हटाके।
4. एक आदमी अपने दोस्त के यहाँ डिनर पर गया।
   दोस्त ने गुस्से से कहा, "लज्जा नहीं आयी"।
   वह आदमी बड़े अफसोस से बोला- यार वो नहीं आयी, उसके सिर में दर्द था।
5. **संता** रात को साइकिल लेकर कब्रिस्तान में घुस गया, फिर दूसरी साइड से बाहर निकला, और पसीना पोंछते हुए बोला- ये कौन-सा रोड था? इतने स्पीड ब्रेकर।
6. अध्यापक (छात्र से)- ताज महल को सातवाँ अजूबा क्यों कहा जाता है?
   छात्र (अध्यापक से)- क्योंकि उसने बैंक से लोन लिए बिना ही इसे बनवाया। ❑

हँसना मत

रामसुन्दर राजपूत
नवम (ख)

मोटू भाई पहुँचे शादी में
दावत खूब उड़ाई,
सब्जी के संग अस्सी पूरी
ठूँस-ठूँस कर खाई।
रायता और पुलाव गपागप,
ढेर-ढेर सारा खाया
रसगुल्ले जब लगे उड़ाने,
आधा शतक बनाया।।

इतने पर भी भरा नहीं मन,
इधर-उधर वह जाए।
चाट-चटपटी देखी तो,
फूले नहीं समाये।
तभी अचानक मोटू भाई,
पेट पकड़ चिल्लाए।
फटा जा रहा पेट,
हाय! अब डाक्टर कौन बुलाये? ❑

भारत के प्रमुख स्टेडियम

अर्चित पाण्डेय
षष्ठ (ख)

1. नेता जी स्टेडियम	-	कोलकाता
2. वाणखेड़े स्टेडियम	-	मुम्बई
3. लाल बहादुर स्टेडियम	-	हैदराबाद
4. कीनन स्टेडियम	-	जमशेदपुर
5. यादवेन्द्र स्टेडियम	-	पटियाला
6. बाराबती स्टेडियम	-	कटक
7. ग्रीनपार्क स्टेडियम	-	कानपुर
8. जवाहर नेहरू स्टेडियम	-	नई दिल्ली
9. जवाहर नेहरू स्टेडियम	-	चेन्नई
10. चिन्नास्वामी स्टेडियम	-	बंगलौर
11. सवाई मानसिंह स्टेडियम	-	जयपुर

देश व उनके राष्ट्रीय खेल

आस्ट्रेलिया	-	क्रिकेट
भारत	-	हॉकी
इंग्लैण्ड	-	क्रिकेट
जापान	-	जूड़ो
पाकिस्तान	-	हॉकी
कनाडा	-	बर्फ पर हॉकी
अमेरिका	-	बेसबाल
स्पेन	-	बुलफाइटिंग

'तीन बातें'

देवांशु शेखर श्रीवास्तव
सप्तम (ख)

तीन चीजें किसी का इंतजार नहीं करतीं,

समय, मौत और ग्राहक।

इन तीनों का सदा सम्मान करें।

माता, पिता, गुरु।

तीन चीजों से हमेशा बचने की कोशिश करें।

बुरी संगति, स्वार्थ और निन्दा।

तीन चीजें कोई चुरा नहीं सकता।

अक्ल, चरित्र और हुनर।

तीन चीजों में मन लगाने में उन्नति होती है।

ईश्वर, परिश्रम और विद्या।

तीन चीजें जीवन में एक बार मिलती हैं।

माँ-बाप और यौवन।

तीन चीजें लौटकर वापस नहीं आतीं।

आत्मा शरीर से, तीर कमान से और बात जुबान से ।

तीन चीजें भाई-भाई को लड़ा देती हैं।

जर, जोरू और जमीन।

अनपढ़ नेता और हॉकी मैच

अभिषेक सिंह चौहान
नवम (ग)

एक अनपढ़ नेता,
जिसे खेलों के बारे में नहीं था ज्ञान।
एक हॉकी मैच में,
बुलवाया गया स-सम्मान।
मैच के बाद आयोजकों ने नेता को,
पुरस्कार वितरण के लिए मंच पर बुलवाया।
नेता ने पुरस्कार देने से पहले
खिलाड़ी और दर्शकों से फरमाया।
दोनों टीमों ने,
बहुत बढ़िया खेला है, ये हॉकी मैच।
एक बात समझ में नहीं आई।
पूरे खेल में,
एक भी खिलाड़ी ने क्यों नहीं लिया कैच?
एक कैच भी लेते,
एक खिलाड़ी आउट हो जाता।
मैच देखने वालों को भी मजा आता।
एक ही गेंद को,
इधर से उधर धकेलते रहे।
गेंद नहीं थी हमसे कहते हम दिलवा देते
कम से कम
ग्यारह गेंदो से तो हॉकी मैच खेलते।
एक ही गेंद से सारे खिलाड़ी
पूरे समय हॉकी मैच खेलते रहे।
टी०वी० वाले इस मैच को,
टी०वी० पर विदेशों में दिखाएँगे।
विदेशी हमारी गरीबी का मजाक उड़ाएँगे।
क्या आप इसे सह पाएँगे।
राष्ट्रीय एकता के लिए,
दोनों टीमों को नया रास्ता अपनाना होगा।
मेरा यह सुझाव,
आपको अमल में लाना होगा।
आपसी सद्भाव के लिए,
आपका यह प्रयास भी इसका एक कारण होगा।
दोनों टीम दोनों तरफ,
एक साथ गोल करें,
राष्ट्रीय एकता का,
यह सबसे बढ़िया उदाहरण होगा।

हँस गुल्ले

पुष्कर अग्निहोत्री
सप्तम (ख)

1. **बिल्लू (सोहन से)**- दोस्त, तुम इतना उदास क्यों बैठे हो?
   सोहन - मैंने कुछ किताबें खरीदने के लिए पापा से पैसे भेजने के लिए कहा था।
   बिल्लू- तो क्या उन्होंने पैसे नहीं भेजे।
   सोहन - नहीं, पापा ने किताबें ही भेज दीं।
2. **टीचर** - अनिल से, क्या तुम 15 वीं शताब्दी के राजाओं के बारे में कुछ जानते हो।
   अनिल- सर आप भी क्या मजाक करते हैं, वो तो कबके मर चके हैं, तो मुझे उनके बारे में कैसे पता होगा?
3. **डॉक्टर** - मरीज से, तुम जल्दी ही ठीक हो जाओगे।
   मरीज- ठीक होने के बाद डॉक्टर से बोला- यदि मेरे लायक कोई काम हो तो बता दीजिएगा, फ्री में कर दूँगा।
   डॉक्टर- वैसे तुम काम क्या करते हो।
   मरीज- जी कब्र खोदने का। ❑

मच्छर की वीरता

शुभम् गुप्त
सप्तम (ख)

घर बीच चौकड़ी भर-भर कर
मच्छर बन गया निराला था।
एक छोटे से मच्छर से
पड़ गया हमारा पाला था।
कौशल दिखलाता चालों में,
आ गया हमारे बालों में।
फिर काटा उसने गालों में,
खुजलाहट भर दी खालों में।

गुन-गुन कानों में करता ऐसे,
हाला पी कोई हाली था।
निर्भीक भाव से काट रहा,
मानो प्रत्यक्ष कपाली था।
थक गये हाथ मलते-मलते,
सूजा है सारा अंग-अंग।
बैरी समाज रह गया दंग,
मच्छर का ऐसा देखा रंग। ❑

हँसमुख (जरा हँस लो)

काजल
पंचम (ख)

1. एका बार की बात है बादशाह अकबर अपनी बेगम के साथ बगीचे में आम खा रहे थे। अकबर आम खाते जाते और गुठली बेगम की तरफ खिसका देते। तब तक वहाँ बीरबल आ गये। तब अकबर बोले बीरबल मेरी बेगम कितनी पेटू है, कितने आम खा गई। मैंने तो अभी एक ही खाया। यह सुनकर बेगम शरमा गईं। यह सब बीरबल बहुत देर से देख रहे थे, वे बोले महाराज आप तो गुठली के संग छिलका भी खाये जा रहे हैं, तब तो आप ज्यादा पेटू हैं।
2. **संता**- ओए बन्ता! तूने कार की स्पीड क्यों बढ़ा दी?
   बंता- यार संता कार के ब्रेक फेल हो गये हैं। इससे पहले कि हमारा एक्सीडेण्ट हो जाये, हम जल्दी से घर पहुँच जायें।
3. **पति**- अगर देश की सरकार मेरे हाथों में आ जाये तो सबको सीधा कर दूँ।
   पत्नी- तुम पहले अपना पजामा सीधा कर लो। सुबह से उल्टा पहन रखा है।
4. **पत्नी**- मुझे मेरा नाम लेकर मत पुकारा करो, इससे बच्चे भी मेरा नाम लेकर पुकारते हैं।
   पति (गुस्से से)- तो क्या मैं तुम्हें बच्चों की तरह मम्मी कहकर पुकारा करूँ।
5. **पत्नी**- चलो न आज बाहर चलते हैं कार मैं चलाऊँगी।
   पति- मतलब, जायेंगे कार में, आएंगे अखबार में।
6. **अध्यापक**- संजीव तुम अगले जन्म में क्या बनना चाहोगे।
   संजीव- सर जिराफ।
   अध्यापक- अरे! जिराफ क्यों बनना चाहते हो?
   संजीव- ताकि आप मेरे कान न मरोड़ सकें।
7. **विपिन**- राजू अगर मैं हिमालय की चोटी पर चढूँगा तो तुम क्या दोगे?
   राजू- धक्का
8. **मुन्नाभाई**- ऑक्सफोर्ड माने क्या होता है?
   सरकिट- ऑक्स बोले तो बैल, फोर्ड बोले तो गाड़ी।
9. एक सरदार रेल की पटरी पर लेटा था। राह चलते व्यक्ति ने उससे कहा ये क्या कर रहे हो, ट्रेन आयेगी तो तुम कट जाओगे।
   सरदार - मेरे ऊपर से जहाज गुजर गया, तो ट्रेन क्या चीज है?
10. **ग्राहक**- संता जी लस्सी में मक्खी है।
    संता- ओए चुपकर, दिल बड़ा रख। ये नन्हीं सी जान कितनी लस्सी पी जायेगी। ❑

बूझो तो जानें

रावेन्द्र कुमार
षष्ठ (ग)

इधर खूटा, उधर खूटा
गाय मरखनी, दूध मीठा।
(सिंघाड़ा)

लाल पूँछ हरी बिलाई,
इसका बनता हलुआ भाई।
(गाजर)

किसने किया था सागर पार,
बिना नाव बिन पतवार।
(हनुमान जी)

माटी की वह चीज बनाता,
सुन्दर-सुन्दर उसे सजाता,
चाक घुमाकर करता काम,
बोलो बच्चो उसका नाम।
(कुम्हार)

हरी पूँछ हरे-हरे अण्डे,
नहीं बताओगे तो पड़ेंगे डण्डे।
(मटर)

❑

सरल और कठिन

आकाश सिंह
सप्तम (ख)

सरल		कठिन
• उपदेश देना सरल है,	-	अमल करना कठिन है।
• खर्च करना सरल है,	-	कमाना कठिन है।
• शत्रु बनाना सरल है,	-	मित्र बनाना कठिन है।
• विवाह करना सरल है,	-	निर्वाह करना कठिन है।
• वचन देना सरल है,	-	वचन निभाना कठिन है।
• काम बिगाड़ना सरल है,	-	काम बनाना कठिन है।
• कहना आसान है,	-	करना कठिन है।
• कष्ट पहुँचाना आसान है,	-	कष्ट हरण करना कठिन है।
• हत्या करना आसान है,	-	जीवन देना कठिन है।

❑

हँसी के फुहारे

आदित्य कुमार
सप्तम (क)

- सड़क पर धूमधाम से बारात जा रही थी। घोड़े पर दूल्हे मियाँ के मुँह पर पट्टी बँधी थी। एक राहगीर ने यह देखकर एक बाराती से पूछा, भैया, दूल्हे के मुँह पर पट्टी क्यों बँधी है? बाराती ने मुस्कराते हुए कहा, भाई साहब दूल्हा मोहल्ले का नेता है। वह भीड़ देखते ही भाषण देने लगता है।
- **प्रेम (वेटर से)**- इन आलू के पराठों में आलू तो नजर ही नहीं आ रहे हैं।
- **वेटर**- 'सर'। नाम पर मत जाओ, आपने कभी कश्मीरी पुलाव में कश्मीर को देखा है।

एक कुम्हार के घर के सामने दो गधे बातचीत में मशगूल थे।

पहले ने कहा - क्या बात है? यार, बहुत खुश रहते हो आजकल।

दूसरा बोला- हाँ! जब से मेरे मालिक की बेटी सयानी हुई है तब से मालिक रोज उसे डराता-धमकाता रहता है, अच्छा काम करना बर्ना तेरी शादी गधे से कर दूँगा। ❑

आदर्श प्रश्न-पत्र

गीतांशु सिंह
सप्तम (क)

समय : जितना चाहो **अधिकतम अंक :** अनन्त

विषय - जो पढ़कर आये हो

आलोक- 1. सभी प्रश्नों को छोड़कर केवल 5 प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
2. नकल, हाथ सफाई व पूछाताछी के अंक सुरक्षित हैं।

प्रश्न 1. नकल करने की कौन-कौन सी विधियों से आप भली-भाँति परिचित हैं? किसी एक आधुनिक विधि का सविस्तार वर्णन कीजिए?

प्रश्न 2. स्वच्छ चित्र बनाकर यह सिद्ध कीजिए कि पैंट ऊपर से एकवचन और नीचे से द्विवचन है?

प्रश्न 3. महाकवि सूरदास ने रामायण कब लिखी?

प्रश्न 4. अशोक के बेटे का बाप कौन था?

प्रश्न 5. अग्रलिखित पद्य की सप्रसंग व्याख्या करो।

"कुर्सी जी के राज में जो लूट सके तो लूट ।
अन्तकाल पछताएगा जब कुर्सी जाएगी छूट।।"

❑

'देखो हँस मत देना'

ऋषभ कटियार
अष्टम (क)

1. एक बार कुछ नेता नदी के किनारे घूम रहे थे, कुछ लड़के केकड़ों को पकड़-पकड़ कर बाल्टी में भर रहे थे। बाल्टी पर ढक्कन नहीं था। यह देखकर एक नेता बोला-बाल्टी पर ढक्कन नहीं है, यदि एक भी केकड़ा भाग निकला तो?
   लड़के ने जवाब दिया - ये केकड़े आप नेताओं की तरह होते हैं। यदि एक ऊपर चढ़ने की कोशिश करेगा, तो दूसरा उसकी टाँग पकड़कर नीचे खींच देगा।
2. **माँ**- बेटा धूप में क्या कर रहे हो?
   बेटा- माँ पसीना सुखा रहा हूँ।
3. एक देहाती स्टेडियम में क्रिकेट देखने गया। जब लौटा तब देहातियों ने पूछा - भैया वहाँ क्या देखा?
   देहाती- अरे भैया! स्टेडियम कहाँ वह तो अस्पताल था पहले एक डॉक्टर (अम्पायर) निकला, फिर ग्यारह कम्पाउण्डर निकले (फील्डर), उनके पीछे दो मरीज डण्डे का सहारा लिये चले आ रहे थे। (बैट्समैन)
4. एक आदमी हेलीकाप्टर उड़ा रहा था। उसे चोट लग गई और वह अस्पताल गया और बोला! डाक्टर साहब चोट लग गई है दवा दे दीजिये। डाक्टर बोला चोट कैसे लगी?
   आदमी बोला- हम हेलीकाप्टर उड़ा रहे थे हमें ऊँचाई पर सर्दी लगने लगी। हमने पंखे बन्द कर दिये और नीचे गिर गये।
5. एट्टीट्यूट में एक बच्चा चाकलेट खा रहा था। एक आदमी ने कहा चाकलेट मत खाया करो। इससे दाँत खराब हो जाते हैं।
   बच्चा -पता है, मेरे दादा जी 90 साल जिये हैं।
   आदमी - क्या वो भी चाकलेट खाते थे।
   बच्चा- नहीं, अपने काम से काम रखते थे।
6. **संता (बंता से)**- तुम्हारे घर में बाढ़ का पानी घुस गया है।
   बंता- झूठ क्यों बोल रहे हो, घर की चाबी तो मेरे पास है।
7. **संता (बंता से)**- आज शाम को मेरे घर पर पार्टी है। आज तुम आना। बंता जब संता के पास पहुँचा। तो उसके यहाँ ताला लगा था। बंता ने दरवाजे पर लिखा था- मैं तो घर पर हूँ ही नहीं मैंने तुम्हें पागल बनाया। बंता ने भी दरवाजे पर लिख दिया- तुम मुझे क्या पागल बनाओगे मैं तो आया ही नहीं था।

ब्रह्मचर्य ही जीवन है।

रामनरेश सारस्वत
अष्टम (ख)

ब्रह्मचर्य के बिना जगत में, नहीं किसी ने यश पाया।
ब्रह्मचर्य से परशुराम ने, इक्कीस बार धरणी जीती।
ब्रह्मचर्य से वाल्मीकि ने, रच दी रामायण नीकी।
ब्रह्मचर्य से रामचन्द्र ने, सागर-पुल बनवाया था।
ब्रह्मचर्य से लक्ष्मण जी ने, मेघनाद को मारा था।
ब्रह्मचर्य के बिना जगत में, किसने जीवन रस पाया?
ब्रह्मचर्य के बिना जगत् में, सब ही को परवश पाया।
ब्रह्मचर्य से महावीर ने, सारी लंका जलायी थी।
ब्रह्मचर्य से अंगदजी ने, अपनी पैज जमायी थी।
ब्रह्मचर्य के बिना जगत में, सबने ही अपयश पाया।
ब्रह्मचर्य से आल्हा-ऊदल ने, बावन किले गिराये थे।
पृथ्वीराज दिल्लीश्वर को भी, रण में मार भगाये थे।
ब्रह्मचर्य के बिना जगत में, केवल विष-ही-विष पाया।
ब्रह्मचर्य से भीष्म-पितामह, शरशैया पर सोये थे।
ब्रह्मचारी वर शिवा वीर से, पवनों के दल रोये थे।
ब्रह्मचर्य के रस के भीतर, हमने तो षड्रस पाया।
ब्रह्मचर्य से राममूर्ति ने, छाती पर पत्थर तोड़ा।
लोहे की जंजीर तोड़ दी, रोका मोटर का जोड़ा।
ब्रह्मचर्य है सरस जगत में, बाकी को कर्कशपाया।

रोचक तथ्य

विशाल शुक्ल
अष्टम (क)

- टाइगर शार्क नामक शार्क के 30,000 दाँत होते हैं। फिर भी यह अधिक खतरनाक नहीं होती।
- शार्क अपने शिकार को लगभग 200 मीटर की दूरी से सूँघ लेती है।
- सौर मण्डल का सबसे छोटा उपग्रह "डी मॉस" है।
- जब एक पाण्डा पैदा होता है, तो वह एक चूहे से भी छोटा होता है।
- कंगारू जन्म के समय मनुष्य की सबसे छोटी अंगुलि के बराबर होता है।
- सभी थल परजीव (भूमि पर रहने वाले) पीछे की ओर चल सकते हैं। जबकि कंगारू उल्टा नहीं चल सकता।
- एक बाघ ट्री हाउस में उपस्थित किसी मनुष्य की श्वास को सुन सकता है।
- एक बाघ किसी स्थिर प्राणी को नहीं देख सकता है।
- एक वयस्क बाघ के 30 दाँत होते हैं।
- किसी बाघ के पैर द्वारा बनायेगये चित्रों से उसकी उम्र लिंग व मानसिक स्थिति का पता लगाया जा सकता है।
- एमू के अण्डे का रंग नीला होता है।
- एक बंगाल टाइगर की दहाड़ 3 किलो मीटर तक सुनी जा सकती है।
- एक बाघ की नाक से लेकर पूँछ के अंतिम छोर तक की लम्बाई 10 फुट होती है।
- खोजी कुत्तों का सर्वप्रथम उपयोग स्कॉट लैण्ड में किया गया। जहाँकि पुलिस व्यवस्था विश्वस्तर पर सर्व श्रेष्ठ है।
- एक टॉरनैडो एक घर को उखाड़कर दूसरे मोहल्लेतक ले जा सकता है।
- वाल्ट डिजनी जिन्होंने मिकी माउस नामक कार्टून की रचना की, वे चूहों से डरते थे।
- विश्व की सबसे चौड़ी सड़क ब्राजील में है जिसमें चौड़ाई के अनुदिश 160 गाड़ियाँ एक-साथ चल सकती हैं।
- मधुमक्खियों की 5 आँखें होती हैं। फिर भी उनकी नजर की शक्ति कम होती है।
- स्नेल (घोंघा) तीन साल तक लगातार सो सकता है।
- एक ऐसा मोर जिसमें कुछ वर्णकों की कमी होने की बीमारी होती है। वही सफेद दिखता है, व सफेद मोर कहलाता है।
- गिरगिट की जीभ उसके शरीर के बराबर होती है।
- ह्वेल के समूह को School कहते हैं।

अंतरिक्ष में सबसे पहले एक लाइका नामक कुतिया गई थी। इसी के साथ-साथ एक बंदर भी उसके साथ भेजा गया था।

❑

सचिन तेंदुलकर - एक परिचय

केशव तिवारी
सप्तम (ख)

नाम	-	सचिन तेंदुलकर
निक नेम	-	तेंदल्या, लिटिल मास्टर, मास्टर ब्लास्टर।
मुख्य टीमें	-	मुंबई, भारत, एशिया एकादश, मुंबई इंडियंस, यॉर्कशायर।
जन्म	-	24 अप्रैल 1973 (मुंबई)
क्रिकेट के अतिरिक्त		
मनपंसद खेल	-	टेनिस, फार्मूला वन।
टेनिस खिलाड़ी	-	जॉन मैक्नरो
आराध्य	-	साईं बाबा, भगवान गणेश, (गणपति बप्पा)
पर्यटन स्थल	-	यार्कशायर, हेंडिंग्ले।
होटल	-	पार्क रॉयल डार्लिंग हार्बर, सिडनी।
खाना	-	सी फूड (विशेष रूप से मछली) घर का खाना, बैंगन का भर्ता, बड़ा पाव, भिंडी मसाला, पीली और काली दाल।
क्रिकेटर	-	सुनील गावस्कर, विवियन रिचर्ड्स, इमरान खान, संदीप पाटिल।
फिल्म स्टार	-	अमिताभ बच्चन, नाना पाटेकर।
अभिनेत्री	-	माधुरी दीक्षित।
फिल्म	-	जंजीर, दीवार व कमिंग टू अमेरिका।
गायिका	-	लता मंगेशकर
शौक	-	सीडी एकत्रित करना व कार ड्राइव करना।
कार	-	फरारी 360 मेडोना स्पाइडर।
क्रिकेट ग्राउण्ड	-	सिडनी क्रिकेट ग्राउण्ड।
पेय पदार्थ	-	सेब व संतरे का जूस, पानी।

अमृत वचन

दिनेश कुमार
सप्तम (क)

1. द्वेष और कपट को त्याग दो। संगठित होकर दूसरों की सेवा करना सीखो, यही हमारे देश की महती आवश्यकता है। **- स्वामी विवेकानन्द**
2. भूल करना मनुष्य का स्वभाव है। की हुई भूल को स्वीकार कर लेना एवं वैसी भूल न करने का प्रयास करना, वीर एवं शूर होने का प्रतीक है। **- महात्मा गाँधी**
3. दूसरे का धर्म भले ही श्रेष्ठ मालूम हो, उसे ग्रहण करने में मेरा कल्याण नहीं है। सूर्य का प्रकाश मुझे प्रिय है। उस प्रकाश में मैं बढ़ता रहा हूँ सूर्य मुझे प्रिय है, वन्दनीय है, परन्तु यदि मैं पृथ्वी पर रहना छोड़कर उसके पास जाना चाहूँगा, तो जलकर खाक हो जाऊँगा। **-आचार्य विनोबा भावे**
4. संसार में पाप कुछ भी नहीं है। वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है। **-भगवतीचरण वर्मा**
5. प्रशंसा एक अत्यन्त क्षणभंगुर उत्तेजना मात्र है, जो इसके पात्र से निकटता प्राप्त करते ही शीघ्र नष्ट हो जाती है। **-एडीसन**
6. जो व्यक्ति भलाई से प्रेरित होकर भलाई करता है वह न तो प्रशंसा का आकांक्षी होता है, न पुरस्कार का, यद्यपि दोनों उसे स्वतः ही अन्त में प्राप्त हो जाते हैं। **-विलियम पेन**
7. सच्चा मित्र दो शरीर में एक आत्मा के समान होता है। **-अंग्रेजी लोकोक्ति**
8. विनाश के समय अक्ल उल्टी हो जाती है। **-चाणक्य**
9. शिष्टाचार शारीरिक सुन्दरता की कमी को पूर्ण कर देता है। वही व्यक्ति सर्वाधिक सुन्दर है जो अपने शिष्टाचार से दूसरों के हृदय पर विजय प्राप्त कर सकता है। बिना शिष्टाचार के सौन्दर्य का कोई मूल्य नहीं है। **-स्वीट मार्डेन**
10. जो धनी बनने की शीघ्रता में है, वह कभी निर्दोष नहीं हो सकता। **-बाइबिल**
11. मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना है तो कम से कम बोलो। एक शब्द से काम चले तो दो नहीं। **-महात्मा गांधी**
12. व्यवहार वह दर्पण है जिसका प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। **- गेटे**
13. लापरवाही प्रायः अज्ञानता से भी अधिक क्षति पहुँचाती है। **- फ्रेंकलिन**
14. जिस प्रकार पीतल के पात्रों को यदि नित्य स्वच्छ न किया जाए, तो वे अपनी चमक खो देते हैं,

और जंग लग जाती है। उसी प्रकार यदि साधक नित्य साधना न करे, तो हृदय भी अपवित्र होने लगता है। -तोतापुरी

15. स्वास्थ्य परिश्रम में वास करता है और उस तक पहुँचने के श्रम को छोड़ अन्य कोई मार्ग नहीं है। - बैन्डेल फिलिप्स

16. प्रेम छिपाये न छिपै, जा घट परगट होय।
जो पै मुख बौले नहीं, नैन देत हैं रोय।। -कबीर

17. पुराना कोट पहनो, और नई किताब खरीदो। - थोरो

18. सर्वोत्तम मनुष्य वे नहीं हैं जो अवसरों की बाट जोहते हैं, अपितु वे हैं, जो अवसर को अपना दास बना लेते हैं। -ई० एच० चेपिन ❑

रोचक जानकारियाँ

शौर्य प्रताप सिंह
सप्तम (क)

1. **सबसे लम्बा आदमी**- उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर सबसे लम्बा आदमी राबर्ट पंशिग वाडलो था। इसका जन्म अमेरिका में 22 फरवरी 1918 को, मृत्यु 15 जुलाई 1940 को हुई। इसकी लम्बाई 272 सेमी० थी। पिछले वर्षों में पाकिस्तान का मोहम्मद आलम चन्ना (जन्म 1956 लम्बाई 239 सेमी०) को विश्व का सबसे लम्बा आदमी माना जाता था।

2. **सबसे छोटा बौना**- विश्व का सबसे छोटा वयस्क बौना भारत का गुल मोहम्मद था। इसकी लम्बाई 68 सेमी० थी।

3. **विश्व का सबसे भारी पुरुष**- अमेरिका के जान ब्रोनर का वजन 442 किग्रा० है उसे बिस्तर पर करवट बदलने के लिए 13 आदमियों को लगाना पड़ता है।

4. **विलक्षण राजा**- 250 ई० में चिनसिंग हुयांग नामक सनकी तथा मूर्ख राजा था। जिसके 13,140 रानियाँ व 2600 पुत्र पुत्रियाँ थीं।
   - सुल्तान अब्दुल हमीद द्वितीय की 3000 रानियाँ तथा 500 पुत्र, पुत्रियाँ थीं।
   - पोलर तथा सेन के राजा आगस्ट द्वितीय के बच्चों की संख्या 355 थी।

5. **सबसे बड़ा पुस्तकालय**- विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय कैपिटल हिल वाशिंगटन स्थित यूनाइटेड स्टेट्स लाइब्रेरी ऑफ कॉंग्रेस है। सन् 1987 तक उसकी पुस्तक संख्या 8 करोड़ 50 लाख तक पहुँच गयी थी। ❑

भारत का इतिहास

राघवेन्द्र शर्मा
षष्ठ (ग)

भारत में प्रथम

1. भारतीय प्रथम गवर्नर जनरल - सी० राजगोपालाचारी
2. भारतीय प्रथम प्रधानमंत्री व विदेश मंत्री - पं० जवाहर लाल नेहरू
3. एवरेस्ट पर चढ़ने वाला प्रथम भारतीय - तेंजिंग नोरके
4. प्रथम भारतीय पुरुष पर्वतारोही जिसने बिना आक्सीजन के एवरेस्ट पर चढ़ने में सफलता प्राप्त की - फू डोरजी
5. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष - व्योमेश चन्द्र बनर्जी
6. भारत में प्रथम महिला मुख्यमंत्री - सुचेता कृपलानी
7. भारत में प्रथम अंतरिक्ष यात्री - राकेश शर्मा
8. मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित प्रथम भारतीय - विनोबा भावे
9. पद्म श्री से सम्मानित प्रथम महिला - सिने तारिका नरगिस
10. भारत में स्थापित प्रथम बैंक - बैंक ऑफ हिन्दुस्तान
11. भारत में प्रथम जिसने स्वर्ण जयन्ती मनाई - सन्त तुकाराम
12. भारत का सबसे पुराना किला - कलिंजर (म० प्र०)
13. प्रथम प्रधानमंत्री जो पद पर रहते चल बसे - जवाहर लाल नेहरू

इतिहास के पृष्ठ

1. चन्द्रगुप्त मौर्य की राजधानी कहाँ थी ? - पाटलिपुत्र (बिहार)
2. भारत का नेपोलियन किस शासक को कहा जाता है? - समुद्रगुप्त
3. मौर्य वंश का अन्तिम सम्राट कौन था? - बृहद्रथ
4. गुप्त वंश का प्रथम शासक कौन था? - चन्द्रगुप्त
5. अशोक महान के पिता का क्या नाम था? - बिन्दुसार
6. सोमनाथ पवित्र मंदिर पर किसने आक्रमण किया? - महमूद गजनवी
7. पृथ्वीराज चौहान की अस्थियाँ कहाँ रखी थीं? - अफगानिस्तान में

8. मुगल शासन की स्थापना किसने की थी? - बाबर ने
9. राणा प्रताप किस सन् में मेवाड़ के शासक बने? - 1572 ई० में
10. शिवाजी का राज्यारोहण किस ई० में हुआ? - 1674 ई० में
11. शिवाजी के पुत्र का क्या नाम था? - शम्भा जी महाराज
12. अकबर का मकबरा कहाँ स्थित है? - सिकंदरा में
13. शुंग वंश की नींव किसने रखी थी? - पुष्य मित्र ने
14. सातवाहन कहाँ के शासक थे? - आन्ध्र प्रदेश के
15. आसाम का सबसे पुराना नाम क्या था? - प्राग्ज्योतिषपुर
16. मौर्य वंश के राज्य को किसने समाप्त किया? - पुष्य मित्र ने
17. अवध के अन्तिम नवाब का नाम बताओ? - वाजिद अली शाह

कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

1. भारत में सबसे ऊँचाई पर स्थित हवाई अड्डा - लेह लद्दाख में (3256 मी०)
2. भारत का व्यस्ततम हवाई अड्डा - मुम्बई (सहारा अन्तर्राष्ट्रीय)
3. भारत का सबसे बड़ा मंडप - श्रीषण्मुखानन्द, मुम्बई
4. सबसे बड़ी गुफा - अमरनाथ
5. अधिकतम व्यस्त पुल - हावड़ा ब्रिज, कोलकाता
6. सबसे लम्बा समुद्र तट - मैरीना बीच, (चेन्नई)
7. सबसे बड़ा रिहायशी भवन - राष्ट्रपति भवन
8. सबसे बड़ा पशुओं का मेला -सोनपुर (बिहार)
9. सबसे ऊँचा बाँध - भाखड़ा नाँगल बाँध
10. सबसे बड़ा प्राकृतिक बन्दरगाह - मुम्बई
12. सबसे ऊँची झील - देवताल झील (उत्तराखण्ड)
13. भारत का सर्वोच्च सम्मान - भारत रत्न
14. सबसे ऊँचा टी० वी० टॉवर - पीतमपुरा (नई दिल्ली)
15. सबसे गहरी नदी घाटी - भागीरथी व अलकनन्दा
16. सबसे अधिक मार्ग बदलने वाली नदी - कोसी नदी
17. भारत की सबसे लम्बी सहायक नदी - यमुना नदी

18. सबसे विशाल स्टेडियम - युवा भारती कोलकाता
19. सर्वाधिक वर्षा का स्थान - मासिनराम (मेघालय)
20. सबसे अधिक वनों का राज्य - मध्य प्रदेश
21. मीठे पानी की सबसे बड़ी झील - वूलर झील (कश्मीर)
22. भारत का सर्वोच्च शौर्य सम्मान - परमवीर चक्र
23. सबसे ऊँचा हवाई पत्तन - लेह (लद्दाख)
24. डेल्टा न बनाने वाली नदी - नर्मदा

विज्ञान (रोचक जानकारी-मानव शरीर की)

सिद्धार्थ पोरवाल
सप्तम (क)

1. एक स्वस्थ मनुष्य के शरीर में जितनी चर्बी होती है। यदि उससे साबुन बनाया जाए, तो सात टिकिया साबुन तैयार हो सकता है।
2. मनुष्य के शरीर में इतनी शक्कर पायी जाती है, कि उससे पाँच कम चाय मीठी हो सकती है।
3. मानव के शरीर में लोहे की इतनी मात्रा पायी जाती है, कि उससे एक इंच लम्बी तीन कीलें बनाई जा सकती हैं।
4. मानव के शरीर में इतनी मात्रा में चूना पाया जाता है, कि प्रयोगशाला में दो दिन तक अमोनिया का टेस्ट कर सकते हैं।
5. मानव के शरीर में पाया जाने वाला फासफोरस इतनी मात्रा में होता है, कि उसमें 700 तीलियाँ अर्थात् 14 माचिस के बॉक्स (50 तीली वाली माचिसें) बनाई जा सकती हैं।
6. मनुष्य के शरीर में उपस्थित मैग्नीशियम से एक खुराक दवा बनाई जा सकती है।
7. मनुष्य के शरीर में प्राप्त सल्फर (गन्धक) की इतनी मात्रा होती है, कि उसे जलाकर एक बार मच्छरों को भगाया जा सकता है।
8. हमारे शरीर में इतना कार्बन होता है, कि उससे 100 पेंसिलें बनाई जा सकती हैं।
9. जब हम छींकते हैं, तो मुँह से निकलने वाली वायु की गति 256 किमी०/घण्टा होती है।
10. मनुष्य के शरीर में मस्तिष्क का भार 50 औंस होता है।

प्रसिद्ध पुस्तकें और उनके लेखक

विशाल यादव
सप्तम (ख)

1. एलिस इन वंडरलैंड - लीक्सि कैरोल
2. गुलीवर्स ट्रेविल्स - जोनाथन स्विफ्ट
3. मदर - मैक्सिम गोर्की
4. अर्थशास्त्र - कौटिल्य
5. रिपब्लिक - प्लेटो
6. अरेवियन नाइट्स - सर रिचर्ड बर्टन
7. गीत गोविन्द - जयदेव
8. वार एंड पीस - लियो
9. महाभारत - वेद व्यास
10. दास कैपिटल - कार्ल मार्क्स
11. जूलियस सीजर - शैक्सपियर
12. सेनेटिक वर्सेट - सलमान रुश्दी
13. सेनी डेज़ - सुनील गावस्कर
14. गीतांजलि - रवीन्द्रनाथ टैगोर
15. ए पौसेज टू इंडिया - ई० एम० फार्सटर
16. ब्रोकन विंग - सरोजनी नायडू
17. गोदान - प्रेमचन्द्र
18. हितोपदेश - विष्णु शर्मा
19. चन्द्रगुप्त - जयशंकर प्रसाद
20. माई एस्सपेरीमेंट्सविद ट्रुथ- महात्मा गाँधी
21. पद्मावत - मलिक मोहम्द जायसी
22. अभिज्ञान शाकुन्तलम्- कालिदास
23. उत्तर रामचरितम् - भवभूति
24. वार ऑफ इंडियन इंडिपेंडस- वीर सावरकर
25. सुटेबिल बाय - विक्रम सेठ ❑

सामान्य ज्ञान

शीतांशु भदौरिया
नवम (ग)

महापुरुषों के पिता का नाम

श्रीराम	-	राजा दशरथ
श्रीकृष्ण	-	वसुदेव जी
मुहम्मद साहब	-	अब्दुल्ला
रावण	-	विश्रवा
गुरु नानक	-	कालूचन्द्र
महात्मा गाँधी	-	करमचन्द्र गाँधी
ईसामसीह	-	जोजफ
भरत	-	राजा दुष्यन्त
ध्रुव	-	राजा उत्तानपाद
हर्षवर्द्धन	-	राजा प्रभाकर वर्धन
शंकराचार्य	-	शिवगुरु

भारत के प्रमुख स्थान

लक्ष्मीनारायण मंदिर	-	दिल्ली
संसद भवन	-	नई दिल्ली
चार मीनार	-	हैदराबाद
हावड़ा ब्रिज	-	कलकत्ता
भारत भवन	-	भोपाल
शांति निकेतन	-	कलकत्ता
स्वर्ण मंदिर	-	अमृतसर
गुरुद्वारा सीसगंज	-	दिल्ली
दुर्गियाना मंदिर	-	अमृतसर

❑

साँपों के बारे में रोचक तथ्य

श्रवण तिवारी
अष्टम (ख)

1. विश्व भर में साँपों की 2600 प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
2. विश्व भर में जहरीले साँपों की 450 प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
3. साँपों की 290 प्रजातियाँ मनुष्य के लिये जानलेवा हैं।
4. मरे होने का ढोंग करने वाला साँप हाग्नोज साँप है।
5. किंग स्नेक डर जाने पर फुफकारता है, और पूँछ हिलाता है।
6. सबसे छोटा साँप ड्वार्फ डलाइण्ड स्नेक है, जिसकी लम्बाई 10cm है।
7. सबसे बड़ा साँप रेटिकुलेरेड अजगर है, जिसकी लम्बाई 10.1 मी० है।
8. सबसे भारी साँप हरा ऐनोकोण्डा होता है।
9. सबसे विषैला साँप एन हाइड्रिजन शिस्टोसा होता है, जिसका विष किंग कोबरा के विष से 100 गुना अधिक घातक होता है।
10. किंग कोबरा साँप की औसत लम्बाई 3 मी० से 5.58 होती है।
11. साँपों के प्रति लगाव को ओफियोफिलया कहते हैं।
12. साँपों के प्रति डर को आफिडियो फिबियो कहते हैं। ❑

भारत में सर्वाधिक बड़ा ऊँचा

अमन गुप्त
नवम (क)

1. सबसे बड़ा सड़क का पुल - महात्मा गाँधी सेतु पुल
2. सबसे बड़ा चिड़ियाघर - जुलोजिकल गार्डन्स
3. सबसे ऊँची चोटी - गाडविन ऑस्टिन
5. सबसे ऊँची मूर्ति - गोमलेश्वर
7. सबसे ऊँचा टी० वी० टावर - पीतमपुरा
9. सबसे बड़ा डेल्टा - सुन्दरवन
10. खारे पानी की सबसे बड़ी झील - चिल्का झील
11. सबसे बड़ा गुरुद्वारा -स्वर्ण मन्दिर (अमृतसर)
12. सबसे बड़ा गिरिजाघर - सेन्ट
13. मीठे पानी की सबसे बड़ी झील - वूलर झील
14. सबसे बड़ा तारामण्डल - बिडला प्लैनेटोरियम
15. सबसे लम्बा समुद्र तट - मैरिना बीच ❑

प्रेरक प्रसंग

स्वामी विवेकानन्द जी

आकाश जायसवाल
नवम (क)

जिनके जीवन में, युग पुरुष विवेकानन्द का पाण्डित्य व जीवन की साधना तथा गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिकता का अद्‌भुत सामञ्जस्य विद्यमान था, जिनके जीवन का क्षण-क्षण राष्ट्र पुरुष विवेकानन्द के **''व्यक्ति निर्माण व राष्ट्र निर्माण''** के स्वप्न को साकार करने हेतु समर्पित था, जिनकी त्याग व तपस्या ने असंख्य सपूतों को राष्ट्र भक्ति, समाज-सेवा व समर्पण की प्रेरणा प्रदान की। उन्हीं परम वन्दनीय, परम पूजनीय **स्व० 'श्री गुरु जी'** (माधव सदाशिव राव गोलवलकर) सरसंघचालक रा० स्व० संघ के श्री चरणों में समर्पित युगपुरुष विवेकानन्द के जीवन का एक प्रेरक प्रसंग -

11 सितम्बर, 1893 का वह दिन पावन दिवस आ पहुँचा। शिकागो के मिचीगन एवेन्यू पर स्थित ऑर्ट इन्स्टीट्यूट के कोलम्बस हॉल में उस दिन सर्वधर्म सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन का उद्‌घाटन हो रहा था। मंच पर विराजमान थे- अध्यक्ष डा० बैरोज के अतिरिक्त सेमन कैथोलिक संसार के प्रसिद्ध कार्डिनल गिब्बन्स व संसार के भिन्न-भिन्न धर्मों के विद्वान् प्रतिनिधिगण। भारतीय प्रतिनिधियों में उपस्थित थे, ब्रह्म समाज के श्री मजूमदार मुम्बई के श्री आगरकर, जैन सम्प्रदाय के श्री गान्धी व थियोसॉफिकल समाज की ओर से श्री चक्रवर्ती व श्रीमती एनीबेसेन्ट। हॉल में उपस्थित 6-7 हजार का जन समुदाय उनके विचार सुनने को उत्सुक था। मधुर संगीत की स्वर लहरी में उद्‌घाटन सम्पन्न हुआ, अतिथियों का परिचय कराया गया। स्वामी जी का उस क्रम में 31 वाँ नम्बर था।

एक-एक करके प्रतिनिधि मंच पर आए व अपने-अपने धर्म का परिचय देने लगे। उनकी वक्तृत्व कला, शब्दों का चयन, वाणी का ओज, विचारों का प्रवाह देखकर स्वामी जी हतप्रभ हो गए। क्षण भर को उनका आत्म-विश्वास डगमगाने लगा। नेत्र बन्द करके वे प्रभु से सफलता की प्रार्थना करने लगे। दूसरे ही क्षण उनका नाम बोलने के लिए पुकारा गया। संकोचवश वे बोल उठे, अभी नहीं। बात टल गई। दो तीन प्रसंग आए परंतु वे टाल गए। अंत में अध्यक्ष महोदय से रहा न गया। उनके आग्रह पर आखिरकार उन्हें उठना ही पड़ा।

अपने गुरुदेव का पुण्य स्मरण कर, माँ सरस्वती को शीश नवाकर वह आगे बढ़े। उनका मुखमण्डल दमक उठा व तेजस्विता फूट पड़ी। अपने धर्म व संस्कृति का स्वाभिमान उनकी वाणी से मुखरित हो उठा। विनम्रता उनकी जिह्वा पर विराजमान थी। उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए अपने सहज स्वाभाविक स्वर में वे बोल उठे ''अमेरिका स्थित भाइयो और बहिनो।'' शब्दों का

चयन उनमें छिपी आत्मीयता, विश्व बंधुत्व का भाव व उन सबसे बढ़कर माधुर्य अपने आप में ही विलक्षण था। हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। पूरे दो मिनट तक तालियाँ गूँजती रहीं। स्वामी जी की वाणी में " Ladies & Gentlemen" की केवल औपचारिकता न थी। उनके शब्दों में झलक रही थी अपनत्व की महिमा। ''बहिन'' शब्द की पवित्रता उन अमेरिकावासियों के लिए अनोखी ही थी। इस सम्बन्ध की ओर तो उनका कभी ध्यान ही नहीं गया था। संपूर्ण संसार को एक परिवार मानकर व्यवहार करने की प्रामाणिकता उनकी वाणी में पाकर श्रोतागण गद्‌गद हो उठे। उनके हृदय पर स्वामी जी की अमिट छाप अंकित हो गई।

उनका संक्षिप्त भाषण भी अपने ढंग में अनोखा ही था। संसार की सहिष्णुता, विश्वबन्धुत्व ही था। संसार को सहिष्णुता, विश्वबन्धुत्व का पाठ पढ़ाने वाली, धर्मों की जननी के रूप में हिन्दू धर्म का परिचय देकर उन्होंने संसार के पुरातन राष्ट्र, भारत की संस्कृति, वैदिक युग की साधु परम्परा तथा अपने धर्म की ओर से आयोजकों को बधाई दी। अपने गुरुदेव के श्री चरणों में बैठकर विभिन्न धर्मों की जिस एकात्मता की अनुभूति उन्होंने की थी वही उनके मुख से उस मंच पर मुखरित हो उठी। वह अन्तर्मन को छूती हुई चली गई। श्रोता मन्त्रमुग्ध थे। प्रथम दिन ही अपने प्रथम भाषण में ही सर्वधर्म सम्मेलन के सर्वोत्कृष्ट वक्ता व प्रभावशाली व्यक्ति स्वीकार कर लिए गए। ❑

मोटापा कारण और निवारण

वैभव ओमर
नवम (ख)

पूरी कचौड़ी, चाट, समोसे और पराठे।
तला-भुना खा-खाकर, खूब लगाए ठहाके ।।
परिश्रम करने से, जो जन घबराते हैं।
अधिक देर तक सोते और खूब खाते हैं।।
पाचन होता बन्द, कोलेस्ट्राल जम जाता है।
ऐसा सज्जन निश्चित, मोटा हो जाता है।।
मोटापा नहीं रोग है, है रोगों का घर।
गैस, कब्ज और मधुमेह, या जोड़ो में दर्द।।
या जोड़ों में दंर्द रक्तचाप बढ़ जाता है।
कैंसर, हृदय रोग या दमा पाया जाता है।।
गुर्दे व रीढ़ दर्द का भी, कारण इस को जान।
इनसे बचने के लिए, करो मोटापे का कल्याण।।
काम करो कुछ अन्न, सलाद चबाकर खाओ।
नींबू, शहद, कुञ्जल-क्रिया, अनिमा अपनाओ।।
आसन पवन मुक्त करो पश्चिमोत्रान।
नाड़ी शोधन, मस्तिका, उज्जायी प्राणायाम।।
सूर्य-नमस्कार व सर्पासन अपनाओ इनके संग।
नियमित इनके अभ्यास से, मोटापा होगा भंग।। ❑

नदियों पर बसे विश्व के प्रसिद्ध नगर

विशाल यादव
सप्तम (ख)

नगर		नदी	ब्यूनस आयर्स	–	लाप्लाय
ओटावा	–	सेर लॉरेस	बर्लिन	–	स्प्री
कहिरा	–	नील	मैड्रिड	–	मैजनियर
करांची	–	सिन्धु	मास्को	–	मस्कता
कोलम्बो	–	केलानी	टोकियो	–	सुमीदा
डबलिन	–	लीफे	रंगून	–	इराबदी
न्यूयार्क	–	हडसन	रोम	–	टाइबर
पेरिस	–	सीन	लंदन	–	टेम्स
प्राग	–	ब्लटाना	लाहौर	–	रावी
पर्थ	–	स्वान	लिस्बन	–	टेगर
बगदाद	–	टाईग्रिस	वाशिंगटन	–	पोटोमेक
बेलग्रेड	–	डेन्यूव	शंघाई	–	यांगटिसीक्यांग
बुडापेस्ट	–	डेन्यूब	सैंट लुइस	–	मिसीसिपी

विज्ञान से जुड़ी कुछ जानकारियाँ

प्रशान्त सिंह चौहान
अष्टम (क)

- पानी में ध्वनि की चाल 1948 मी०/सेकेण्ड होती है।
- काँच में ध्वनि की चाल 500 मी०/सेकेण्ड होती है।
- स्टील में ध्वनि की चाल 500 से 600 मी०/सेकेण्ड होती है।
- पारे में ध्वनि की चाल 1148 मी०/सेकेण्ड होती है।
- गैस सिलेंडर में गैस का रिसाव पता करने के लिए एथिल मरकैप्टन (C_2H_5SH) डाला जाता है।
- हीरे के बाद सबसे अधिक कठोर पदार्थ **कार्बोण्डम (Sic)** होता है।
- मीथेन को **मार्श गैस** भी कहते हैं।
- एक स्वस्थ व्यक्ति दिन में 22000 बार श्वास लेता है और इस प्रक्रिया में लगभग 16Kg. वायु का प्रयोग करता है।
- कुलीनान हीरा अभी तक तौला गया सबसे बड़ा हीरा है, जिसका भार 3025.75 कैरट है।
- भारत में पहला तेल कुआँ माकुम (असम) में 1867 ई० में खोदा गया।

आधुनिक छात्र

गीतांशु सिंह
सप्तम (क)

बचपन में मैंने जब शोधकर्ता शब्द का नाम सुना तो एक जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि मैं भी किसी विषय पर शोधकार्य करूँगा। फिर विद्यालय में धीरे-धीरे सप्तम कक्षा तक मैंने शोध तो पूरा नहीं किया परन्तु लघु शोध अवश्य पूरा कर लिया।

इतिहास- 19 वीं सदी में मध्यान्तर से आधुनिक छात्र के इतिहास का आरम्भ होता है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इस छात्र व प्राचीन काल के छात्रों में किसी भी प्रकार की समानता नहीं पाई गई है।

प्राप्ति स्थान- इनकी विशेष उपस्थिति की संभावनाएँ सिनेमागृहों जलपान गृहों तथा नगरीय उद्यानों में रहती हैं। यदाकदा स्कूलों महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में मिल जाते हैं।

भौतिक गुण- 1. लम्बे, पतले, मोटे, ठिगने सभी रूपों में पाए जाते हैं 2. आधुनिक फैशन के सुचालक व अच्छी आदतों के कुचालक। 3. पुस्तकों के समीप लाने पर दूर भागते हैं।

रासायनिक गुण- 1. जबान पर कुवाच्य शब्दों का संचरण। 2. सिनेमा गृहों के प्रति तीव्र आकर्षण युक्त होते हैं।

पहचान- सिर पर घने रंग-बिरंगे बाल, सूखे गाल, आँखें धँसी होठ सिगरेट से काले एवं आधुनिक वस्त्रों से युक्त सरलता से पहचाने जा सकते हैं।

उपयोग- चुनाव प्रचार हेतु, परीक्षा में नकल कराने हेतु मारपीट एवं दंगों में प्रयुक्त होते हैं।

❑

भ्रष्टाचार

सत्येन्द्र सिंह यादव
सप्तम (ख)

स्कूटर पर सवार
कल रात मुझे मिल गया भ्रष्टाचार
मैंने कहा भाई साहब नमस्कार
वह बोला फरमाइए
मेरे योग्य कोई सेवा हो तो बताइए
मैंने कहा बन्धु
इस देश को चालीस साल से चर रहे हो
कानून से बिल्कुल नहीं डर रहे हो
मेरा यह प्रश्न सुनकर
भ्रष्टाचार कुछ सोचने लगा
सोचते-सोचते अपने बालों को नोचने लगा
फिर धीरे से मुँह खोला
भाई साहब यदि हम यहाँ से प्रस्थान कर जाएँगे
आधे से ज्यादा पुलिस वाले भूखे मर जाएँगे
और इस शस्य श्यामला भूमि को छोड़कर नहीं जा सकता
मैंने कहा अबे भ्रष्टाचार, वापस कर मेरा नमस्कार
सोच ले जिस दिन आजाद और सुभाष के देश का नया खून जागेगा
उस दिन तू क्या तेरा बाप भी भागेगा
और यदि किसी दिन किसी आतंकवादीकी नजर में आ जाओगे
भगवान कसम गोली से उड़ा दिए जाओगे
इतना सुनते ही भ्रष्टाचार भड़क उठा
बोला भाई जी जवान को ताला लगाइए
बहुत हो चुका अब अपनी औकात पर आइए
जानते नहीं मैं सर्वव्यापी हूँ
परमात्मा की कार्बन कापी हूँ
कुर्सियों की नस-नस में बसा हूँ
इसलिए यदि आप मुझ पर गोली चलाएँगे
तो देश के बड़े-बड़े लोग ही मारे जाएँगे
आप मेरा तो कुछ नहीं बिगाड़ पाएँगे
क्योंकि जिस देश में आदमी स्वार्थ की हवा से इतना फूल गया है।
और कायरता का नाम जवानी हो गया हो
उस देश को भला तुम कैसे जगा सकते हो
लाख पन्द्रह अगस्त मनाओ मुझे नहीं भगा सकते हो
जब उसको भगाने का कोई तरीका काम न आया
तो हमने लोकतांत्रिक तरीका अपनाया और कहा
भ्रष्टाचार जी जब तक आप देश से बाहर नहीं जाते
हम अपनी जगह से नहीं हिलेंगे
भ्रष्टाचार बोला खड़े रहो
अगले वर्ष फिर मिलेंगे।

मुझे इनकी माँ को निपूती नहीं बनाना

नैना
षष्ठ (ग)

द्रौपदी के पाँचों पुत्रों की लाशें पड़ी थीं। उसके आगे सभी पुत्र मारे जायें इससे बढ़कर उसके लिए और कौन- सा दुःख हो सकता है?

अर्जुन अश्वत्थामा को पकड़ लाये। भीमसेन गरजे - 'हमारे बेटों को मारनेवाले इस दुष्ट का सिर तत्काल उड़ा देना चाहिए'।

तभी दुःख से व्याकुल द्रौपदी सबके बीच आ खड़ी हुई। बोली मैं तो निपूती बनी ही पर गुरु पत्नी को मैं निपूती नहीं बनने दूँगी। बेटे के मरने का दुःख माँ ही महसूस कर सकती है। माना इन्होंने हमारे बेटों को मार डाला पर इन्हें मारने से इनकी माँ को कितना दुःख होगा यह मैं समझ सकती हूँ। इसलिए इन्हें छोड़ दो।

पुत्रों की हत्या करने वाले को जो भी क्षमा कर दे, उसकी सहनशीलता का भी कोई पार है, धन्य द्रौपदी की यह शानदार क्षमा। ❑

ज्ञान सूत्र

अंकित मिश्र
नवम (ख)

मरण क्या है? - मूर्खता

जीवन भर काँटों की तरह क्या चुभता है? - छिपकर किया गया कार्य (पाप)

बहरा कौन है ? - जो हित की बात नहीं सुनता।

मूक कौन है ? - जो समयानुकूल बात बोलना नहीं जानता।

राज्य क्या है ? - आज्ञा का पालन होना।

अमूल्य क्या है ? - समय पर किया हुआ दान।

दरिद्रता क्या है ? - असंतोष ।

विष क्या है ? - अपयश ।

सुख क्या है ? - परदेश न जाना।

❑

Editorial

Mrs. Rekha Nigam
Lecturer in English

In fact there can never be nation which has not any problem to face. The more vigorous the national life the more pestered must we be with our problems. To have problem is the expression of a vigorous life where there is no problem there these the community has decayed and nation is dead. A problem becomes a problem when we do not know the solution. The modern youth is very much suffering from this problem phobia all over the world. So out stretched hands should be ready and willing to lift all intelligent young hearts from this dirt and filth. This is the time when religion must march out of the forests and temples, churches and mosques, Gwudwaras in to places where man is striving in his despair and turning sour in his incorrigible synicism and impossible dis illusionments.

Each individual must come to accomodate others and learn to come together and then only can society stand up and lead the age to a glorious era.

India's youth need a leader and an institution to guide and inspire them. The Indian leaders are expected to be the vehicle to moblise the young people for a brighter future. Bright and passionate Indian students often steer clean of participating bureaucracy that plagues the political machine

Dirty politics and deteriorating moral standard of our modern leaders have defamed this great nation.

Our country is facing the problem of casteism, communalism and regionalism which have divided the people into many groups. And from time to time there have been quarrels, riots, strikes and demonstrations in the whole country resulting in a great loss of public and government property.

O Reader! Strive! you are the vigilant citizens and rulers of tomorrow so it is your foremost duty to bring transparency and to establish an honest administration. You have to make the future of the country safe you have to fight against corruption, selfish motives, dishonesty, lawlessness and other evils. Only then we will be able to full fill the aims and intentions of our founders and Deen Dayal Plateform ❑

Careers After Class - 12

Mrs. Rekha Nigam
Lecturer in English

- Aeronautics
- Air force
- Air Hostess
- Architecture
- Astronomy
- Ayurveda
- Beauty Care
- Bioinformativ
- Coll Centers
- Chartered Accountancy
- Chemical Engineering
- Civil Engineering
- Civil Services
- Commercial Pilot
- Dancing
- Dairy technology
- Dentistry
- Electronics Engineering
- Event Management
- Fashion Technology

Large member of educated young men today are only for office work. This is the fault of the defective education. The increasing number of educated young men every year makes the problem of un employment very serious. If during their education they are guided properly the problem will not be severe. A lowly beginning and a humble origin are no bar to a great career.

Deciding a career after finishing basic schooling or class XII (10+2) is one of the biggest challenges for both the students as well as the parents. Resently there are number of options open for children also for those who wish to pursue something else at the later point in their life. But with tremendous growth in career option, there has been a tremendous growth in competition to secondly chances are hard to come by, and even if they do a lot of time is wasted and hence people try to get it right in first shot.

Point to consider while choosing a career.

According to the relevant need and condition -

In other words, what are the monetary benifites, that you are going to derive from the career, since this is going to be your lively hood and means of sustenance. This option ranks very high in the youngsters between age group of 16 and 35.

- **Job or work satisfaction :** This aspect is often not realized by the student who do not have any work experience and it is only later on in life when they find that the work they are doing does not satisfy them mentally or is not suited to their liking for whatever reason.
- **Aptitude :** While one may wish to become an

- Film Making
- Fire Engineering
- Fisheries- science
- Floriculture
- Foseign Language
- Forensic Science
- Forestry
- Gemology
- Genetic Eng.
- Hotel Management
- Indian Army
- Industrial Eng.
- Insurance
- Interior Designing
- ICWAI
- Journalism Law
- Librarianship
- Mechanical Eng.
- Medical Transcription
- Medical Heb Technology
- Medicine
- Merchant Navy
- Modeling
- Music
- Nursing
- Nutrition
- Oceanography

actor. but does not possess the requisite acting skill, then it is foolhardy to try for such a career, since perform well and achieve your goal. Though this should not be taken as discouragement, however it is often best to have a fair opinion about your skills from someone close or even a trained psychologist, who may help you in choosing the best career from the available career option.

• **Liking :** This is one aspect which is often weighted down while comparing with other aspects and it is only later in life, normally during the 40's often this happens because the career of your choice is not highly paying or at the time of your choice that particular career is in demand but later on the things change and you find yourself stuck with career that is not in demand but also not to your liking.

Choose your friends career : This mistake is often made by students who are often influenced by their friends and how they advise them and consequently start their studies in a particular stream only to change often a year or so due to reason such as degree of difficulty in understanding the subject or not finding it interesting. Hence one should try to stick to one thing, not taking in consideration whether one's friends are going in for a stream, but what he or she is interested in. Changing stream later is not a good option. Even though it has to be done.

Choosing a career of your parents choice : Both parents and their children seem to be confused. Eventually, there is a conflict of interest. Even though in today's world parents are being open minded and exploring more and more options. Majority is still suffering from same problem, and that is. "One day my child will become a doctor, an engineer, a scientist or a lawyer." Majority of parents

- Occupational Therapy
- Optometry
- Pharmacy
- Photography
- Photonics
- Physiotherapy
- Prosthetics & Orthotics
- Psychiatry
- Phychology
- Public Relation
- Radio Graphy
- Radio Jockey
- Securities Analysis
- Speech Pathology & Audiology
- Static tea management
- Teaching
- Technical Writing
- Trave and Tourism
- Veterinary Science
- Video editing
- Video Jockey

follow this rule, not realizing that their children can not if they can not. Its not everybody's cup of tea to pursue. One of these professions if they can not.

Leading a balanced life : Also in today's world studies are not the only thing in one's life. Studies are important but so are co-curricular activities. One must do well in sport too, if he or she is to do well in life by maintaining a balanced one. Having a balanced life is also important, for the sake of studies. If one attains balance in life, nothing becomes impossible for that person. A good frame of mind is important to succeed in life. If you do not bad balanced life you will not only waste a lot of time & money but would not be able to perform that one realizes and wants to switch over to a totally different career of one's liking.

After class12 one should pursue a career in whatever he or she takes interest in. Nothing is & big or small, if it is done well. Keeping these points in mind various career options after class 12th have been listed. Explore these to have a better understanding of the career and what they entail.

Another important factor in choosing your career is to workout the financial implication year wise and see if it is within the capacity of your family beside other regular expenditure. If you want to have loan from bank, assure that you fulfill all condition of the bank for grant of the loan so that after wards you may not be in trouble if banks refuse for the same.

Also while choosing please insure that you are capable of handling all the subject & practical work and these are to your interest. If you are not confident, go for a diploma instead of a full degree course.

Our best wishes are with you.

❑

CAREER OPTIONS AVAILABLE OF STUDENTS AFTER 10+2

Science Stream (Physics, Chemistry & Mathematics)

Engineering : The core engineering are Electrical, Mechanical, Chemical other branches that are offered by most engineering colleges are electronics & communication, Computer science & Engineering, Information technology and electronics & Instrumentation.

There are a few upcoming specialized branches like Petroleum Engineering, oil & paint technology, Aerospace Engineering, Bio-Medical Engineering, Marine Engineering and so on.

Entrance exam conducted nationally are AIEEE, JEE leading to admission in to IIT's and the NIT's

Architecture : This is a four year programe leading to B Arch degree.

Fashion Designing & Interior Designing : The duration of these courses could vary from 1-4 years depending on the course i.e. certificate. Diploma or Degree. There are other option open to students passing with PCM and they may decide to switch over to commerce or Humanities field if they so desire

Core science - B.Sc. (Hons) in Physics, Chemistry or Mathematics.

Science stream (Physics, Chemistry & Biology) :- Medical, Pharmacy, Bio-chemistry, Bio technology.

Medical Entrance exams conducted nationally are CPMT conducted by CBSE other exams conducted are AFMC (Pune) and all states hold their respective PMT's. The five year course leads to a MBBS degree and four year course in pharmacy leads to a B. Pharm degree.

Home Science : A three year course leading to a B.Sc (Home Science) degree followed by specialization at the post graduate level in child psychology, Nutrition etc is a good career option.

Physiotherapy : Physiotherapy is a good option for women who wants

to work as and when convenient.

Commerce Stream : Among the professional course available as choices are CA, ICWA & CS. The respective Institutes conduct entrance exams for admission into these course like CPT etc. These course are not time bound but normally a student can complete the course in 4-5 year duration. The result would normally depend upon the approach and the effort a student follows in preparation.

Humanities stream : Mass communication & Journalism Law 5 year integrated programe leading to B.A. L.L.B. dual degree.

The student can opt for graduation in Arts subjects like Economics, Psychology, Political science, Sociology, History, Geography and Philosophy. A graduation followed by PG and a fellow Degree can be a lucrative career option as a teacher. Alternately, these subject can be taken as a optional subjects in civil services examination.

BBA : A three year programe followed by MBA can be good choice.

Hospitality Management/Hotel Management/Tourism:- The hospitality industry offers wide ranging opportunities in India and abroad because of increasing demand of quality.

The Top 10 steps for choosing a career category:- Career choices may be more difficult today than at any time in history for three reasons. There is infinitely more to choose from; career definitions are more fluid and changing, and the levels of expectations are rising. Most men & women entering the work force today can expect to change careers three or more times during their working lives. Here are ten steps that will help be ensure that your choices are good ones.

1. Begin with your values : What's really important to you? What turns you on? What do you like to do so much that you would almost feel quality paid to do it? These questions are designed to help you get at one of the key elements in.

Career choice : Values your values are the emotional anchor of all that

your do. Satisfying career are built upon the nation of a high correspondence between one's personal values and the work they will be doing. Begin your career search by sorting out your values and writing them down as clearly as you can.

2. Identify your skills and talents : A skill is something you have learned to do. A talent is something you have been born with, or at least that you seem naturally qualified to do. It's important to recognize the difference between the two. You may be skilled at something there will be a correspondence between that particular talent and your values. Put another way-you are more apt to enjoy, doing what you do well naturally than what you have simply been taught to do.

3. Identify your preferences : From early on, we approach the world with certain personal preferences how we percieve others, how we think and make decisions, whether, we prefer concept over people or vice versa and the extent to which we are comfortable with uncertainty in our lives. For many these preferences operate at a subconscious level but they strongly influence the way we function with others. Some questions may help. Do you regard yourself as highly intuitive? Are you outgoing or reserved? When faced with a decision, do you rely primarily on facts or feelings? Your answers to these questions can tell you much about the kinds of work you will find.

Interesting and challenging :- One way of sorting this all out is by taking the Myers-Biggr Type Indicator a self assessing instrument that helps clarify these issues. If you haven't taken it in the past year or at all.

I strongly recommend that you take it and include your result in your career deliberations.

4. Experiment : There is no substitute for experience, the better. It is probably safe to say that nearly every career looks quite different from outside than from within. If you are new to the job market or if you are considering a career change get out and talk to people who are actually doing it take a job in the field industry and see for your self if it is really all you thought it would be. And don't rely on a single authority.

Work experience within the bounds of the area you picked, try to get as much and as varied experience as you can If you are committed to find out about a certain career you may want to consider volunteering in order to gain work experience. The way you will be able to test out whether it is of your first value and preference. If you are not getting paid to do it, you would not stay with it unless you like it.

5. Become broadly literate : In this high tech information world there is an incredible pressure to specialize, to know more and more about less and less. That is dangerous because it increases your chances your chances of being obsolescent immensely. Many people lose their jobs and settle their career because they have gradually developed tunnel vision about who and what they are and what their capabilities are. The old debate over specialist versus generalist is being tempered by a new term. The generalist specialist. That's the individual who has been able to grasp the large picture while at the same time becoming expert on several of its parts. That's what becoming broadly literate is all about. Learn as much as you can about what interests you about the job and career you are considering not just what those involved are currently doing but about where the industry or profession is heading.

6. In you are first job opt for experience first money second.

If your at the top of your class graduating summa cum laude, you may be able to combine both in a single package but for most you entrants into the workforce, it is a matter of priorities. A good way of sizing up several opportunities is to ask yourself. "Which position will offer me the best chance of becoming excellent at what I do?" And that may not be the one that pays the highest initial salary.

7. Aim for a job in which you can become 110% committed : Modest decication and overage performance are unacceptable today. The problem is with downsizing fully acceptable you are not likely to discover the truth of that statement until you are out of job. So how to protect yourself ? If you are not able to commit 110% to what you are currently start now to find

something in which you can.

8. Build your lifestyle around your income not your expectations. Recruiters are famous for courting desirable applicants with promises such as why is two years, you could be making thousands of dollars. The problem is that many new entrants into the job force buy into line and begin living as thought they were making the kind of money promised in two years. A better way is to right with your first job to structure your lifestyle in such a manner that you can put away ten percent of every paycheck starting early and investing regularly and wisely are probably two of the greatest reset of wealth accumulation.

9. Invest five percent of your time, energy and money into furthering your career. In terms of a forty hour week that only two hours per week. The point is you can not rely on your employes to spoon feed you.

Employees today are oriented towards immediate return on their dollar. They will invest in you only when they can see an immediate or relatively quick expensive benefit pr when they see extraordinary potential Better to not count on either. Dedicate your self to getting a head by keeping ahead and you do that be controlling the one thing you can control. Your dedication to being a best that you can be.

10. Be willing to change and adapt. If you're-read the preceding steps in the list you will note an absence refreshing. I hope of emphasis upon goal-setting an a sulrtetution instead of ward like "values" "skills" "talents" and "preference". It is not that goals are not useful, but rather that they should emerge naturally from the other factor and even though you may write them down and paste them on your mirror, they should not observe the need to be willing to change an adapt to new conditions. Your own growth and developing opportunities the destination here is between "direction" and "plan". An ant has a direction but not a plan. The ant knows where it wants to go and its willing to turn around, backup, and change course and order to get there. But the ant written it down, ported it on a bulletin loard or gaenied concurrence from all the other ants. The ant just knows with absolute lestainity the general direction in which it is heading and that it WILL get there. That's what modern day career direction is all about.

All the Best

Mother Teresa

Anuj Omer
7th (A)

It would be indeed difficult to find a person who has not heard the name of Mother Teresa.

Mother Teresa was born on 27th August, 1910 in Yugoslavia. He name was Agnes Gonxha Bajaxhim. She Joined the Loreto Convent at the age of 18th and became a nun. She took up the profession of teaching at Darjeeling and later at Entally (Kolkata).

She taught Geography from 1929 to 1948 at St. Mary's High School in Loreto Convent, Kolkata. She established a new order of her own called the "Missionaries of charity" Mother Teresa and the other nuns working with her led a very simple life.

Mother Teresa was awarded the Nobel Peace Prize in 1979. She was also awarded 'Bharat Ratna' the highest award of India in 1980.

She died in Kolkata on 5 September, 1997. ❑

Sarojini Naidu

Kartikey Pratap Singh
6th (C)

Sarojini Naidu was a great woman. She was social reformer a great poet and an orator. She was very bold and fearless.

She was born at Hyderbad on 13 Feb. 1897, Her father's name was Dr. Aghorenath Chattopadya. Her mother's name was Varad Sundari. He mother and father came from Bengol and lived in Hyderabad for long time.

Sarojini saw a mixture of cultures at her home. Scientists politicians congress workes, Nawabs and Begums Visited her home. ❑

The Biological Effect of Music

Aditya Kumar
7th (A)

The effect of music on growth of plants, lactation of cows and the calming effect on the patients has been studied experimentally in various labs.

Classical music of certain Ragas has a lot of effect in curing patients as claimed by many person. As aesthetic play of light and colours which are just photons of different wavelength, intensities, distributions have a known effect on making a person happy. This is the effect of Natural beauty.

The mind has been the subject of study since long. However, unless the scientists are able to identify quantitatively the effect of various senses on the mind. The brain activity of the brain as measured by metabolism of glucre is found to be associated with concentration of 18 F. The scanning photo graphs given by krane (Plate 3, John Wiley, 1998) shows a surprising result.

If one studies the effect of food on mind as seriously as the effect of food on body, one can come up with a lot of scientific facts which could be surprising and this could be very useful for unleashing the potentialities of man.

❑

Place

Shitanshu
9th (C)

Place, Place
Where is place
In the world today
Bombs are dropped
In the name of place
Why do we fight?

I asked
To maintain place
was the reply
place for what
to live or to die.

❑

Dreams come true!

Shitanshu
9th (C)

Dreams come true
This is my view
It you work hard
With one guard
Then you will achieve success,
And will be selected
In every competition.
If you utilize your vocation.
If you march forward with an aim,
You will to be an engineer
or a great player.
And I want you to do the same dear,
For our future will be decided next year.

What is Life

Rishabh Yadav
6th (C)

Life is Drama,
Human beings are actors
All play their roles,
Leaving result on God
God is the Judge.
Life is a game
Human beings are players
God is referee,
The game is begun by Him
Players are selfish.
They desire to win.
But they never think
About their deeds.
Judge gives Judgement,
Keeping all types of proofs witnesses
Life is controlled by God.

विदाई-समारोह में
उपस्थित विद्यालय के
सचिव मा० श्री वीरेन्द्र जी
श्री योगेन्द्र भार्गव जी
प्रधानाचार्य श्री प्रकाश जी
आचार्य श्री राजेश जी

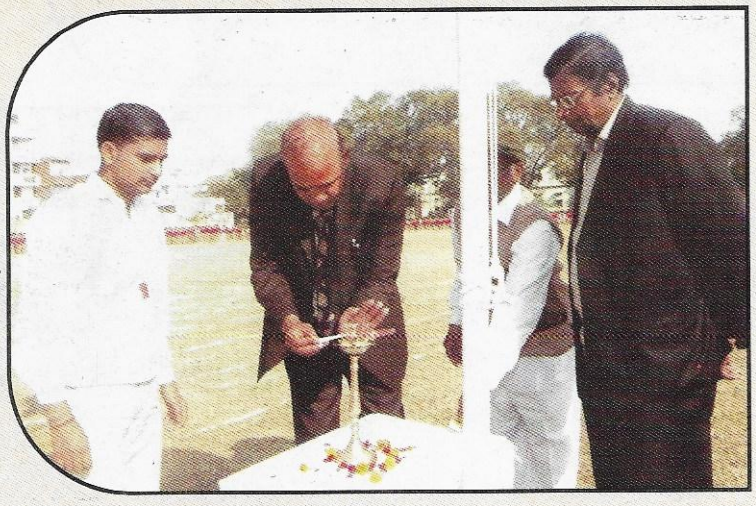

वार्षिक खेलकूद का दीप
जलाकर उद्घाटन करते हुए
मुख्य अतिथि वी० एस० एस०
डी कॉलेज के क्रीड़ा-विभागाध्यक्ष
डॉ० ऋषिपाल सिंह,
प्रधानाचार्य श्री प्रकाश जी

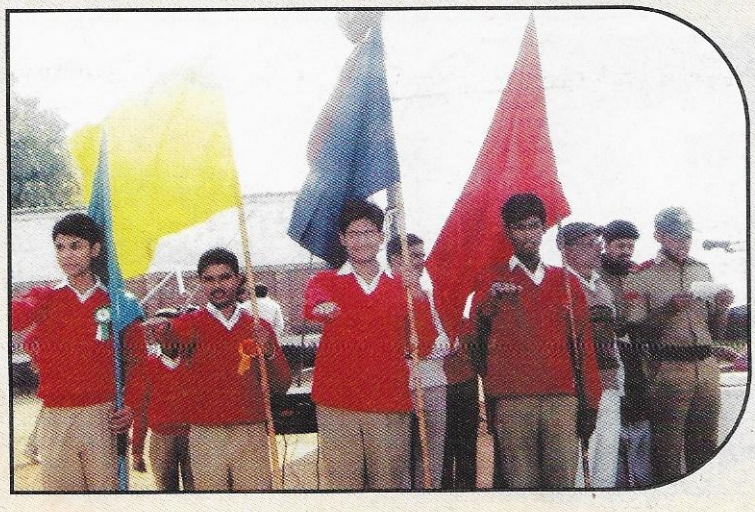

खेलकूल के उद्घाटन अवसर
पर शपथ लेते हुए कुंज
प्रमुख छात्र

वार्षिक खेलकूद

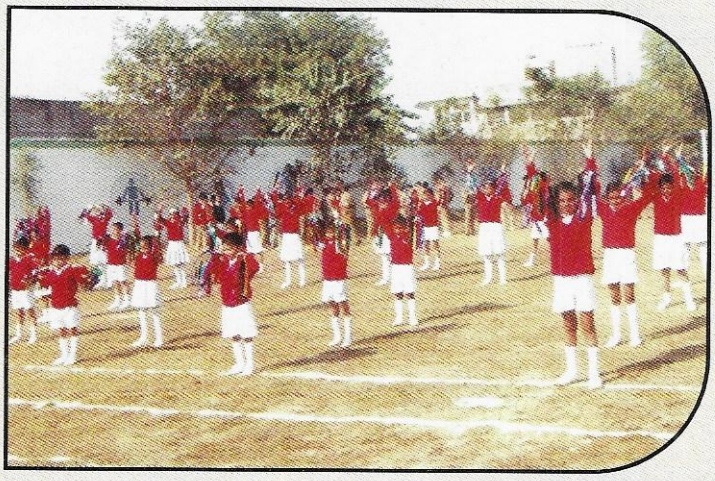

वार्षिक खेलकूद में योग प्रदर्शन करते विद्यालय की प्राथमिक कक्षाओं के छात्र

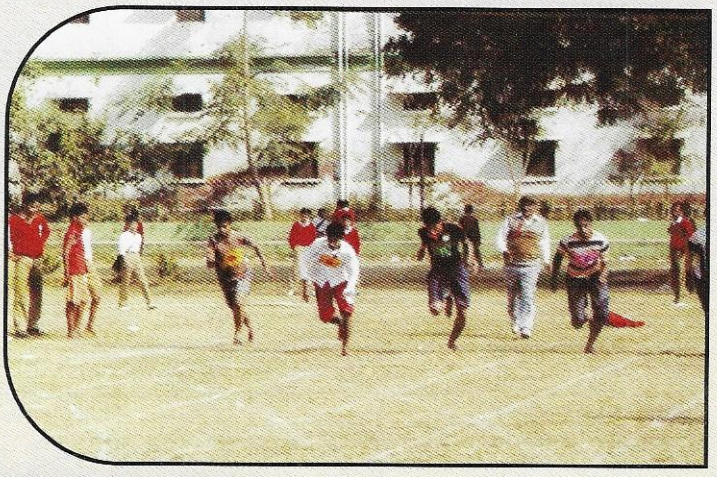

सौ मीटर दौड़ में अभिमन्यु दल के छात्र

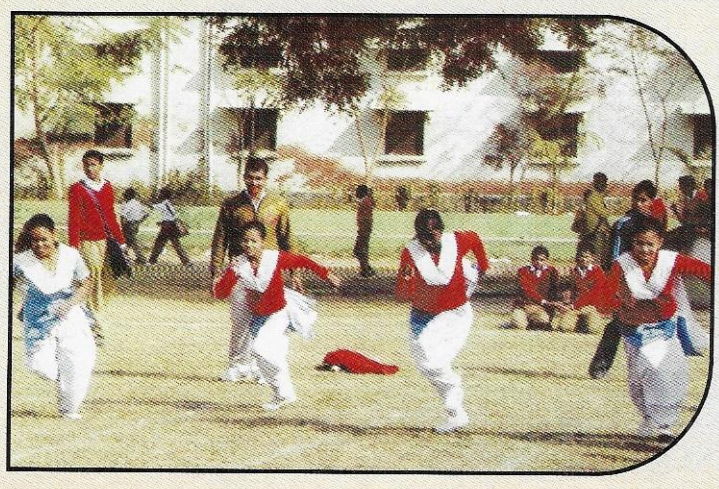

पचास मीटर की दौड़ में भाग लेती विद्यालय की छात्राएँ

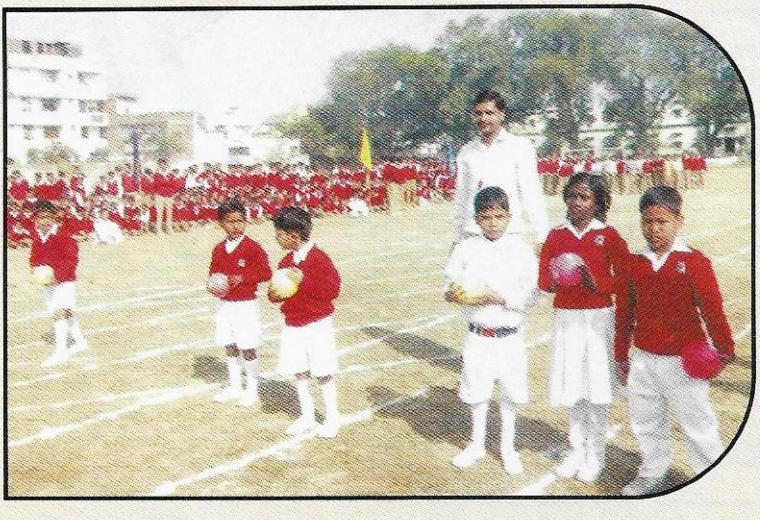

कन्दुक दौड़ में कक्षा
प्रथम के शिशु

ध्रुव दल की तीन टाँग की
दौड़ में भाग लेते छात्र

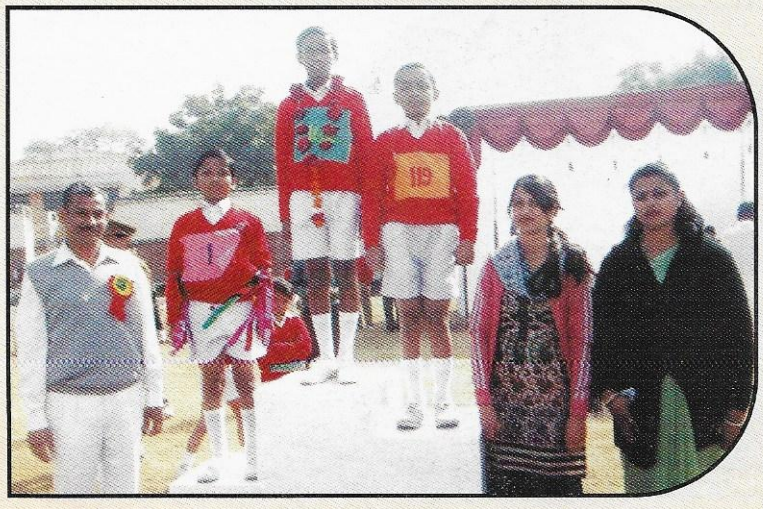

बाल-वर्ग की पचास मीटर दौड़
में विजेता छात्र विजय-स्तंभ
पर खड़े हैं, साथ हैं उनकी
कक्षाचार्या श्रीमती स्मिता जी,
तृप्ति प्रेम जी तथा
आचार्य श्री हेमन्त जी

एकलव्य दौड़ के चैम्पियन दीपक सचान (दशम ख) को पुरस्कृत करती हुई मुख्य-अतिथि श्रीमती कमलेश अवस्थी, साथ में प्रधानाचार्य श्री प्रकाश जी

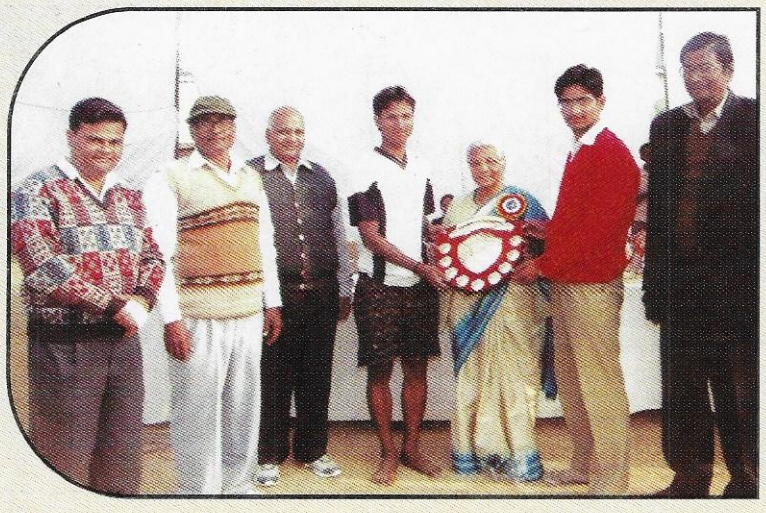

वार्षिक खेलकूद में सत्य कुंज 174 अंक लेकर प्रथम स्थान पर रहा। इसके विजेता छात्रों को पुरस्कृत करती हुई मुख्य अतिथि श्रीमती कमलेश अवस्थी, साथ में प्रधानाचार्य जी तथा अन्य शिक्षक गण

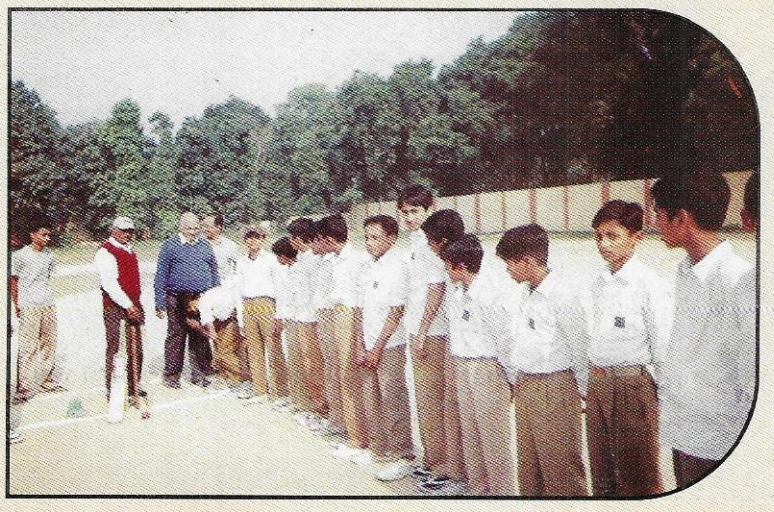

ध्रुव दल की क्रिकेट टीम आचार्य श्री महेश जी तथा आचार्य श्री सुभाष जी से आशीर्वाद लेती हुई।

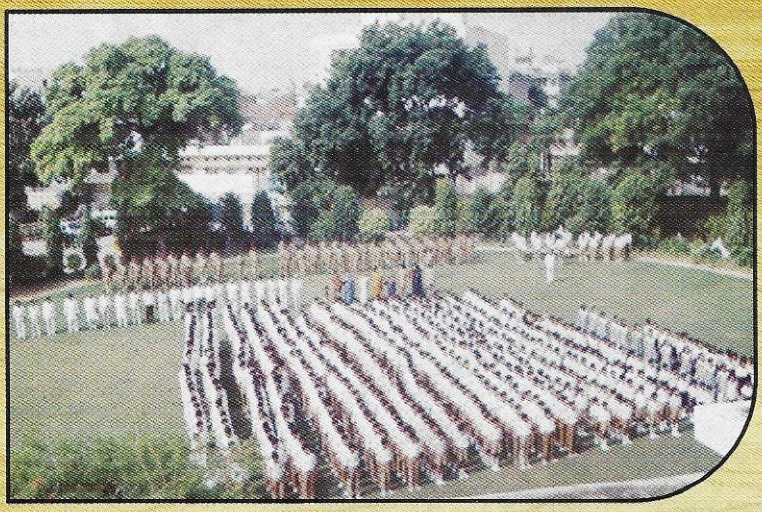

स्वतंत्रता दिवस के प्रभातकाल में गोल प्रांगण में एकत्रित छात्र-समूह, शिक्षक-वृंद, एन० सी० सी० तथा घोष के छात्र

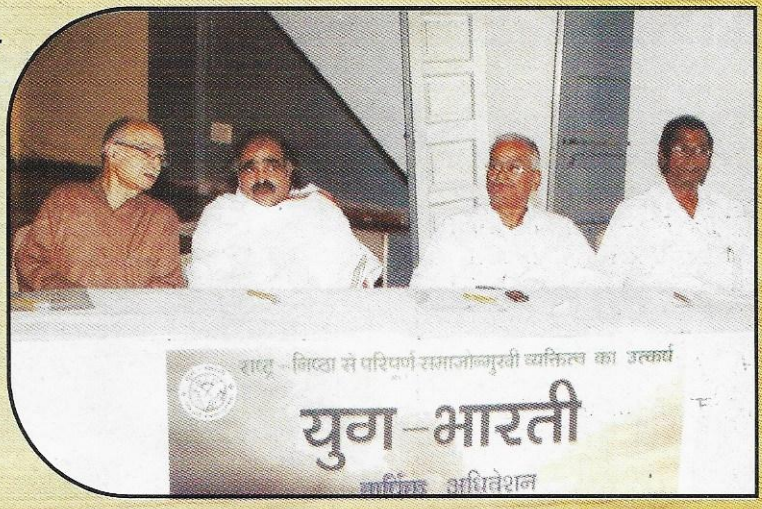

युग भारती के वार्षिक अधिवेशन में विद्यालय-प्रबंध समिति के सचिव श्री वीरेन्द्रजीत सिंह जी, मुख्य अतिथि समाजसेवी, विकास भारती के संस्थापक श्री अशोक भगत जी, पूर्व प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर त्रिपाठी जी तथा वर्तमान प्रधानाचार्य श्री प्रकाश जी

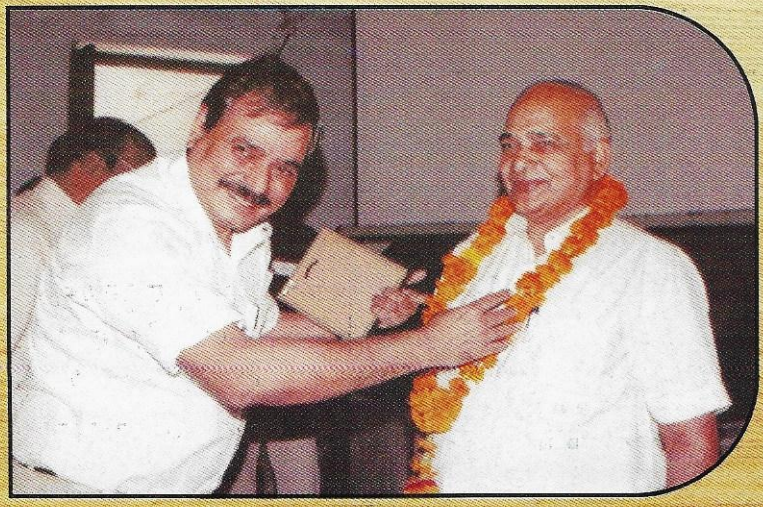

युग-भारती अधिवेशन में आचार्य श्री महेश जी का सम्मान करते हुए 1985 बैच विद्यालय के पूर्व छात्र, न्यूरो सर्जन डॉ० अमिताभ मिश्र

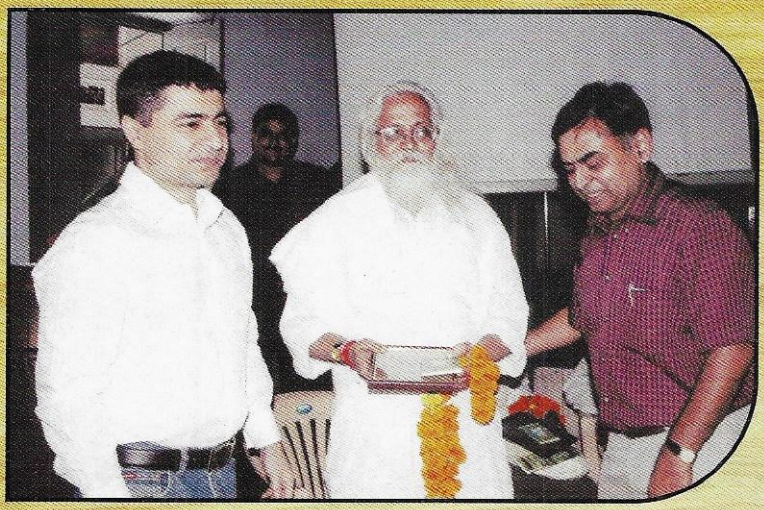

युगभारती अधिवेशन में आचार्य श्री दीपक जी को सम्मानित करते हुए 1985 बैच के पूर्व छात्र अभियंता श्री समीर राय तथा विद्यालय के सह सचिव मा० श्री यतीन्द्र जीत सिंह जी

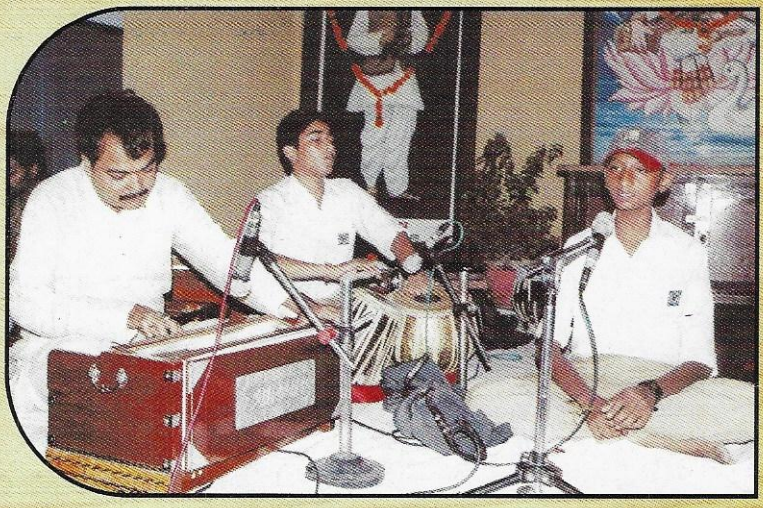

राष्ट्रीय गीत-गायन प्रतियोगिता में गायन करते हुए नवम के छात्र नयन वाजपेयी, तबले पर सुयश शुक्ल तथा संगीताचार्य श्री अंकुर जी

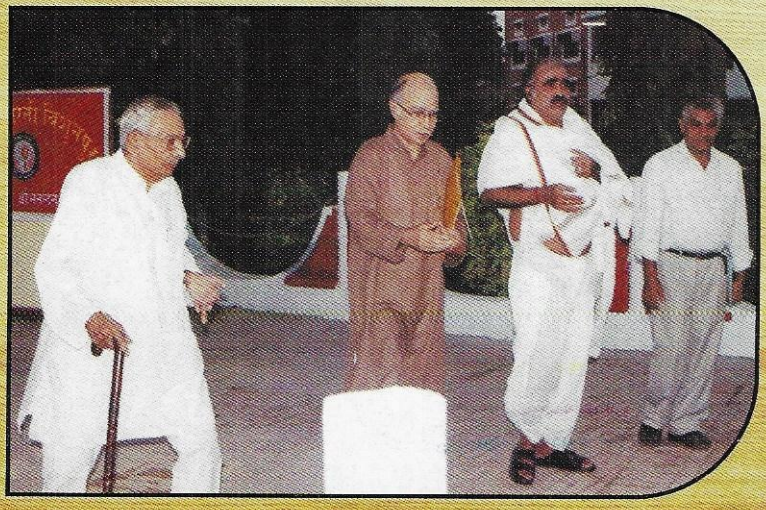

वार्षिकोत्सव के अवसर पर कार्यक्रम स्थल की ओर प्रस्थान करते हुए मुख्याभ्यागत श्री अशोक भगत जी, मा० श्री वीरेन्द्र जी तथा वयोवृद्ध पं० रामबालक जी

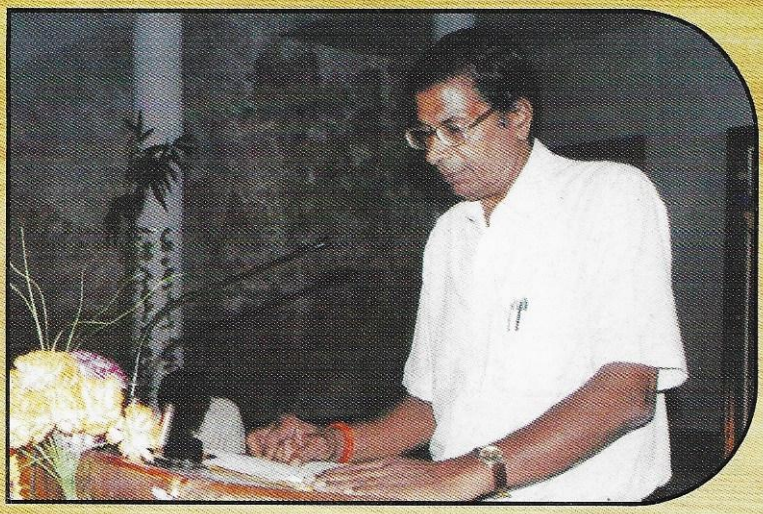

वार्षिकोत्सव में विद्यालय की
वार्षिक आख्या पढ़ते हुए
प्रधानाचार्य श्री प्रकाश जी

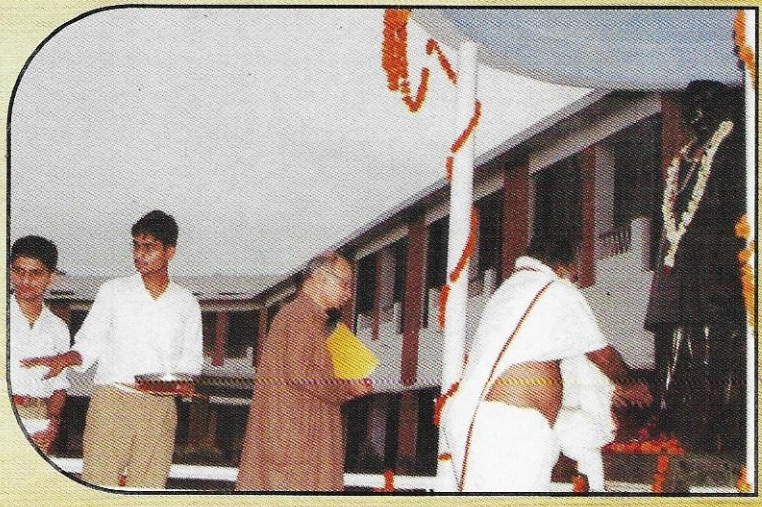

युग-पुरुष पं० दीनदयाल उपाध्याय जी
की प्रतिमा पर पुष्पार्पण करते हुए
मा० अशोक भगत जी,
मा० वीरेन्द्र जी
तथा देवेश और प्रणव

चि० मोहित (एकादश 'क')
को पुरस्कृत करते हुए
मा० अशोक भगत जी

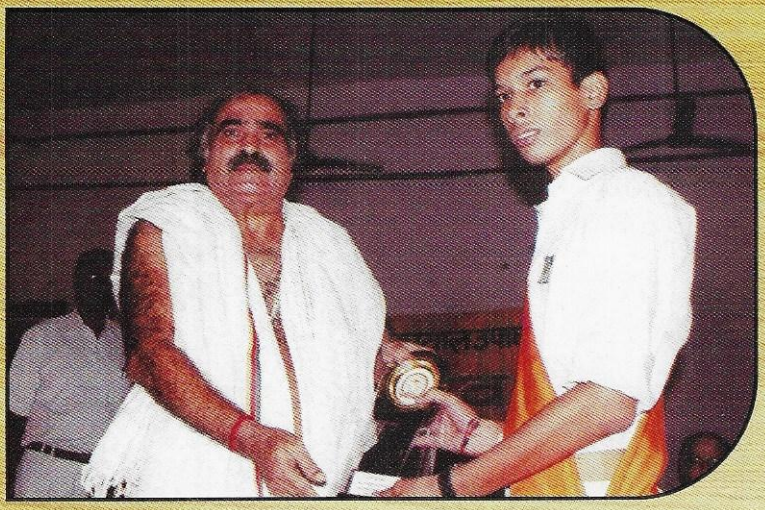

चि० विनायक त्रिपाठी (दशम ख)
को पुरस्कृत करते हुए मुख्य
अतिथि मा० अशोक भगत जी

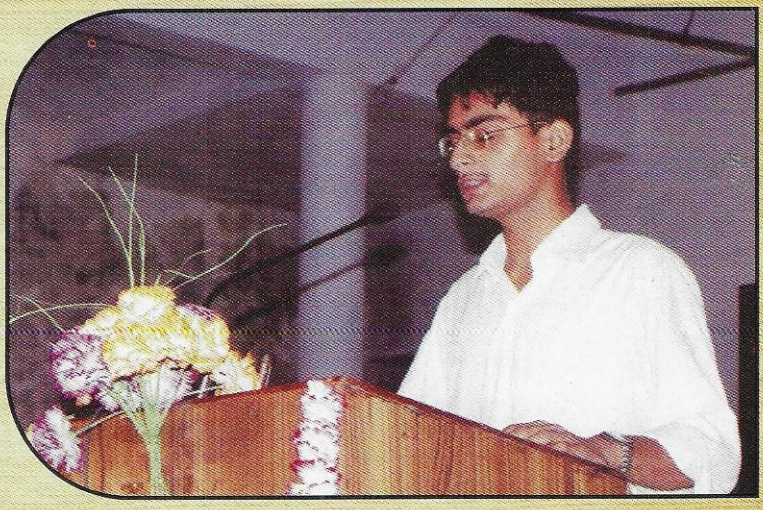

वार्षिकोत्सव के मुख्य कार्यक्रम
का संचालन करते हुए तरुण
भारती के मंत्री
चि० देवेश बाजपेयी

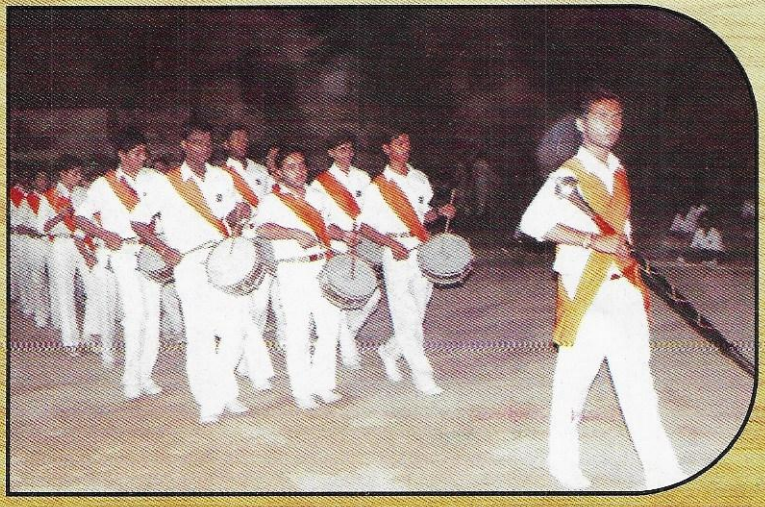

"सह वीर्यं करवावहै" :-
पथ संचलन करते हुए
घोष के छात्र

Effects of Colour

Siddhartha Porwal
7th (A)

Many scientific researches have proved that colours effect our mind and colours control our personal attributes. Thus before choosing any colour, we should know about its effect.

The effect of various colours on our life is as follows :-

Colour	**Effect of Mind**
Dard Red	Affection and sociability
Medium Red	Health
Medium Pink	Softness of Nature
Dard Orange	Desirous
Medium Orange	Maturity
Light Yellow	Wisdom
Dark Yellow	Inspiration
Dark Medium Yellow	Kindness
Light Golden	Charm
Dark Gold	Luxury
Medium Green	Freedom Loving
Dark Green	Simple Hearted
Dark medium blue	Idealist
Dark Blue	Honesty
Light Blue	Place Loving
Light Purple	Softness
Dark Purple	Prosperity

We can make our personal life much attractive and effective by choosing the suitable colour. ❑

'O My Motherland'

Abhinav Tiwari-II
7th (B)

'O' My Motherland!
I respect you again and again with band
We are children of motherland.
But we don't know that what is in our hand
We little children are small creature,
We have to do many work in future.
Everybody has to go from where they come.
But motherland takes her greatness because it's her aim,
'O' My Motherland!
Make me strong,
remove the things which are wrong.
You are never failed to support your boys.
So they keep on leading a good life like the toys.

A Street Quarrel

Shivam Tripathi
8th (A)

Quarrels are quite common in our locality. Yesterday I saw two women quarrelling in the street. They were quarrelling because their daughters had started fighting while they exchanged hot words. But soon they came to blows. Due to this their husbands also started fighting. In spite of repeated requests by the neighbours, that man and women kept on quarrelling. They were not ready to listen to anybody. In short while all the people of the locality had collected there. Soon the police were called and they had to pacify both the parties. By this time the daughters of both the women were again playing together. This put both the families to shame.

Nature In all Its Glory

Ayush Dwivedi
11th (A)

Nature is a unique and incredible world of its own. It is a wonderful by system which does every thing in its own unique style and passion. If we talk about nature's beauty an arnate picture comes to our mind like a stream flowing down from a mountain etc. But it is not only till that only. It is a fathomless thing everything that we use today comes from nature or is a gift of nature. We have just improved and made the use of it accordingly.

Nature is a wonderful phenomenon in which every creature depends on the other for his survival the trees depends on sun and water for their growth. But what do we do for 'Mother Nature' we know that if we go on cutting trees its effects would be disasterous. But still we don't care and go on clearing the forests, leaving many animals uninhabited just for our sake.

Nature is a wonderful gift given to us by food. But it also knows how to play back in one's own coin. If it is lenient towards us, it does not mean that it doesn't care for it self, like every rose has some thorns to protect itself. Nature has also got many disasters to harm those who harm it one example of it is "Haite". recently a huge earthquake hit haiti. The people of Haiti have cleared 99% of its natural wealth and now. Nature paid back and destroyed everything. It does not favour the rich or the poor, the upper castes or the scheduled castes.

Now the time has come that we should have apology to mother nature for harming it or get ready to face consegnences of playing with nature.

We should try and go for the first option i.e. to beg apology nature has got a heart so it will forgive us. But we should also take care of not repeating the same thing again but if we do so, will befacing the danger of our existence and if we are not alive, what is the use of all these comfort that we get from Mother Nature.

We should start apologising so that the next generation may not get the punishment for our sins.

Save Nature To Save Ourselves ❑

Journey of self discovery

Aditya Vikram Singh Chauhan
11th (A)

Even as a children, we dream. We try to realise our dreams throughout our lives. However, when our dreams remain unfulfilled, we tend to sink into dejection and get disillusioned of the several attributes that define humankind, there is, I dare say, just one which meets with more general approbation. That is, we born with an innate feeling which tells us that we are a shade better than that intolerant neighbour and that incompetent one of the first characteristic of our being. Indeed, the most ordinary thing about each individual is the fact that he thinks himself in a little bit out of the ordinary. In thinking so, we acknowledge only a portion of the truth, the other half of which we unwittingly choose and dismiss the fact that every individual without exception, is born different and is, therefore, unique.

It is true that the first step in the direction of unrevealing our potential is to best understand, in view of our circumstances the role we can play. Discovering our uniqueness must be the starting point. Explaining the situation of one who is perfect of this knowledge, prophet Mohd. said : " The condition of an unwise man is that of an animal who is not aware for why his master has tied it or untied it."

To me, the urgent and unaddressed question is - why do most people, if they are born unique and consequently talented in some senses of the word, not achieve to success which they are entitled.

The answer to the question as to why many fail to actualise God-given gifts might, if looked at from different perspectives, have varying answers. To me, it is simply this we have to pay price to aquise any thing in life. Nothing comes for free. Similarly the unique individual can be brought out into the light only after paying the due price.

"To do one task you might have to abandon some others- said a wise

sufi" Therefore to bring to the surface that extra ordinaires, to reveal the measures of your mind, you must work towards achieving it with complete dedication and undivided attention, consigning all to back burner. It must be conceded, moreover that this is not an easy. path to tread. Embarking on such a journey calls for practising an iron restraint over our whims and fancies, recognising the need to control our emotions and every distraction.

"Life is an opportunity. It gives us the freedom to act as we want to. If we fail to avail of this because of our own negligence, we shall have no justification, The journey of our life can be rewarding for complaining later and exciting if only we focus more on positive as well as extra ordinary aspects." ❑

Mr. Zero

Kundan Kumar
7th (B)

Dear and respected Mr. Zero
You are the greatest Hero
In Mathematics and Arithmetics
You play your part fantastic
You are the greatest puzzle.
When I substract you from any number
you are as cool as cucumber.
No loss, no gain, all my efforts in vain,
Add you to last
The number increases very fast
If you are multiplied with the largest
The result is the smallest.
People think
You are valueless and lowest
Student are sad
To get you in their test. ❑

Elements, Symbols & Their Atomic Number

Prem Kumar
7th (A)

Elements	Symbols	Atomic Num.	Atomic Weight.
Hydrogen	H	1	1.008
Helium	He	2	4.003
Lithium	Li	3	6.940
Beryllium	Be	4	9.012
Boron	B	5	10.810
Carbon	C	6	12.011
Nitrogen	N	7	14.007
Oxygen	O	8	15.999
Florin	F	9	18.996
Neon	Ne	10	20.185
Sodium	Na	11	22.990
Magnessium	Mg	12	24.310
Silicon	Si	14	28.090
Phosphoraus	P	15	30.974
Sulpher	S	16	32.084
Chlorine	Cl	17	35.485
Argon	Ar	18	39.048
Potassium	K	19	39.102
Calcium	Ca	20	40.080
Scandium	Sc	21	44.960

Time And Tide Wait for None

Ayush Dwivedi
11th (A)

Have you ever noticed any thing in your life which is not moving perhaps, it is moving at its own pace, while you are becoming static in your move. Yes that powerful factor which is equally important in every body's life is **"Time"** Everyone of us know that we have 24 hrs. in a day, each hour has 60 mins and each minute has 60 sec. in turn. But have you ever felt or observed the **"Power of Time"** ? It is commonly said that "We realize the worth of thing only after we have lost it. But why so? Why can't we understand the fact that **"Time and Tide Wait for None"**.

We must understand that the time we have today is only today and that it will be another day tomorrow with different conditions as a new day of life. So what are we waiting for? When we know that the time we have will never wait for us just as tide whose arrival can never be reversed nor forwarded by any one.

So we too shall never waste our time nor shall we wait for the right time as it never comes by its own until and unless we initiate. Merely waiting for things to happen could be the worst thing to do. To wait, is to waste.

We should always remember that proper timing is crucial for success in every game of life.

The idea is doing the "Right thing at the right time." we are usually burdened with a number of tasks which need to be completed. It can be professional or personal. Whatever it is you have to set your priorities in right way.

The best way to conclude in words of **Robert Schulles** that how significant our time is for us-

"There will never be another now, I'll make the most of today there will be another me. I'll make the most of myself. ❑

Black Money : The Hidden Treasure

Pranjul Tiwari
11th (B)

According to reports there is anything between us $ 450 billion to 1.7 $ trillion of Indian money secreted away in undeclared bank accounts spread half way across the world. If all the moolah have to be brought back to India under an amnesty scheme it would totally transform country's economy even if only 25% of the money held abroad by Indians were to flow black, it would be sufficient to meet all of India 's basic infrastructural needs power, roads primary, healthcare and primary education for future.

India is estimated by various international gencies to have the world's biggest hoard of black money, much of it is kept abroad why should tiny country like Switzerland be one of the world's most sought after destinations for undeclared cash? Why should not India with it's huge side and it's even bigger reputation for highly sophisticated financial jugglery, take it's place black it's in the colour of ill gotten gains. But it is also the colour found on the profit side of the ledger of Indelible India. ❑

About Tiger

Ashutosh Kumar
7th (A)

- In 1972 the tiger was decalared the national animal of the India.
- Tigers are excellent swimmers and can slim up to 6.5 kilometers at a stretch.
- The tail gives the tiger extra balance when running.
- A Tiger cub can gain 100 grams in weight per day.
- Over the course of her life, a female tiger will give birth to approximately equal number of male and female cubs.

❑

How to study in a year

Shiv Om Pandey
12th (A)

Most of the students fail because a year consists of only 365 days.

1. Sunday-52 Sunday in year (Sunday are meant for rest) Balance (365-52) = 313 days.
2. Summer & winter holiday-60 days (Holiday are meant for making fun) Balance (313-60) = 253 days
3. 8 hours to daily sleep (very important for body). It means 122 days in a year. Balance (253-122) = 131 days.
4. 1 hour daily for playing (good for health) means 15 days in a year. Balance (131-15) = 116 days.
5. 2 hours daily for food (chew your food properly to make body fit) Don't care for 30 days. Balance (116-30) = 86 days.
6. 1 hour for talking to friends, parents (because man is a social animal) 15 days for this so Balance (86-15) = 71 days.
7. Exam days per year are at least 21 days. Balance (71-21) = 50 days left.
8. Festival and other holidays take 40 days per year. (But they give us Sanskar) Balance (50-40) = 10 days left.
9. For Sickness at least 6 days Balance (10-6) = 4 days.
10. We see movies at least 3 days per year (Movies are made for fun and inspiration) Balance (4-3) = 1day.

Only one days is left and that is for the Annual Function of my school. oh God! how to study, without a single days left in a year.

Amazing Facts

Akash Singh
9th (B)

- Owls are the only birds who can see the colour blue.
- You can't kill yourself by holding your breath.
- Your heart beats our 100,000 times a day.
- Fingernails grow nearly 4 times faster than toenails.
- More people are allergic to cow's milk than any other food.
- Right Handel people live on average nine years longer than left-handed people.
- Camels have three eyelids to protect then selves from blowing sand.
- If all the blood vessels in the body curl straightened out and placed-to-end, they would be 100,000 miles long.
- After the death of Albert Einstein his brain was removed by a path alogist and put in a jar for future study.
- You tongul is the only muscle in your body that is attached at only one end.
- Abrahan Lincoln's mother died when she drank the milk of a cow that grazed on poisonous snak erout.

The difference is 129 years

Sonam
7th (B)

Nepolean was born in 1760,
Hitler in 1889.
The difference is 129 years.
Nepolean came to power in 1804
Hitler in 1933
The difference is 129 years.
Nepolean occupied war on U.S.A,. in 1816
Hitler in 1945.
The difference is 129 years.

Winners Vs Loser

Anukriti Shukla
7th (A)

The Winner is always a part of the answer,
The Loser is always a part of the problem.
The Winner always has a plan,
The Loser always has an excuse.
The Winners says " Let me do it for you",
The Loser says "That's not my job".
The Winners sees an answer in every problem;
The Loser sees a problem in every answer.
The Winners sees a green near every sand trap,
The Loser sees a sand trap near every green.
The Winner says "It may be difficult but it's possible;
The Loser says "It may be possible but it's difficult."
Genius is ninety-nine percent perspiration and one percent inspiration
Genius is nothing but infinite capacity to take pain
So now what do you want to be?
Remember that! it is necessary to establish a winner image to beat somebody.

Faith is Life, Doubt is Death

Pranjul Omer
7th (B)

Is the sea shore and the setting sun there close enough to witness the salty white waves washing the dark brown huge rocks on which stands a man ? A man who is fed up of his life.

He is honest innocent and hard-working His arms are stuffed with skill and dexterity and his brain is embedded with jewels of brilliant ideas.

Now the mist of despair and blur of tears have replaced the luster and shine of his eyes. Those tears rolling down his cheeks make the scene more pathetic. But why has it happened probably is the question to haunt the mind.

He is ashamed of himself. faith neither in the coming future nor in his biceps.

But is destiny everything Again there is a doubt. This situation can be termed as " Saylla and charybdis.

This is not a story. This is a fearsome and dreadful future of many of the precious jewels of the country. It is an alarm. It is a request to the present generation to blossom their hear with the feeling of faith puffed up to their lungs with an air of confidence. ❑

God can do everything

Utkrist Dwivedi
7th (A)

While everything around me is ever changing
Ever-dying there is underlying all that changes,
a living power that is changeless, holds all together
that creates, dissolves and recreates,
That informing power of spirit is God
In the midst of death, life persists.
Hence. I gather that God is life. Truth. light,
He is love, He is the supreme God
I know that I can do nothing
God can do every thing
O God, make me your instrument and
Use me as your will.

❑

What is Friendship

Divya
6th (C)

Friendship is arithmetic
You add friends,
Subtract enemies
Divide sorrows,
And multiply joys.
Mother is blessing.
Sister is hope
But friends are both!
Make new friends
But never forget old.
These are silver, but those are gold.
A friend in need,
Is a friend indeed
Friendship is a golden chain
Which binds our heart's together
If you don't break the chain
Friend we will forever remain ❑

How Much do you know your body

Aditya Kumar
7th (A)

- Over 80% of the brain is water
- There are approx 10,0000 miles of blood vessels in the human body.
- Every person has a unique tongue print.
- A fingernail or toenail takes about 6 month to grow from base to tip.
- An average human scalp has 100,000 hairs.
- Most people blink about 25 times a minute.
- An individual blood cell takes about 60 sec to make a complete circuit of the body.
- The strongest muscle in the human body in the tongue.
- When you sneeze , all your bodily functions stop even your heart.
- Human blood travels 60,000 miles (96,540 km) per day on its journey through the body. ❑

My Memories

Gitanshu Singh
7th (A)

When I was in sixth
I was in a fix
but slowly the day passed,
and I learnt a lot
which I could never forget
till the life's last,

The spiritual knowledge I gained
In the seven years of life
will help me in man
party of my life

I got tremendous knowledge
and learnt the psalm of life
which every student needs
In this world wide,

I got the proper aim
with support of my school
The confidence that generated
will never get cool.

This is all due to
The teaching of my teachers
who made us realize that
we are great creatures

And now the final time
of my school life, to it
How grateful I am,
Can not be described

Right Way To Success

Prashant Mishra
9th (B)

This is the era of Competition
Except hard work nothing is solution
If you want to get success
To move you mind as a player in chess
For it you have some qualities
Discipline, self confidence and other neccessites
To day nothing can be gained as a book worm
Because you are checked as a talented form
We have to keep away ourselves from tension
Because in this condition we are in total confusion
It is necessary that we have on orientation
And this is the right way to get true direction
We should learn from our mistakes
Not to prove it and move our character best
A man who follows these deep
No one who can stop his speed.

Eiffel Tower

Shubham Verma
11th (A)

The Eiffel Tower is an iron tower built on the champ de mass beside the river seine in Paris. The tower has become a global recognizable structures in the world.

The Parisian landmark is the tallest structure in Paris and one of the most recognized structures in the world and is named after its designer

engineer **Gustave Eiffel** 6,719,200 people visited the tower in 2006 and more than 200,000,000 since its construction. This makes the tower the most visited paid monument in the world. Including the 24m. (79ft.) antenna. the structure is 325 m(1063ft.) high, which is equivalent to about 81 levels in a conventional building.

When the tower was completed in 1889, it replaced the Washington monument as the world's tallest structure.

The structure of the Eiffel Tower weight 7,300 tons. Depending on the ambient temperature the top of the tower may shift away from the sun by up to 18 cm(7 in) due to thermal expantion of the metal on the side facing the sun. The tower also sways 6-7 cm(2-3in.) in the wind. ❑

"Truth of Hostel"

Abhishek Kumar
9th (A)

A place for ragging.
A place for ragger.
A society for gangging,
A troop of ganger.
Although we are excited for pleasure.
All for get that we are God's creature.
All are enemy of each other,
How can I tell you each nature.,
Some are enemy of each other,
How can I suggest you to cheer,.
If you are so for, I am so near,
Inspire of all these things. It gives me pleasure. ❑

Never look down upon other

Ashutosh Gupta
7th (B)

To God, we are all alike, for He has created us all. To please him, we must love our fellow-beings. Our father will never be happy, If we kill or quarrel with our fellow brothers. God, as the father of all of us can never be happy, If we hate any human-being or any living creature. This is not enough to say that we believe in God, we love him, we respect him or worship him. We have to prove it by actions. The best proof can be our love for all the living beings of the world. We should never think that we are superior to others of that we are different from others. I am what they are and they are what I am" must be our motto. Caste creed or colour should never influence our behavior. We should give all our attention to please our creator by performing our duties and loving all. The hand is always ready to help all the other parts of the body. When our feet are in pain or any other part hurt, our hand without thinking that the feet are lower than the hand or that the mouth, nose, ears or eyes may contain impurities. we should never look down upon other. ❑

Time is Great

Subham Ojha
7th (B)

Time is great. Time is past, present and future in human life. Time is most powerful and the greatest entity in this endless void and spanned universe to create, to nourish and to devastate. That was the time when men and this earth came in to existence. At the same time death and destruction : too have been in coronated by the cruel hands of time. Time is the key point in life.

We have the time to make us witty, generous, sagacious and bold and

time makes us vainglorious, traitor, character with the semblances of white points on the canvas to make sure that it would not enter the black dungeon. We have time to boast on the topics gained by the counsels of preachers but no time to place in our conduct and behaviour.

We have no time to stay to help some one in distress and severe pain. Time makes man constructive and we change the values of time with the passage of time. Time gives every thing. Time is great. ❑

LIFE IS ACCOUNT

Tanmay Dwivedi
11th (A)

Our birth is opening our balance.
Our death is closing our balance.
Our Prejudiced vieues are our liabilities.
Our creative Ideas are our Assets.
Brain is our fixed Deposit forever.
Thinking is our fixed current A/c.
Achievement is our capital.
Character & Morals are (our) stock in trade.
Friends are our General Reserue.
Ualue & Behaviour are our Good will.
Patience is our Interest Earned.
Love is our diuidend.
Children are our bonus Issue.
Education is our patents.
Knowledge is our Investment.
Experience is our premium A/c.
The Aim is to tally the Balance sheet.
Personal A/c is our Award. ❑

Laloo Prashad Joins Microsoft

Atul Tiwari
8th (A)

Once Laloo Prasad Yadav sent to his bio-data to apply for post a in Microsoft Corporation, U.S.A. A few days later he got his reply.

"Dear Mr. Laloo Prasad,

We are sorry to intimate you that you do not meet our requirement, please do not send any further correspondence no phone call shall be entertained Thanks."

Laloo jumped with joy on receiving the reply. He arranged a party and when all guest came, he said , "Bhaigen our Bheno, aapko jaan kar khusi hogi ki hum America meen naukri pagay hoon".

Everyone delighted, Laloo prasad continud..... Ab hum aap sab ko apnaa appointment letterva padkar sunaanaga. Per letter letter angreji mein hai, isliya saath-saath hindi mein translate bhi karoonga.

Dear Mr. Laloo Prashad.....
Payare Laloo Prashad Bhaiya
We are sorry.....
Humse golti ho gayi
to intinate to you.....
Aapko batana hai ki
you do not meet
aap to milte nahin ho
Our requirement.....
Hamko to zaroorat hai
Please do not send any future correspondence.....
Ab letter vetter bhejne ka kauno zaroot nahin hai
No phone call.....
Phoonwa ka bhee zaroot nahin hai
Shall be entertained
Thanks.....
Aapka bahut, bahut Dhanyawad

Fact to Remember (Chemistry)

Shivam Tripathi
8th (A)

• Liquid Non-Metals	**Br_2**
• Liquid Metals	**Hg, Cra, Fr, EKa**
• Dry Ice	**CO_2**
• Smallest atomic Size	**H**
• Amphoteric Non-Metal	**Si**
• Lightest Element	**H**
• Rarest element of earth	**At**
• Most reactive solid element	**Li**
• Most reactive liquid element	**Cs**
• Highest electron-negativity	**F**
• Element Containing Neutron	**$1H_1$**
• Non metal having highest M.P.B.P.	**Diamond**
• Highest Ionization Potential	**He**
• Lowest Ionization Potential	**Cs**
• Most abndant element of earth	**O**
• Rarest element of earth	**At** ❑

Importance of books

Ashutosh Gupta
7th (B)

I like companionship of book very much because the books contains a lot of knowledge. They are very important for the students.

"A house without book is a room without window." Some books are to be tasted, some are to be swollowed, some others to be chewed and digested."

Books are our friends when we are happy they give us comfort when we are sad they give us relief.

"Books are our never failing friends."

I am very fond of reading books. I spend much of time among them. My favourite book is "Bhagvad Geeta" This is an inspiring book. It gives us the message.

Do thy work reward is not thy concern. ❑

आचार्य परिवार

1.	श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी	प्रधानाचार्य	एम० एस-सी० (जन्तु विज्ञान), बी० एड०
2.	श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव	आचार्य	एम० ए० (गणित, समाजशास्त्र), एल०टी०
3.	श्री हेमन्त शुक्ल	प्रवर आचार्य	एम० एस-सी० (भौतिकी), बी० एड०
4.	श्री कैलाश जोशी	प्रवर आचार्य	एम० एस-सी० (गणित), बी० एड०
5.	श्रीमती रेखा निगम	प्रवर आचार्या	एम० ए० (अंग्रेजी), बी० एड०
6.	श्री दिनेश सिंह भदौरिया	प्रवर आचार्य	एम० एस-सी० (रसायन विज्ञान), बी० एड०
7.	डॉ० मनोज कुमार शुक्ल	प्रवर आचार्य	एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी), साहित्याचार्य, पी० एच० डी०
8.	श्री दुर्गेश वाजपेयी	प्रवर आचार्य	एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत), बी० एड०, पत्रकारिता परास्नातक
9.	श्री सुभाष चन्द्र शर्मा	आचार्य	एम० ए० (भूगोल), बी० पी० एड०
10.	श्री गणेश शंकर वाजपेयी	आचार्य	एम० ए० (संस्कृत), शिक्षाशास्त्री
11.	श्री सतीश चन्द्र गुप्त	आचार्य	एम० ए० (इतिहास), एम० एड०
12.	श्री जगपाल सिंह	आचार्य	एम० ए० (भूगोल), बी० एड०
13.	श्री श्रीप्रकाश ओझा	आचार्य	एम० एस-सी० (भौतिकी), बी० एड०
14.	श्री सुधीर अवस्थी	आचार्य	एम० एस-सी० (रसायन विज्ञान), बी० एड०
15.	श्री मनजीत सिंह	आचार्य	एम० एस-सी० (गणित), बी० एड०
16.	श्री आनन्द श्रीवास्तव	आचार्य	एम० ए० (अंग्रेजी), बी० एड०
17.	श्रीमती अर्चना तिवारी	आचार्या	एम० ए० (अंग्रेजी), बी० एड०
18.	श्रीमती मीना अग्रवाल	आचार्या	एम० एस-सी० (गणित), बी० एड०
19.	श्रीमती तृप्ति प्रेम	आचार्या	बी० ए०, बी० एड० (Vocational Course in Broadcasting & Media, entrepreneurship, Linguistics & Phonetics)
20.	श्रीमती पल्लवी अग्रवाल	आचार्या	एम० एस-सी० (वनस्पति विज्ञान)
21.	श्री सुनील दीक्षित	आचार्य	एम० एस-सी० (रसायन विज्ञान), बी० एड०
22.	श्रीमती अर्चना विद्यार्थी	आचार्या	डिप्लोमा (कम्प्यूटर) 'ए' लेविल, बी० एस-सी०, एम० ए०

23.	कु० शिखा शुक्ला	आचार्या	एम० एस-सी० (रसायन विज्ञान), डिप्लोमा (कम्प्यूटर) 'ए' लेविल
24.	श्री कौशलेन्द्र पाण्डेय	आचार्य	एम० कॉम०, एम० सी० ए०
25.	श्री अंकुर दुबे	आचार्य	संगीत प्रभाकर
26.	श्री वेद कुमार शर्मा	आचार्य	बी० ए०, बी० एड०, आई० जी० डी० बॉम्बे
27.	कु० प्रीति तिवारी	आचार्या	एम० एस-सी० (पर्यावरण विज्ञान), एम० फिल०, एम० ए० (अंग्रेजी)
28.	श्रीमती शक्ति श्रीवास्तव	आचार्या	बी० एस-सी०, एम० ए० (समाजशास्त्र)
29.	श्रीमती लक्ष्मी त्रिपाठी	आचार्या	एम० ए० (हिन्दी), बी० एड०
30.	श्री आलोक द्विवेदी	आचार्य	एम० एस-सी० (बायोकेमिस्ट्री), बी० एड०
31.	श्री दुर्गा प्रसाद सिंह	आचार्य	एम० एस-सी० (भौतिकी), बी० एड०
32.	श्रीमती स्मिता वाजपेयी	आचार्य	एम० कॉम०, एन० टी० टी०

कार्यालय

1. श्री राजेन्द्र गुप्त (कार्यालय अधीक्षक)
2. श्री ओंकारनाथ गुप्त
3. श्री बी० पी० सिंह
4. श्री रिण्टू घोष

छात्रावास

1. श्री सुरेश नारायण अग्निहोत्री (छात्रावास अधीक्षक)
2. श्री बाबू सिंह बिसेन
3. श्री शैलेश दीक्षित
4. श्री अजय मिश्र
5. श्री किशन स्वरूप अवस्थी
6. श्री शरद शुक्ल

विद्यालय-प्रबन्ध-समिति

अध्यक्ष	डॉ० ज्ञान चन्द्र अग्रवाल	अ.प्रा. प्राध्यापक	कानपुर
उपाध्यक्ष	श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी	व्यवसायी	कानपुर
मंत्री	श्री वीरेन्द्रजीत सिंह	चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट	कानपुर
सहमंत्री	श्री यतीन्द्रजीत सिंह	व्यवसायी	कानपुर
सदस्य	पं० राम बालक मिश्र	अधिवक्ता	कानपुर
	डॉ० योगेन्द्र भार्गव	अ.प्रा. मुख्य अभियन्ता	कानपुर
	श्री ओम प्रकाश भार्गव	व्यवसायी	कानपुर
	श्री प्रेम चन्द्र गुप्त	व्यवसायी	कानपुर
	श्री शंकर शरण श्रीवास्तव	शिक्षाविद्	लखनऊ
	श्री हरिकृष्ण सेठ	अधिवक्ता	कानपुर
	श्री तरुण विजय	पत्रकार	नई दिल्ली
	डॉ० अशोक वार्ष्णेय	सामाजिक कार्यकर्ता	कानपुर
	श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी	प्रधानाचार्य	कानपुर
	दो शिक्षक प्रतिनिधि		

अन्तरताना ठिकाना : Website : www.geocities.com/pddusdv
: www.pddusdv.org
अणुडाक : email-pddusdvkanpur@gmail.com

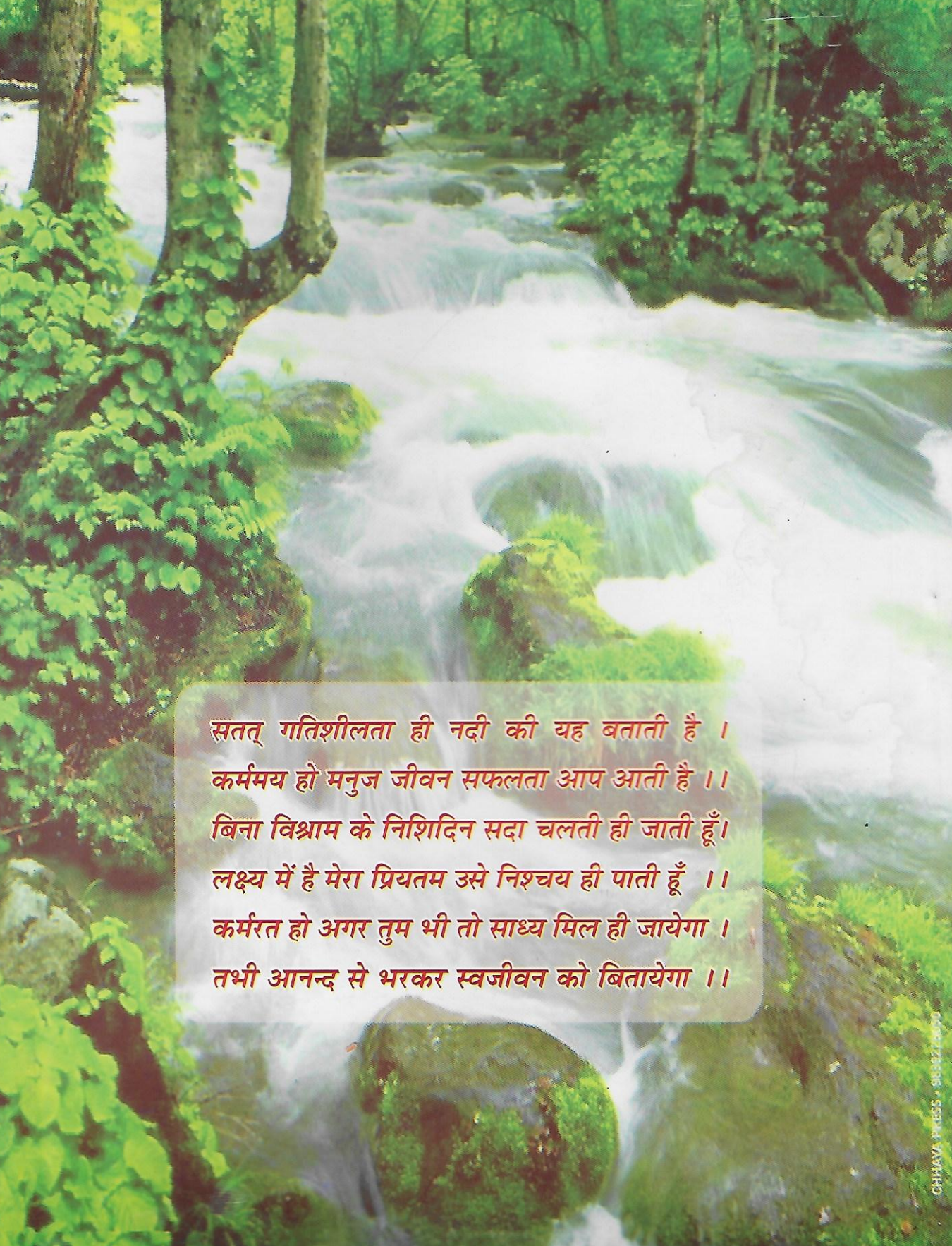

सतत् गतिशीलता ही नदी की यह बताती है ।
कर्ममय हो मनुज जीवन सफलता आप आती है ।।
बिना विश्राम के निशिदिन सदा चलती ही जाती हूँ।
लक्ष्य में है मेरा प्रियतम उसे निश्चय ही पाती हूँ ।।
कर्मरत हो अगर तुम भी तो साध्य मिल ही जायेगा ।
तभी आनन्द से भरकर स्वजीवन को बितायेगा ।।
CHHAYA PRESS